कोचिंग @ कोटा

अरुण अर्णव खरे

इंक पब्लिकेशन

सर्वाधिकार सुरक्षित है - इस पुस्तक के किसी भी अंश अथवा सामग्री को बिना अनुमति के पुनर्प्रकाशित या प्रसारित नहीं किया जा सकता। प्रकाशक एवं लेखक से बगैर किसी लिखित अनुमति प्राप्त किये, इसकी नकल बनाना, फोटोकॉपी या अन्य सूचना संबंधी माध्यमों से प्रकाशित करना कानूनन अपराध है।

ISBN : 978-93-90517-85-5
Copyright : Arun Arnav Khare
Publishing Right : Ink Publication
Second edition : October 2022
Price : 200 /-

Publisher : Ink Publication
Print & Bound in India

Published by : Ink Publication
Office : 333/1/1K, Naya Pura, Kareli, Prayagraj - 211016
email : publicationink@gmail.com
Mobile : 9455400973, 8318034587

Title : Coaching@ Kota (Novel)
Author : Arun Arnav Khare
Cover & Text Design : ink Art & Creative Team

समर्पण

वीर, अत्रिज, रिया और नील सहित
भविष्य के सभी अभियंताओं को
सस्नेह समर्पित

मार्मिक और आँखें खोल देने वाली सच्चाइयों से रूबरू उपन्यास

कविता, कहानी, व्यंग्य और अब उपन्यास भी... विधा कोई भी हो, जीवन के लिए कुछ सार्थक और बेहतर की तलाश, युवा रचनाकार अरुण अर्णव खरे की कलम की प्राथमिकताओं में शामिल है। उनका नया और संभवतः पहला उपन्यास 'कोचिंग@कोटा' इसका जीवंत प्रमाण है।

जैसा कि शीर्षक से ही स्पष्ट है, उच्च तकनीकी और मेडिकल शिक्षण संस्थानों में प्रवेश के लिए कोचिंग का 'मक्का' माने जाने वाले कोटा शहर में इसी उद्देश्य से गए महत्वाकांक्षी अभिभावकों के भावुक और संवेदनशील बेटे समीर की कहानी है यह। उस माहौल में चल रही दुर्भाग्यपूर्ण और अश्लील गतिविधियों, लुभावने प्रलोभनों और कुरूपताओं की अत्यन्त मार्मिक और आँखें खोल देने वाली सच्चाइयाँ उजागर की गई हैं, इस उपन्यास में... जिनसे समीर रूबरू है... लेकिन इन्हीं के साथ एक बहुत आश्वस्तिकर सच यह भी कि परिस्थितियाँ कितनी भी प्रतिकूल हों, मानवीय मूल्यों की घुट्टी पीकर बड़े हुए व्यक्ति के पास सही चुनाव का विकल्प अवश्य रहता है। समीर जानता है कि 'यहाँ हर बच्चे को पता है कि वह एक रेस में शामिल है और स्टार्टिंग ब्लॉक पर दौड़ने के लिए अपनी पोजिशन लेकर खड़ा है...' लेकिन साथ में यह भी कि 'जो पूरी सजगता से चौकन्ना रहकर दौड़ेगा, जीतेगा वही...'

समीर की जीत का सबसे बड़ा श्रेय जाता है, उसके समृद्ध संस्कार, प्रगाढ़ पारिवारिक रिश्तों तथा स्वस्थ और परिपक्व सोच वाली मित्र चित्रा को।

कुल मिलाकर जीवन के मूल्यों के प्रति आग्रह रखने वाले व्यक्ति के लिए सही और सार्थक का चुनाव बहुत ज्यादा कठिन नहीं हुआ करता, क्योंकि उसे रास्ता दिखाने वाली कंदीलों में कहीं दशरथ माझी नज़र आते हैं, तो कहीं दक्षिण अफ्रीका के ब्लेड रनर ऑस्कर पिस्टोरियस...

निश्चित रूप से पाठकों के बीच अपनी स्पेस तलाश लेने की पूरी आश्वस्ति देने वाले इस उपन्यास के लिए अरुण जी को बधाई एवं शुभेच्छाएँ।

सस्नेह

- सूर्यबाला

सूर्यबाला - बी. 504, रुनवाल सेंटर, गोवंडी स्टेशन रोड,
देवनार, मुंबई-88 / मो. 9930968670
E-mail : suryabala.lal@gmail.com

भूमिका
आई ओपनर है यह उपन्यास

गद्य की सभी प्रमुख विधाओं में निष्णात् अरुण अर्णव खरे साहित्य जगत के सुपरिचित हस्ताक्षर हैं। जिस मौलिक तेवर में व्यंग्य लिखते हैं, वही तेवर कहानियों और उपन्यासों में गोचर होता है। ज्वलंत विषयों का चयन करते हुये फैक्ट प्लस फिक्शन का ऐसा संतुलन बनाते हैं कि विषय का अर्थ और मर्म विपुल और व्यापक हो जाता है। यथार्थ का ब्योरेवार विवरण ऐसी समग्रता और प्रखरता में व्यक्त होता है कि एकाएक लगता है यह हमारे आस-पास का सच है। अरुण अर्णव जी की व्यक्ति, परिवार, समाज के प्रति अटूट आस्था है अतः उनकी रचनाओं में ज़रूरी तौर पर वह सकारात्मक भाव और सामाजिक संदेश होता है जो इस विश्वास को मजबूत करता है कि सम्भावनायें कभी खत्म नहीं होतीं। यकीन कभी नहीं मरता। असफलता से भी राह निकलती है। छोटे सपनों के साथ भी सहज-सरल-स्वाभाविक जीवन जिया जा सकता है।

इस उपन्यास में लेखक ने शिक्षा, डिग्री, कट ऑफ, कोचिंग का प्रसंग रखा है जो आज घर-घर का सपना बन गया है। शिक्षा, न्याय, उपचार सभी को मिलना चाहिये पर ये क्षेत्र इतने मँहगे हो गये हैं कि जन साधारण के लिये दूर की कौड़ी हैं। सर्वमान्य सत्य है यदि सभ्य, संस्कारित, समझदार समाज चाहिये तो शिक्षा को ऐसा सर्वसुलभ बनाना होगा कि प्रत्येक व्यक्ति शिक्षित हो सके। शिक्षा प्रणाली ऐसी हो कि विद्यार्थी सिर्फ डिग्री ही न लें सही अर्थों में शिक्षित हों। ग्रामीण, कस्बाई, नगरीय, महानगरीय शिक्षा के स्तर में जो अंतर है उस ओर शासन-प्रशासन को ठोस कदम उठाने चाहिये। गाँव और कस्बे में शिक्षा को खिलवाड़ बना दिया गया है। न योग्य शिक्षक हैं, न समुचित संसाधन। प्राथमिक कक्षायें पेड़ के नीचे लगती हैं, या कि एक कमरे में एक से पाँचवी तक के विद्यार्थियों को पाँच-पाँच में बैठाकर एक या दो शिक्षक एक साथ पढ़ाते हैं। जाहिर है इन विद्यालियों के बारहवीं उत्तीर्ण विद्यार्थी व्याकरण और मात्राओं में गलती करते हैं। नगरों, महानगरों में अलग खिलवाड़ चल रहा है। विद्यार्थियों को लुभाया जा रहा है शर्तिया रोजगार पाने के लिये इस शैक्षणिक संस्थान (निजी) में पढ़ें। इक्कीसवीं सदी के आरम्भ से जो औद्योगिकरण, वैश्वीकरण, पूँजीवाद, बाजारवाद का शोरगुल उठ

खड़ा हुआ है, वह रातोंरात दौलतमंद बनने के लिये लोगों को हुलहुला रहा है। सपने देखने की प्रवृत्ति को बढ़ा रहा है। अरुण अर्णव जी अपने इस उपन्यास में इन्हीं सपनों की बात करते हैं। यह कहना फैशन बनता जा रहा है - मुझे माता-पिता का सपना पूरा करना है या किन्हीं कारणों से मैं बहुत नहीं पढ़ सका, लेकिन मेरी आकांक्षा है मेरा बेटा मेरे सपने को पूरा करे। सपने को अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, नैतिकशास्त्र से इस तरह जोड़कर देखा जाने लगा है कि वह भिन्न परिप्रेक्ष्य और अभिप्राय का रूप ले सपना कम दबाव अधिक बनता जा रहा है। इसे हम सपने का प्रत्यारोपण कह सकते हैं। सपने का प्रत्यारोपण कर विद्यार्थी को ऐसे रण में उतार दिया जाता है, जहाँ उसकी जय हो, न हो, कोचिंग सेंटरों की सम्पन्नता ज़रूर बढ़ती जा रही है। शैक्षणिक संस्थान उद्योग बल्कि शिक्षा की मंडी बनते जा रहे हैं। उपन्यास में जो घटना-अन्तर्घटना, क्रिया-प्रतिक्रिया, छवियाँ हैं, वे ज़रूरी प्रश्न और विचार की तरह दिल-दिमाग को ठकठकाती हैं कि सिर्फ प्रतिशत की बात क्यों की जा रही है? सफल विद्यार्थियों का अत्यधिक महिमा मंडन क्यों किया जा रहा है? फेलियर को सामाजिक हैसियत से जोड़कर क्यों देखा जा रहा है? क्या एक असफलता सारे विकल्पों को खत्म कर देती है? लोग थोड़ा ठहरकर इन प्रश्नों का मंथन नहीं करना चाहते। उन्हें सब कुछ इन्सटेन्ट चाहिये। एक साल भी व्यर्थ न हो इस होड़ में विद्यार्थियों को दसवीं उत्तीर्ण करते ही राजस्थान प्रांत के जिला कोटा, जो आई०आई०टी० क्रैक करने के सूत्र सीखने के लिये एकाएक ख्यात हो गया है, में भेज दिया जाता है कि टेन प्लस और कोचिंग एक साथ हो जायेगी तो सम्भवतः पहले प्रयास में आई०आई०टी० परीक्षा पास की जा सकती है। अभिभावक कोटा को ऐसा तिलिस्म मानते हैं कि भारी कर्ज लेकर विद्यार्थी को वहाँ भेजने को लालायित हैं। वे कोचिंग सेंटर के 'अधिकतर इन्स्टीट्यूट केवल सपने बेचने का काम कर रहे हैं। कोचिंग सेंटर इण्डस्ट्री की तरह चलाये जा रहे हैं। इस इण्डस्ट्री की ग्रोथ रेट चौंकाने वाली है। आज यह तीन सौ करोड़ की इण्डस्ट्रीस है। ढाई लाख बच्चे अपने सपने को पूरा करने कोटा आते हैं, जिनमें बमुश्किल दस-बाहर हजार बच्चे मेन स्ट्रीम का एग्जाम पास कर पाते हैं। जो पास होते हैं, उनमें अधिकतर ब्रिलिएंट ही होते हैं, कोटा आकर कितने बच्चे डिप्रेशन का शिकार हुये, कितने गलत रास्तों पर चले गये, इसका कोई उल्लेख नहीं करता।' जैसे छल-छद्म की ओर ध्यान नहीं देना चाहते। अभिभावक नहीं जानना चाहते कि विद्यार्थी की बौद्धिक क्षमता सपने का

भार उठाने के काबिल है अथवा नहीं। उनकी राय में कोचिंग सेंटर काबिल बनाने के लिये कृतसंकल्प हैं। सपने को आकांक्षा और सामाजिक हैसियत से इस तरह जोड़ दिया जाता है कि विद्यार्थी कोचिंग छोड़कर घर नहीं लौट पाता। क्विट करने या असफल होने से परिवार किसी को मुँह दिखाने लायक नहीं रहेगा। अभिभावक नहीं जानना चाहते, वय संधि पर खड़े विद्यार्थी किस भय, भ्रम, भटकाव से गुजर रहे हैं। उन पर किस तरह का शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक दबाव पड़ रहा है। घर से बाहर अलग वातावरण से सामन्जस्य बनाने में क्या अड़चन आ रही है। सिगरेट, मदिरा, ड्रग की लत, दैहिक शोषण, दमन, दबाव, परिहास, प्रताड़ना का सामना किस तरह कर रहे हैं। वे असहाय और अकेले हैं, क्योंकि उनके आस-पास मित्र या सहपाठी नहीं प्रतिद्वन्दी हैं। ये ऐसी स्थितियाँ हैं, विद्यार्थी जिनका खुलासा अभिभावकों से नहीं कर पाते। करते हैं, तो अभिभावक उन्हें गैर जिम्मेदार ठहराते हुये त्याग, तपस्या, परिश्रम, लगन, एकाग्रता जैसे शब्दों के जाल में उलझा देते हैं। मानसिक अस्थिरता से जूझते विद्यार्थियों को असफल होने से अधिक फिक्र यह होती है कि असफल हुये या कोचिंग छोड़ दी तो घर और समाज में निकम्मे मान लिये जायेंगे। लौटना चाहें तो अभिभावक नहीं लौटने देते कि उनके पीछे बहुत पैसा बर्बाद हो चुका है। इन्ही दबावों के कारण विद्यार्थियों में आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। कहा जा रहा है सिर्फ टॉपर्स के लिये जगह बची है। उस जगह को पाने के लिये विद्यार्थी क्लासेस, सिलेबस, रिवीजन, लेक्चर, प्रैक्टिस टेस्ट, डायग्नोस्टिक टेस्ट, मॉक टेस्ट, एनालिटिकल और ऑब्जेक्टिव प्रश्नों में इतना डूब जाते हैं कि आत्मकेन्द्रित बल्कि संवेदनहीन बल्कि स्वार्थी बनते हुये ऐसे यंत्र में बदल जाते हैं, जहाँ समाज, परिवार, रिश्ते-नाते अर्थ खो देते हैं। सफलता और व्यस्तता उन्हें कुछ सोचने नहीं देती। पैसा कमाना, खुद को साबित करना और ऊँचे जाना उनका ध्येय बन जाता है। ऐसे सिंथेटिक समाज की रचना हो रही है, जहाँ अपराध बढ़ते-बढ़ते साइबर क्राइम तक आ पहुँचा है। अच्छा नागरिक बनने का ख्याल किसी को आ ही नहीं रहा है। सपने हैं, समर है, रेस है। विद्यार्थियों को रेस में शामिल कर कोचिंग सेंटर वाले सिर्फ उन्हीं विद्यार्थियों पर ध्यान देते हैं, जिनमें टॉप फिफ्टी में जगह बनाने की सम्भावना होती है ताकि उनके सेंटर को अधिक से अधिक विद्यार्थी मिलें। उपन्यास के इस सामाजिक संदेश पर ध्यान दिया जाना चाहिये कि छोटे सपनों के साथ भी सहज, व्यवस्थित जीवन जिया जा सकता है। विद्यार्थी बौद्धिक क्षमता के अनुसार कोर्स कर दबाव,

मानसिक अस्थिरता, दिशाहीनता से बच सकते हैं। इस 'आई ओपनर' उपन्यास को पुस्तकालयों में रखना चाहिये। कोर्स में लगाना चाहिये। अभिभावकों को पढ़ना चाहिये। विद्यार्थियों को पढ़ना चाहिये।

उपन्यास के दूसरे संस्करण के लिये अरुण अर्णव खरे जी को बधाई।

- सुषमा मुनीन्द्र
सतना (म.प्र.)

प्राक्कथन

द्वितीय संस्करण सौंपते हुए ...

उपन्यास कोचिंग@कोटा का द्वितीय संस्करण आपको सौंपते हुए मुझे अज्ञेय का कथन याद आ रहा है। उन्होंने किसी समारोह में कहा था कि ''यदि किसी कृति का सामाजिक परिवर्तन में कोई योग नहीं है, अथवा साहित्यकार का समाज के प्रति कोई ऐसा उत्तरदायित्व नहीं है, जिसमें यह भी निहित हो कि समाज को बदलने का कुछ यत्न भी उससे अपेक्षित है, तो वह कृति अपने लेखन में सफल नहीं है।'' इस कसौटी पर इस उपन्यास की सफलता संतोष देने वाली है। एक नए विषय और भावभूमि पर लिखे गए इस उपन्यास को जिस तरह पाठकों ने सराहा और वरिष्ठ समीक्षकों का आशीर्वाद प्राप्त हुआ यह उसी का प्रतिफल है कि उपन्यास का दूसरा संस्करण आपके हाथों में है।

आज के समय की सबसे महत्वपूर्ण पत्रिका ''अहा! ज़िंदगी'' ने इस उपन्यास की समीक्षा करते हुए लिखा था - ''हिंदी में इस तरह का यह पहला प्रयास है। उस परिवेश की दुर्भाग्यपूर्ण गतिविधियों, लुभावने प्रलोभनों और कुरूपताओं की मार्मिक और आँखें खोल देने वाली सच्चाइयाँ इस उपन्यास में उजागर की गई हैं। यह एक महत्वाकांक्षी दम्पत्ति के भावुक और संवेदनशील पुत्र समीर की कहानी है। समीर जानता है कि संसार में हर व्यक्ति एक रेस में शामिल होता है और उसे हमेशा दौड़ने के लिए तैयार रहना होता है किंतु इसके लिए जीवन मूल्यों को भी ताक पर नहीं रखा जा सकता। यह उपन्यास तेज गति से चलता है और पाठक को बाँधकर रखता है।

इसी तरह पुस्तक-समीक्षाओं की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं 'पुस्तक संस्कृति' एवं 'शिवना साहित्यिकी' ने भी इस उपन्यास की उत्साहवर्द्धक समीक्षाएँ प्रकाशित कीं। 'पुस्तक संस्कृति' का यह लेख कि 'प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे छात्र और उनके अभिभावकों के लिए यह पुस्तक एक नया विकल्प उपलब्ध कराती है। उपन्यास का कथानक बहुत ही सहजता से आगे बढ़ता है।' इस उपन्यास को जहाँ अलग दृष्टि से देखता है वहीं 'शिवना साहित्यिकी' ने यह लिखकर कि 'कुल मिलाकर यह उपन्यास अपनी विषयवस्तु के कारण पढ़ने की जिज्ञासा पैदा करता

है और इसे अवश्य पढ़ा जाना चाहिए' उपन्यास की उपादेयता को सिद्ध किया है। इनके अतिरिक्त कथाक्रम, ककसाड़, आलोकपर्व, शिविरा, एक और अंतरीप, सुखनवर, समवेत सृजन, समकालीन त्रिवेणी, प्रभासाक्षी, द कोर, जनसंदेश टाइम्स, दैनिक देशबंधु, सुबह सवेरे, इंदौर समाचार, दिव्य छत्तीसगढ़ जैसी अनेक पत्र-पत्रिकाओं ने भी उपन्यास की गुणात्मक समीक्षाएँ प्रकाशित की। अमूमन अंग्रेजी अखबार हिंदी कृतियों से दूरी बनाकर रखते हैं, लेकिन टाइम्स ऑफ इंडिया ने इस उपन्यास की चर्चा कर इस मिथक को तोड़ने की उल्लेखनीय पहल की।

उपन्यास कोचिंग@कोटा को मिले प्रतिसाद से, इस उपन्यास को सार्थक दिशा में उठा एक कदम तो माना ही जा सकता है। इस उपन्यास को लिखने का मूल उद्देश्य भी यही था कि बच्चे और उनके अभिभावक इस सच्चाई से रूबरू हो सकें कि घर से दूर रहते हुए किशोर वय के बच्चों को नई जगह और अनजान लोगों के साथ तारतम्य स्थापित करने में किस तरह के मानसिक संताप और दिक्कतों से गुजरना पड़ेगा, किस तरह की गलाकाट स्पर्द्धा का उन्हें अंग बनना होगा और किन-किन प्रतिकूल परिस्थितियों से दो-चार होना होगा, इसका एक शब्दचित्र उनकी आँखों के सामने उपस्थित हो सके।

आज की अति चर्चित कहानीकार एवं उपन्यासकार सुषमा मुनीन्द्र ने 'कोचिंग@कोटा' उपन्यास के द्वितीय संस्करण की भूमिका लिखी है, मैं उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। साथ ही इंक प्रकाशन के अधिपति, अनुजवत् दिनेश कुशवाहा को मैं साधुवाद देना चाहूँगा कि उन्होंने इस उपन्यास का दूसरा संस्करण आपको सौंपने का बीड़ा उठाया। उपन्यास 'कोचिंग@कोटा' के दूसरे संस्करण को भी पूर्व की भांति आपका स्नेह प्राप्त होगा, यह आशा भी है और अपेक्षा भी।

- अरुण अर्णव खरे

डी-1/35 दानिश नगर, होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.) 462026

मोबाइल : 9893007744 / ई-मेलः arunarnaw@gmail.com

अपनी बात

प्रथम संस्करण से ...

ये मेरी अपनी बात तो है ही साथ ही इंजीनियर बनने के इच्छुक उन तमाम किशोरों की भी बात है, जिन्होंने मुझे यह उपन्यास लिखने के लिए प्रेरित किया। यह बात मुझे हमेशा उद्वेलित और सोचने पर विवश करती रही है कि किस तरह सोलह साल की उम्र का कोई किशोर अपनों से दूर रहते हुए जीवन की निर्णायक राह प्रशस्त करने के मिशन पर चल पड़ता है या कि उस राह पर उसे छोड़ दिया जाता है। बात जो भी हो ... दोनों ही स्थितियों में उसके संघर्ष और मानसिक द्वंद्व को समझ पाना आसान नहीं है। कुछ बनने के सफर की यह यात्रा हर कदम पर नई चुनौतियाँ, नए चैलेंज पेश करती है, जिसे अनुकूल बनाने की जिम्मेदारी नाजुक कंधों पर होती है। मंजिल पर पहुँचने का दवाब और असफलता का डर बेचैन किए रहता है। इस बेचैनी को समझने वाला और बिखरने के क्षणों में संभालने वाला जब कोई अपना साथ नहीं हो तो इस यात्रा की मुश्किलें उसे भयभीत ज़रूर करती होगीं। मुश्किल भरे इन क्षणों से लड़ना और स्वयं को संभालकर रख पाना जाँबाजी वाला काम है। किशोर वय, अपरिपक्व मस्तिष्क और अकेलेपन की अपनी अलग चुनौतियाँ हैं। दोस्तों का चयन भी आसान नहीं होता ... एक गलत संगत ज़िंदगी को किस मोड़ पर ले जाकर खड़ा कर दे तुरंत पता नहीं चलता। आपसी प्रतिस्पर्द्धा और एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ भी दोस्ती की राह में बाधा है। सब एक ही रेस में शामिल हैं और सभी जीतना चाहते हैं, यह सच्चाई है कोचिंग संस्थानों में पढ़ने वालों की और हरेक को हमेशा इस सच्चाई से जूझना पड़ता है।

कोटा ने आई.आई.टी. कोचिंग के लिए अपनी विशिष्ट पहिचान बनाई है। हर साल दो लाख से अधिक बच्चे विभिन्न प्रांतों, विभिन्न आर्थिक-सामाजिक पृष्ठभूमि और विभिन्न धार्मिक-सांस्कृतिक बैकग्राउंड से अपने सपनों में रंग भरने वहाँ आते हैं। कुछ नई परिस्थितियों के अनुकूल स्वयं को जल्दी ढाल लेते हैं, कुछ को समय लगता है। कुछ बच्चे असहज बने रहते हैं और अपना आत्मविश्वास खोने लगते हैं। कुछ को मनचाहे और विश्वसनीय साथी मिल जाते हैं, तो कुछ

गलत राह पर निकल जाते हैं और शोषण का शिकार होते हैं। समय रुकता नहीं है, चलता रहता है और बहुत सी चीजें पीछे छूटती जाती हैं। गिनने बैठो तो कुछ बनने के इस सफर में इतना कुछ खोना पड़ता है, जिसकी भरपाई कभी नहीं हो पाती ... न परिवार की खुशियों में शामिल होने का अवसर मिल पाता है और न ही गम तथा विपत्ति के अवसरों पर परिवार के साथ खड़े होने के दायित्व का निर्वहन हो पाता है।

इतनी सारी दुरूहताओं और विषमताओं के बीच सफलता की राह खोजने निकले बच्चों की कहानी है यह उपन्यास, जिसमें प्रतिदिन आने वाली कठिनाइयों, जीवन-संघर्ष, गलाकाट प्रतिस्पर्द्धा, विडंबनाओं, काटने को दौड़ते एकाकीपन, सपने टूटने की पीड़ा, उलझनों, शोषण, अवसाद, प्रेम, वात्सल्य, जीवटता और सच्ची दोस्ती का चित्रण है। इस उपन्यास का नायक समीर एक छोटे से शहर से पापा के सपनों को पूरा करने कोटा आया है। परिवार से इतनी दूर आकर कोचिंग लेने के लिए वह मानसिक रूप से तैयार नहीं था, प्रारंभिक कुछ टेस्ट्स की असफलताओं से वह विचलित भी हुआ, लेकिन बिना लड़े डरकर भागना नहीं चाहता था। निराश था, लेकिन हताश नहीं। तभी चित्रा के रूप में उसे एक सच्ची और संबल प्रदान करने वाली दोस्त मिली। ज़िंदगी के बहुत से पहलुओं से अनजान और प्रकृति से भीरू समीर के लिए चित्रा का साथ उसके व्यक्तित्व-विकास और उद्देश्य प्राप्ति के लिए चमत्कारी सिद्ध हुआ। उसने हर परिस्थिति में राह बनाना सीखा, विचलित करने वाली हर घटना से सबक लिए और समाज को नई दिशा देने वाले नायकों से प्रेरणा ग्रहण की। सीढ़ी दर सीढ़ी वह सफलता की ओर कदम बढ़ाता गया। सफलता के क्षणों में भी उसने आत्मावलोकन करना नहीं छोड़ा और अपने पाँव जमीन पर ही रखे।

दूसरी ओर चित्रा भी एक छोटे शहर से ही कोचिंग लेने कोटा आई है, लेकिन वह गजब की आत्मविश्वासी और निडर लड़की है। एक मनमोहने वाला खिलंदड़पन उसके व्यवहार में है और चारित्रिक दृढ़ता भी। दोस्तों के लिए सहयोग और समर्पण का जो जज्बा उसमें है वह उसे सबसे अलग करता है। वह समीर को पसंद करती है। समीर का भोलापन उसे अच्छा लगता है पर इसे लेकर वह चिंतित भी रहती है और डरती भी है। दोनों के बीच की केमिस्ट्री अनूठी है ... दोनों ने हर स्थिति में एक-दूसरे का साथ निभाने का वादा किया है। दोनों पढ़ाई में एक-दूसरे का पूरा सहयोग करते हैं। दो साल की अवधि में बहुत कुछ घटता है। दोनों एक-दूसरे के इतने नजदीक आ जाते हैं कि एक-दूसरे का साथ उन्हें आनंदित करता है, उल्लासित करता है। क्या यही प्रेम है दोनों इस पहेली को समझना चाहते हैं? और यदि यही प्रेम है तो पूरी तरह सात्विक और निश्छल, समर्पण और त्याग की अद्‌भुत अनुभूति से ओतप्रोत।

इस उपन्यास को लिखते हुए जो सबसे बड़ी चुनौती थी वह थी किशोरोचित परिवेश का निर्माण और संवाद अदायगी। भाषा परिवेशानुसार सहज और संप्रेषणीय हो, इसके लिए मैंने बहुत से बच्चों से बात कर उनके बीच परस्पर होने वाले वार्तालाप को समझा, बातचीत में प्रयुक्त होने वाले शब्दों की पड़ताल की, शब्दों के संक्षिप्तीकरण से तारतम्य बैठाया। इन सब बातों को समझने की अंतर्दृष्टि मुझे अप्रतिम प्रतिभावान युवा साहित्यिकार नवीन जैन से मिली, जिसके लिए मैं उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए उन्हें शुभाशीष देता हूँ।

यह उपन्यास आपके हाथों में सौंपते हुए अतीव प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ और आशान्वित हूँ कि इसे पढ़ने के बाद भविष्य के अभियंताओं और अभिभावकों को परिस्थितियों का आंकलन करने में आसानी होगी। मेरे लिए यह गौरव की बात है कि इस उपन्यास को हमारे समय की महत्वपूर्ण कथाकार सूर्यबाला जी का स्नेह आशीर्वचन के रूप में मिला है। मैं हृदयतल से उनका शुक्रगुजार हूँ। अपनी जीवनसंगिनी माला के प्रति भी मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिनके बेशकीमती सहयोग के बिना यह उपन्यास लिख पाना असम्भव था। अब यह उपन्यास आपके समक्ष है। मुझे आशा ही नहीं पूरा विश्वास है कि यह उपन्यास आपकी कसौटी पर खरा उतरेगा और आपका पूरा स्नेह इसे मिलेगा

- अरुण अर्णव खरे
मोबाइल : 9893007744
ई-मेल : arunarnaw@gmail.com

01

उस दिन हमेशा की तरह मैं अकेला ही बैठकर लंच ले रहा था कि साथ में कोचिंग ले रही एक लड़की ने दोस्ती का हाथ बढ़ाते हुए कहा - 'मैं चित्रा राय, क्या मैं यहाँ बैठ सकती हूँ'

न कहने का कोई कारण नहीं था। वह सामने ही बैठ गई ... थोड़ी सी साँवली पर चेहरे पर गजब का आकर्षण ... बड़ी-बड़ी आँखें, लम्बे बाल और इकहरा बदन। मैं नाम से जानता था उसे ... कई बार हमारा आमना-सामना भी हुआ था, हाय-हैलो भी हुई थी ... पर बात कभी नहीं।

'आप मीठा तो खाते हैं न ... मूँग का हलुवा है थोड़ा लीजिए' - चित्रा ने अपना टिफिन आगे करते हुए कहा।

मैंने उसकी ओर देखा ... वह मुझे ही देख रही थी। पता नहीं क्यूँ, उसका इस तरह देखना मुझे बहुत अच्छा लगा। दिल में आनंद की हिलोर सी उठती महसूस हुई।

'लीजिए न' - उसने पुनः कहा - 'आपने अपना नाम नहीं बताया'

'जी ... जी मैं ... मैं समीर ... समीर सिन्हा' - मैं हकलाते हुए बोला।

वह ठठाकर हँस दी - 'मुझे मालूम है ... लेकिन आपसे सुनना था'

उस दिन हमारी इतनी ही बात हुई, पर इतने में ही वह बहुत परिचित सी, अपनी सी लगी। उससे और बात करने की इच्छा थी, पर लंच टाइम आड़े आ गया। रात में काफी देर तक उसके बारे में सोचता रहा, उसकी बेतकल्लुफी और बिंदास हँसी बार-बार आँखों में घूमती रही।

कोटा आने के बाद पहली बार मुझे सुकून भरी अनुभूति हुई थी। मैं तो कोटा आना ही नहीं चाहता था। मानसिक रूप से जरा भी तैयार नहीं था ... कोटा आकर आई.आई.टी. कोचिंग के लिए। उस समय मेरी उम्र थी ही कितनी, पंद्रह साल और दस महीने ... पर पापा की नज़र में बहुत बड़ा हो गया था, इतना बड़ा कि छतरपुर से इतनी दूर आकर अकेले रहते हुए खुद को संभाल सकूँ और उनके सपनों में रंग भर सकूँ।

इंजीनियर न बन पाने की टीस पापा को जब-तब सालती रहती थी और कुछ समय से उनको मुझमें इंजीनियर बनने की संभावनाएँ दिखाई देने लगी थीं।

वह मुझे हर हाल में इंजीनियर बनाना चाहते थे। पिछले डेढ़ साल से वह मुझे आई.आई.टी. क्वालीफाई करने की घुट्टी पिला रहे थे। एक साल से उन्होंने कोटा जाकर कोचिंग लेने की सलाह देनी शुरु कर दी थी। प्रारम्भ में मैंने उनकी सलाह को गंभीरता से नहीं लिया जो मेरी गलती थी। जैसे ही दसवीं की परीक्षा पास की ... उन्होंने मम्मी तथा छुटकी के साथ कोटा जाने वाली ट्रेन में बिठा दिया। वह पहले ही सबकुछ सेट कर चुके थे। कोटा के अच्छे समझे जाने वाले एक कोचिंग संस्थान के डायरेक्टर मनीष मित्तल से बात करके मेरा ऐडमिशन पक्का करा दिया था। दसवीं में मेरे मार्क्स भी तो नब्बे परसेंट से ऊपर थे। बैंक के गेस्ट हाउस में रुकने की व्यवस्था भी हो गई थी। बस एक काम मम्मी को करना था ... उन्हें मेरे लिए एक अच्छे से पेइंग गेस्ट को ढूँढना था, जहाँ रहकर मैं पापा के सपनों को सच में बदल सकूँ। पापा साथ इसलिए नहीं आए थे, क्यूँकि दादी की देखभाल के लिए किसी का रुकना ज़रूरी था।

मम्मी से आशा थी कि वह मुझे स्वयं से दूर नहीं जाने देंगी। मेरी यह आशा निरर्थक भी नहीं थी। आठवीं क्लास तक तो मैं और छुटकी बारी-बारी से उनके साथ ही सोया करते थे - मतलब मैं मम्मी की नज़र में छोटा ही हूँ ऐसा मेरा सोचना था। वह पापा से कहेंगी कि समीर अभी इतना बड़ा नहीं हुआ है कि अपना ध्यान रख सके। मैंने सुना तो नहीं, पर पापा ने यही कहा होगा - 'उसे अपने पल्लू से बाँधकर रखोगी तो कैसे बड़ा होगा' और मम्मी ने मुझे उसी साल पल्लू से खोलकर अपने साथ सुलाना बंद कर दिया। इस तरह मेरे बड़े होने की नींव डाल दी गई। धीरे-धीरे मुझे अपने कपड़े धोने, बिस्तर लगाने और साफ सफाई स्वयं करने की बातें याद दिलाई जाने लगीं। इसके बाद भी मैंने पापा की बातों को सीरियसली लेना शुरु नहीं किया। मुझे दादी पर भी भरोसा था कि वह मुझे किसी भी कीमत पर दूर नहीं जाने देंगी। वह मेरे भरोसे पर खरी भी उतरीं ... उन्होंने पापा को बहुत सारी दुनियादारी वाली बातों का हवाला देकर, रो-धोकर सारे हथकंडे अपना कर देखे, पर पापा के आगे उनकी दाल नहीं गली। पापा ने उनको मना ही लिया ... कैसे ... नहीं जानता। शायद उन्होंने उनको इंजीनियर न बना पाने का उलाहना देकर चुप करा दिया होगा।

अंतिम हथियार के रूप में मैंने छोटे चाचा का भी सहारा लेना चाहा, पर उन्होंने मोर्चा लेने से पहले ही हार मान ली। पापा की ज़िद के आगे किसी की नहीं चलने वाली यह मेरी समझ में आ गया था। फिर भी मैंने एक और कोशिश

करनी चाही। बड़े मामा से अनुरोध किया तो उन्होंने मेरा ही ब्रेनवाश करना शुरु कर दिया - "विश्वदीप तुम्हारे भले की सोचते हैं ... वह तुम्हारे कैरियर को सँवारने के लिए कितने प्रयासरत हैं ... मैं कुणाल के लिए कुछ खास नहीं कर पाया, इसलिए बुंदेलखंड में आर्ट्स पढ़ रहा है ... मैंने भी ध्यान दिया होता तो वह भी इंजीनियर, डॉक्टर बन सकता था ... तुम किस्मत वाले हो जो तुम्हें विश्वदीप जैसे पिता मिले।"

पापा से मैं भी बहुत प्रेम करता हूँ। कभी भी मैंने उनकी कोई बात नहीं टाली थी। इंजीनियर मैं भी बनना चाहता था, पर इसके लिए इतनी दूर जाने की क्या ज़रूरत है और वह भी अभी से ... मैं सोचा करता ... भोपाल और इंदौर में ही बहुत से अच्छे कोचिंग इंस्टिट्यूट हैं ... वहाँ भी कोचिंग ली जा सकती है ... पर पापा कोई रिस्क लेना नहीं चाहते थे। सबसे अच्छे कोचिंग संस्थान में कोचिंग दिलाकर मुझे अच्छे आई.आई.टी. में पढ़ाना ही उनका उद्देश्य था। इसमें उनका स्वार्थ तो था, पर भविष्य मेरा सुंदर और सुरक्षित होने वाला था, लेकिन उस समय इतनी बारीकियों की समझ मुझमें नहीं थी।

छुटकी यानि कि मानसी, मुझसे चार साल छोटी है ... पर जब लड़ने पर आती है तो शैतानों की अम्मा लगती है। मेरी हर चीज पर अपना अधिकार समझती है और इसी बात पर मेरी लड़ाई होती थी उससे। पापा ने मुझे नई बास्केटबाल दिलाई थी। उस समय मैं आठवीं में पढ़ता था। लूडो में मुझसे हार जाने पर उसने मेरी बास्केटबाल चाकू से गोदकर डस्टबिन में डाल दी थी, पर पापा ने उससे कुछ नहीं कहा उलटा मुझे अपनी चीजें संभालकर न रखने के कारण जम के डाँट पिलाई थी। मम्मी ने भी उसका पक्ष लिया, लेकिन उसे समझाया भी। दादी ने जब ये कहा कि छुटकी तो पराया धन है, जितने दिन हमारे पास है उसकी अच्छी देखभाल करना हमारा कर्तव्य है। उनकी बात मेरी समझ में तो नहीं आई, पर उसके बाद मैं छुटकी के प्रति ज्यादा संवेदनशील हो गया। उसकी किसी बात का फिर कभी बुरा नहीं माना और स्वयं ही आगे बढ़कर अपनी चीजें उससे शेयर करने लगा। छुटकी भी अचानक बड़ी हो गई। दादी को अब टोकना नहीं पड़ता था कि अपनी फ्रॉक को ठीक करे, घुटनों के ऊपर जा रही है, ज्यादा उछलना-कूदना अच्छा नहीं, धम्म-धम्म करके चलना ठीक नहीं ... ऐसी और भी बहुत सी बातें थीं जो दादी के मुँह से सुनाई नहीं देती थीं ... मतलब छुटकी सच में बड़ी हो गई थी ... बहुत से परिवर्तन आने लगे थे

उसमें। मेरे कोटा जाने से वह अन्दर ही अन्दर बहुत दुखी थी, लेकिन ऊपर से गंभीरता का लबादा ओढ़ रखा था। मम्मी की आँखों में तो मैंने कई बार आँसू देखे थे, पर छुटकी, वह तो बहुत बड़ी कलाकार है ... सामने आती तो छेड़ती ... ''जल्दी जाओ भैया ... अब पूरे घर पर मेरा साम्राज्य रहेगा ... आपकी आलमारी मेरी होगी, कलर, ब्रश, ड्राइंग बुक और आपका सारा स्टैम्प और ऑटोग्राफ कलेक्शन भी। मैं नहीं दूँगी अब तुमको।'' उसके लिए मैं कब आप हो जाता और कब तुम समझ ही नहीं आता। मैं भी उसे पगली 'सब तेरा है' कहकर खुश करना चाहता, पर वह इतनी आसानी से सबकुछ नहीं चाहती थी शायद ... मैं कुछ नखरे करूँ ... उसे देने से मना करूँ ... वह ये सब सुनते हुए हथियाना चाहती थी मेरी चीजों को।

मम्मी और छुटकी पाँच दिन मेरे साथ कोटा में रहीं। इस बीच उन्होंने ग्लोबल कोचिंग संस्थान में न केवल मेरे एडमिशन की समस्त ज़रूरी कार्यवाही की अपितु मेरे रहने के लिए वासवानी आंटी के यहाँ व्यवस्था भी कर दी। वासवानी अंकल-आंटी बड़े से घर में अकेले रहते थे। उनके दोनों बच्चे विदेश में थे। अकेलेपन से उबरने के लिए उन्होंने ऊपर के दो कमरों में दो बच्चों को पेइंग-गेस्ट रख लिया था। एक कमरे में संकेत तिवारी पिछले दो साल से रह रहा था। मम्मी ने जाने से पहले दूसरे कमरे में मेरा सामान जमा दिया।

वापस जाते समय मम्मी ने मुझे अपने साथ स्टेशन ले जाना भी उचित नहीं समझा ... शायद उन्हें खुद के कमजोर पड़ जाने का डर सता रहा था या फिर मेरी नज़रों में कातरता के भावों को जाते समय नहीं देखना चाहतीं थी। छुटकी इन सब बातों से बहुत दूर थी। वह जाने से पहले मुझसे लिपटकर खूब रोई, लेकिन जाते-जाते हँसा भी गई - ''भैया मैं दुखी नहीं हूँ ... रोई केवल इसलिए कि अब किससे लड़ूँगी।''

इस तरह उनके जाते ही शुरु हो गया था, मेरी ज़िंदगी का नया अध्याय।

एक सप्ताह बीतने के बाद भी मेरा मन कोटा में पूरी तरह रम नहीं पाया था। क्लास में अजीब तरह का परायापन लगता। कोई किसी से ज्यादा बात नहीं करता ... सब अपने में खोए नज़र आते ... हर चेहरे पर उदासी और तनाव पसरा दिखता। क्लास में एक सौ अड़तालीस बच्चे थे ... औपचारिक परिचय बहुतों से हुआ, पर मित्रता का हाथ किसी ने नहीं बढ़ाया। शायद कोई मित्र बनने, बनाने आया भी नहीं था वहाँ। सब प्रतिद्वंद्वी थे एक-दूसरे के, आपस में उतनी

ही बात करते जितनी औपचारिकता के लिए ज़रूरी होती। एक अलग ही दुनिया थी ... आपसी प्रेम, विश्वास, सद्भाव नदारद था, केवल होड़ थी आगे बढ़ने की, सबको पीछे छोड़ने की। एक ज़िद लेकर आए थे वहाँ ... आकाश छू लेने की, इतिहास में नाम लिखाने की, भीड़ से अलग दिखने की ... हालाँकि इस भीड़ में कुछ बच्चे ऐसे भी थे जो केवल दूसरों की देखा-देखी यहाँ चले आए थे और जरा भी सीरियस नहीं थे पढ़ाई को लेकर ... मस्ती के मूड में रहते हर समय ... टीचर डाँटते भी, पर कोई असर नहीं होता। बेपरवाह। कुछ इतने आश्वस्त थे और जताते भी रहते थे कि उनका सेलेक्शन तो होना ही है कोई चाहकर भी उनको नहीं रोक सकता। इनमें से कुछ बच्चे मेहनत ज़रूर करते थे, लेकिन उतनी नहीं, जितनी मैं या दूसरे बच्चे कर रहे थे।

ग्लोबल इंस्टिट्यूट में मेरे बैच में 444 बच्चों ने एडमीशन लिया था। तीन सेक्शन और प्रत्येक में 148 बच्चे। छतरपुर से मैं अकेला ही था। दमोह से एक था रोहित जाटव, उमर में दो साल बड़ा, पर इतना अकड़ू कि मेरी ओर देखता भी नहीं था ... वह मानकर चल रहा था कि उसका सेलेक्शन होना ही है और मैं कितनी भी मेहनत कर लूँ आई.आई.टी. तो दूर रीजनल कॉलेज के दरवाजे तक के दर्शन नहीं कर पाऊँगा। रमन अग्रवाल और उज्जवल सेठी उज्जैन से थे, जिनसे मेरी थोड़ी-बहुत बात हो जाया करती। इसके पीछे शायद एक कारण ये भी था कि रमन के पापा कभी छतरपुर में इरिगेशन में एस.डी.ओ. रह चुके थे। हम दोनों ने ही इस कारण एक अदृश्य जुड़ाव महसूस किया था, इसके बावजूद हमारी मित्रता में वह गर्माहट और अपनापन नहीं था, जो मैं छतरपुर में आबिद अथवा नवीन के साथ महसूस करता था। कुछ देर में ही हमारे बीच उबाऊपन आकर बैठ जाता और हममें से कोई उठकर चल देता।

पंद्रह दिनों बाद पहला टेस्ट हुआ। परिणाम 148 बच्चों में 102वाँ स्थान। दिन-रात आँख फोड़ू मेहनत करने का ये सिला। मैं अंदर ही अंदर हिल गया ... टूटने लग गया ... लगा ''ये मेरे बस का नहीं, मैं नहीं कर पाऊँगा पापा के सपनों को पूरा ... बेमतलब ही पापा मुझसे इतनी बड़ी अपेक्षा लगा बैठे ... जो काम उनसे नहीं हुआ वो मैं कैसे कर सकता हूँ ... उनका ही ओ प्लस (O^+) खून मेरी रगों में दौड़ रहा है। मैं नहीं कर पाया तो ... नहीं नहीं ... मैं ऐसा कदापि नहीं सोच सकता ... मुझे करना ही होगा।'' कई बार मेरे अंदर प्रश्नों का तूफान मचलता रहता और मैं स्वयं ही उनके उत्तर देता रहता।

यहाँ आते ही मैंने सबसे पहले सुपर सिक्सटी इंस्टिट्यूट के करन नारंग का किस्सा सुना था, जिसने पहले टेस्ट में अंतिम स्थान पर रहने के कारण फाँसी लगा ली थी। पहली दौड़ को ही उसने अंतिम दौड़ समझ लिया था। करन नारंग कमजोर था ... उसने लड़ना सीखा ही नहीं था। उस घटना के बाद वासवानी आंटी ने मुझे पास बैठाकर समझाया था कि ''किसी हाल में कमजोर नहीं पड़ना है तुमको ... बिना अथक प्रयास किए सपने पूरे नहीं होते ... चलते रहोगे तो मंजिल अवश्य मिलेगी ... असफल भी होते हो तब भी जीवन अमूल्य है ... किसी कमजोर पल में जीवन की अहमियत भूलना नहीं चाहिए ... वाहे गुरु ने मनुष्य का जीवन दिया है तो उसका कोई न कोई उद्देश्य ज़रूर होगा ... कोई न कोई काम उसने तुम्हारे लिए सोच रखा होगा ... पिछले साल चौदह बच्चों ने तनाव में आकर अपनी जान दी थी ... वे तो चले गए, पर अपने परिवार को क्या दे गए ... जीवन भर का गम, यातना, आँसू ... जब तक साँस चलेगी तब तक दिल पर बोझ लिए घुटते रहेंगे उनके अपने ... तुम्हें कभी भी कुछ भी परेशानी हो तो हमसे ज़रूर शेयर करना ... यहाँ हम ही तुम्हारी माँ हैं ... दोस्त हैं ... अभिभावक हैं।'' कितनी अच्छी हैं वासवानी आंटी। कितना अच्छा होता यदि करन भी हॉस्टल की बजाय किसी वासवानी आंटी के यहाँ पेइंग गेस्ट बनकर रहा होता।

जब भी मैं निराश होता, आंटी तुरन्त भाँप जातीं। उनकी बातों से मुझे सदा नई स्फूर्ति, नई प्रेरणा मिलती। मैं अमिताभ बच्चन के इस कथन को भी बार-बार सुनता कि ''कोशिश करने वालों की हार नहीं होती है।'' कुछ दिन पूर्व पढ़ी दशरथ मांझी की कहानी भी कभी हार न मानने की सीख देती। दशरथ मांझी ने 22 सालों की अथक मेहनत के बाद लगभग आठ मीटर ऊँचे पहाड़ को काटकर 110 मीटर लम्बा रास्ता अकेले बना डाला था ... वह भी केवल इसलिए कि इलाज के अभाव में उसकी पत्नी की तरह अब किसी और व्यक्ति की मौत गाँव में न हो। दक्षिण अफ्रीका के 'ब्लेड रनर' ऑस्कर पिस्टोरियस की कहानी तो और भी अद्‌भुत है। 11 माह की उमर में ही उसका पैर काटना पड़ा था, लेकिन बड़े होकर हिम्मत नहीं हारी उसने ... नकली पैर के सहारे उसने न केवल स्प्रिंट दौड़ों में भाग लिया अपितु दुनिया भर में अपनी पहचान बनाई। विश्व स्पर्द्धा में पदक जीता और ओलम्पिक में अपने देश का प्रतिनिधित्व किया। मैं तो केवल दो-तीन टेस्ट्स में पिछड़ा भर हूँ ... अंतिम मुकाबला थोड़े हार गया हूँ ... ''मैं हार नहीं मानूँगा'' ... कितनी बार अपने चहेते राजनेता अटल जी से सुना है ... फिर मैं कैसे हार मान सकता हूँ ... मैं भी हार नहीं मानूँगा ... और ... और जी तोड़ मेहनत करूँगा।

यह मेरी खुशकिस्मती रही कि जब अकेलापन मुझे डसने की ताक में था, तभी चित्रा से मेरी दोस्ती हो गई। मैं उसे पढ़ाकू लड़की समझता था। पहले टेस्ट में वह सातवें नम्बर पर आई थी और मैं एक सौ दोवें। इस दृष्टि से मेरी और उसकी दोस्ती की कोई संभावना नहीं बनती थी, पर पहली मुलाकात ने ही मेरी धारणा बदल दी। मुझे समझ में आ गया कि किसी के बारे में बहुत जल्दी धारणा नहीं बनानी चाहिए ... कितने ही अच्छे दोस्त, बनने से पहले ही दूर जा सकते हैं। चित्रा यदि स्वयं पहल न करती तो मैं एक अच्छे दोस्त से वंचित ही रहता, केवल अपनी बचकानी धारणा के कारण। लंच में हम रोज मिलने लगे। धीरे-धीरे उसके बारे में बहुत सी बातें जान गया ... वह देवास से आई है ... पापा कॉलेज में लेक्चरर हैं ... माँ साथ में आई हैं ... वन बी.एच.के. फ्लैट किराए पर ले रखा है। उसे संगीत का शौक है ... माँ भी अच्छा गाती हैं। बचपन में माँ ने कुमार गंधर्व से गायकी सीखी थी। स्थानीय स्तर पर अनेक कार्यक्रमों में वह पुरस्कृत भी हो चुकी हैं। कभी-कभी चित्रा भी तनाव के क्षणों में हारमोनियम पर गुनगुना लेती है।

चित्रा से दोस्ती का असर भी दिखने लगा। मेरा आत्मविश्वास लौटने लगा और मैं हर टेस्ट में अपनी स्थिति सुधारने लगा। दो माह में ही मैं क्लास के पहले 25 स्टूडेंट्स में आ गया। चित्रा ने भी दो स्थानों का सुधार किया और पाँचवें क्रम पर आने लगी।

02

वासवानी अंकल बहुत हँसमुख और मजेदार व्यक्ति हैं। पिछले दो माह में उनके इतने विविध रूप देखे कि आश्चर्य होता है कि कोई व्यक्ति एक साथ इतने काम इतनी सफलता और सलीके से कैसे कर सकता है। पचहत्तर साल की उम्र में भी कहाँ से आती है इतनी एनर्जी, उल्लास और उत्साह। पेशे से इलेक्ट्रिकल इंजीनियर रहे, पॉवरग्रिड कॉर्पोरेशन से अधीक्षण अभियंता रहते हुए रिटायर हुए ... ग्रिड-सेपरेटर डिजाइनिंग के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। चेस के अच्छे खिलाड़ी थे। मुम्बई में इंजीनियरिंग की पढ़ाई के दौरान मैनुएल आरोन और

नासिर अली जैसे राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों को हराकर चर्चा में भी आए .. . यदि चेस को सीरियसली लिया होता और नौकरी में डूबकर काम न किया होता तो अवश्य ही ओलम्पियाड में भारत का प्रतिनिधित्व करते। आजकल कविताएँ लिखते हैं ... गरीब लोगों को होम्योपैथी की दवाएँ मुफ्त देते हैं। हर रविवार को गोष्ठियों में भाग लेने जाते हैं, दो-तीन माह में एक बार घर पर भी गोष्ठी रखते हैं, कोटा के लगभग सारे कवि और कहानीकार इकट्ठे होते हैं। घर पर बहुत सी पत्रिकाएँ आती हैं ... अच्छी-खासी लायब्रेरी है, जिसमें साहित्य से लेकर संस्मरण, आत्मकथाओं से लेकर यात्रा वृतांत और खेलों से लेकर विज्ञान की दो हजार से ज्यादा पुस्तकें हैं। कभी-कभी आकाशवाणी से काव्य पाठ और वार्ताओं के लिए बुलावा आता है। कई देशों की यात्राएँ की हैं। उनसे जब भी किसी भी विषय पर बात करो आनन्द आता है ... बहुत कुछ नया सीखने को मिलता है। हर सब्जेक्ट में मास्टरी है उनकी।

मैंने कभी उन्हें खाली बैठे नहीं देखा, हमेशा कुछ न कुछ करते रहते हैं। समय के पाबंद और गजब के अनुशासनप्रिय। समय सारिणी से चलते, प्रतिदिन सुबह पाँच बजे उठ जाते ... ग्रीन टी लेकर कॉलोनी के पार्क में एक्यूप्रेशर वॉक-वे पर दस मिनट नंगे पैर चलते फिर दो किलोमीटर टहलकर लौटते। हल्का योगाभ्यास और प्राणायाम। फिर अखबार और नाश्ता। लंच से पहले दो घंटे लिखा-पढ़ी। दोपहर में थोड़ा सा आराम। कभी-कभी अब भी अकेले ही चेस की बिसात जमा लेते।

कोटा आने के पूर्व से ही दादी के पैर छूकर स्कूल जाना मेरी आदत में था। वासवानी आंटी भी दादी की उम्र की ही हैं, लेकिन उनके मुकाबले एकदम फिटफाट। दादी को बहुत सारे रोगों ने घेर रखा था ... गठिया, ब्लड प्रेशर और शुगर तो मुझे पता हैं, एक-दो और भी हो सकते हैं। पर यहाँ जो मैं बताना चाह रहा हूँ वह यह कि कोचिंग जाते समय मैं उन दोनों के पैर छूना नहीं भूलता। दोनों ही सिर पर हाथ फेरकर आशीष देते। एकाध बार आंटी को अंकल से कहते हुए भी सुना - ''बहुत संस्कारवान लड़का है।''

शाम को जब कोचिंग से लौटता, अंकल के पास कुछ देर अवश्य बैठता। उनसे बात करना मतलब बहुत सी बन्द खिड़कियों के खुलने जैसा था। मैंने उनसे कितने ही ऐसे किस्से सुने, जिनसे ज़िंदगी के अनेक रंगों से रूबरू होने का अवसर मिला, ज़िंदगी के अनेक मोहक, रोमांचक और प्रेरणाप्रद पहलुओं को

समझने में मदद मिली। वह हर किस्से को इतने जीवंत अंदाज में बताते कि आँखों के सामने शब्द चित्र बनता जाता ... चाहे वह चाँद पर पहला कदम रखने वाले नील आर्मस्ट्रांग की कहानी हो, वेस्टइंडीज के वेस हाल की तूफानी गेंदबाजी की दास्तान हो, वीनू मांकड की जीवट-गाथा हो, पोखरण का विस्फोट हो या भारत छोड़ो आंदोलन की कहानियाँ। उनके मुँह से जब भारत के पहले अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा की कहानी सुनी तो सीना गर्व से फूल गया था। प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी के एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने जो कुछ कहा था, उसे सुनकर समूचा देश पुलकित हो उठा था। इंदिरा जी ने पूछा था कि अंतरिक्ष से भारत कैसा दिखता है तो उन्होंने कहा था - ''सारे जहाँ से अच्छा।'' आप ही बताइए ये जवाब सुनकर किसका सीना गर्व से दोगुना न हुआ होगा ... मेरा तो इस प्रसंग के चालीस साल बाद भी हो गया।

उस दिन आंटी का बर्थ डे था। जब मैं शाम को आया तो अंकल मेरा इंतजार कर रहे थे। बोले - ''ये देखो, कार्ड लेके आया हूँ तुम्हारी आंटी के लिए ... तुम अपनी हैंडराइटिंग में इस पर प्यारा सा संदेश लिख दो।''

''आज आंटी का बर्थ डे है ... आपने बताया क्यूँ नहीं ... मैं भी उनके लिए कोई गिफ्ट ले आता।''

''तुम हमारे साथ हो यह किसी गिफ्ट से कम नहीं है।'' - अंकल भावुक होते हुए बोले - ''दस साल से ज्यादा हो गए हमें ऊपर के कमरे बच्चों को देते हुए, पर कभी किसी बच्चे से इतनी आत्मीयता नहीं मिली, किसी ने कभी भी हमारे साथ बैठकर इतना समय नहीं बिताया ... आंटी भी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हैं ... इस बार बर्थ डे को लेकर बहुत उत्साहित हैं ... सुबह से कई बार कह चुकी हैं कि इस बार हमारा जिमी हमारे साथ है। पता नहीं क्या-क्या बनाया है आज उन्होंने ... सुबह से किचन में ही हैं।''

अंकल की बात ने मुझे अंदर तक भिगो दिया। जिमी अमेरिका में रहने वाला उनका पोता है ... जब एक साल का था, तब भारत आया था, उसके बाद नहीं। दो बार अंकल-आंटी ज़रूर दो-दो माह के लिए अमेरिका हो आए थे, पर पिछले आठ सालों से उन्होंने उसे केवल स्काइप या मैसेंजर पर ही देखा था।

बुजुर्गों के अकेलेपन के बारे में अखबारों और कुछ पत्रिकाओं में पढ़ा था, लेकिन अंकल-आंटी जैसे खुशमिजाज बुजुर्ग भी इस अकेलेपन को ढो रहे हैं, आज महसूस किया। सबकुछ होते हुए भी जो होना चाहिए था, वही नहीं है उनके

पास। सारी सुख-सुविधाएँ हैं, पर एकाकीपन का दंश ग्रहण की तरह है सारी सुविधाओं पर। पेइंग गेस्ट रखना उनकी मजबूरी नहीं है। रहने आने वाले बच्चों में अपने नाती-पोतों को देखने की ललक ने उन्हें बाध्य किया है, पेइंग गेस्ट रखने के लिए। वह भी जानते हैं, यह एक मरीचिका है ... जब परिवार टूट रहे हों ... समझ का दायरा सिकुड़ता जा रहा हो ... केवल 'मैं' व्यक्तित्व का हिस्सा होता जा रहा हो, ऐसे में पराए बच्चों में अपनों की छवि खोजना घोर अव्यवहारिकता ही तो है, पर वे इस अव्यवहारिकता को ओढ़कर भी खुश हैं। संकेत दो साल से ज्यादा समय से उनके साथ रह रहा है, लेकिन अभी तक अपरिचितों सा व्यवहार करता है। मैंने उसे कभी न तो अंकल के पास और न ही आंटी के पास बैठे देखा। वह तो नाश्ता और खाना भी अपने कमरे में ही खाता है। बिल्कुल एक प्रोफेशनल पेइंग गेस्ट की तरह व्यवहार है उसका, पर आंटी उसका भी उतना ही ध्यान रखती हैं।

संकेत अपने रूम में ही था। मैं बुलाने भी गया उसे, पर वह आता हूँ कहकर भी नहीं आया। आंटी ने उसके कमरे में ही खाना पहुँचा दिया। मुझे बहुत गुस्सा आया, पर अंकल ने यह कहकर कि ''एक ही परिवार में दो बच्चों का व्यवहार भी अलग-अलग होता है।'' मुझे शांत कर दिया। कुछ लोग समय से पहले बड़े हो जाते हैं और कुछ उमर भर बड़े नहीं हो पाते। व्यवहारिक बात थी, जिसे अंकल ने बड़ी सहजता से समझा दिया था।

रात को नौ बजे अमेरिका से अंकल के बेटे मनोहर का स्काइप पर काल आया ... सबने आंटी को बर्थ डे विश किया। मैंने जिमी को पहली बार देखा ... हाय-हैलो भी हुई। मुझसे दो साल बड़ा है, दिखने में बिल्कुल अंग्रेज पर हिंदी बोलता है, सुनकर अच्छा लगा। अंकल-आंटी बहुत देर तक उनसे बात करते रहे। जर्मनी से बेटी का फोन शाम को ही आ चुका था।

सुबह जब कोचिंग जाने के लिए तैयार होकर नीचे आया तो देखा अंकल मेरे लिए ऑमलेट और ब्रेड तैयार कर रहे हैं। वह आज टहलने भी नहीं गए थे। आंटी को रात में बुखार आ गया था ... सारा बदन टूट रहा था ... यह कल पूरे दिन की गई अथक मेहनत का परिणाम था। अंकल ने होम्योपैथी दवा दी थी। मैंने आंटी से झूठ ही कहा - ''आज केवल दो पीरियड हैं, बारह बजे तक छुट्टी हो जाएगी ... मैं आकर सारे काम कर दूँगा ... आपको पलंग से नीचे पैर नहीं रखना है।''

सुनकर आंटी के मुरझाए चेहरे पर खुशी के ऐसे भाव उभरे जैसे अंतस में अपार शान्ति पहुँची हो - ''अरे नहीं उठूँगी ... पर तुम क्लास छोड़कर नहीं आओगे ... वरना मैं बात नहीं करुँगी।''

कोचिंग में मेरा मन नहीं लगा उस दिन। बार-बार आंटी की तबियत के बारे में ध्यान आता रहा। दो बार अंकल से बात की ... एक बार लंच टाइम में और दूसरी बार वाशरूम के बहाने क्लास से बाहर आकर। मैं चाहकर भी बीच में घर नहीं लौट सका ... आंटी की बात ने मेरे पाँवों को बेड़ियाँ बनकर बाँध रखा था।

शाम को वापस आया तो आंटी भी पलंग पर लेटी मिली - ''देख ले ... मैं दिन भर पलंग से हिली भी नहीं ... खुश है न अब तू।''

मेरी आँखें भर आईं ... दादी भी कभी-कभी ऐसी ही प्यारी झिड़की लगाया करती थी। जब गठिया का दर्द बढ़ता तो मैं उनके पैरों में सरसों और लहसुन के तेल से मालिश कर दिया करता। आंटी के रूप में आज मुझे दादी नज़र आ रही थी। उन्होंने बहुत मना किया, पर मैं नहीं माना। मेरी मालिश से उन्होंने बहुत आराम महसूस किया। इसके बाद तो मेरा और उनके बीच का आंटी वाला रिश्ता खतम हो गया ... अब वह मेरी दादी थीं और अंकल दद्दू। पर अपनी इस कहानी में मैं उनको अंकल और आंटी नाम से ही संबोधित करूँगा।

03

आठवें साप्ताहिक टेस्ट में मुझे नौवीं रैंक मिली। चित्रा तीसरे स्थान पर आई। मैं अपने प्रदर्शन से संतुष्ट था ... धीरे-धीरे ही सही पर कदम मंजिल की दिशा में आगे बढ़ने लगे थे। मेरी इस सफलता में चित्रा की भूमिका महत्वपूर्ण थी। उसने ही मुझे सवालों को हल करने की अनेक शार्टकट विधियाँ बताईं थी, फार्मूलों को याद रखने के तरीके बताए थे। पढ़ाई में एकाग्रचित्त होने के लिए प्राणायाम, सूर्य नमस्कार, त्राटक और योग निद्रा के कुछ आसन करके दिखाए थे या कहें सिखाए थे। इसका चमत्कारिक असर भी हुआ। मैं स्वयं को पहले से ज्यादा स्फूर्त और फोकस्ड महसूस करने लगा। पहले दस में आने की सफलता से उत्साहित हो मैंने एक कागज पर 'थैंक्स चित्रा' लिखकर चुपके से उसके बैग में रख दिया जब वह लंच टाइम में वॉशरूम गई थी।

दूसरे दिन चित्रा अपने लंच बॉक्स में मेरी पसंद की मावे की जलेबियाँ और कचोरियाँ लेकर आई। कोचिंग-क्लास के बाद उसने कुछ खरीदारी करने के लिए बाजार चलने को कहा। अगले दिन रविवार था और अंकल ने घर पर गोष्ठी रखी थी। मुझे भी आंटी ने लौटते समय आलू चिप्स के पैकेट, नमकीन और काजू कतली लाने को कहा था।

चित्रा को बाजार से राखी खरीदते देख मैं चौंका ... उसके तो कोई भाई नहीं है ... अकेली है वह ... फिर राखी किसके लिए ... क्या चल रहा है उसके मन में ... क्या चाहती है वह? एक अनजाने डर से मुझे अपना दिल बैठता हुआ प्रतीत हुआ। धड़कनों की गति भी अनियंत्रित होने लगी ... माथे पर पसीने की बूँदें छलक आईं। क्यूँ ऐसा हो रहा है मेरे साथ, मुझे समझ नहीं आ रहा था। चित्रा को लेकर अजीब सी उथल-पुथल मन में मची हुई थी। उसके साथ के रिश्ते को जितना भी समझने की कोशिश करता, मैं और उलझ जाता। चित्रा इस सबसे बेखबर अपनी खरीदारी में व्यस्त थी। मैं यंत्रवत उसके साथ चल रहा था, पर मन में द्वंद्व जारी था।

खरीदारी करके लौटते हुए हमारे बीच कोई बात नहीं हुई। चित्रा भी एक रहस्यमयी चुप्पी ओढ़े हुए थी और मेरे मन में अशांति बढ़ती जा रही थी। चित्रा को छोड़ते हुए मैं जल्दी-जल्दी घर लौटा और आंटी के हाथों में कैरीबैग थमाकर शीघ्रता से अपने कमरे में आ गया। उस दिन पहली बार मैं शाम को अंकल के पास नहीं रुका। वह मुझे विस्मय से सीढ़ियों पर चढ़ते हुए देखते रहे।

चित्रा के बारे में सोचते हुए मैं यह भी भूल गया कि मेरी प्यारी छुटकी इस रक्षाबंधन पर कितनी उदास, कितनी अकेली होगी। पहली बार रक्षाबंधन के पावन अवसर पर मैं उसके पास नहीं होऊँगा। अगले दिन सुबह जब आंटी ने बताया कि मानसी की राखी आई है तब मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ। कूरियर कल दोपहर को ही आ गया था, लेकिन आंटी को बताने का अवसर ही नहीं दिया था मैंने। ''सॉरी छुटकी ... तेरा भाई यहाँ आकर बदल गया है ... अपने में इतना मस्त रहने लगा है कि भाई-बहिन के इस सबसे पवित्र अवसर पर ही बहिन को भूल गया ... मुझे माफ कर दे छुटकी।'' मैं बोलना चाहता था उसे, पर यह सोचकर रुक गया कि उसे दुख पहुँचेगा यह जानकर। मैंने दादी से पक्का वाला प्रॉमिस भी किया था कि वह कभी छुटकी का दिल नहीं दुखाएगा, फिर क्या रक्षाबंधन के दिन ही उसका दिल दुखा दूँ? छुटकी तो कभी यह सोच भी नहीं

सकती कि उसका भाई उसे भूल सकता है। मैंने फोन लगाया। उसकी चहकती हुई आवाज़ आई - ''आज तो बहुत खुश हो न भैया ... पाँच सौ का नोट जो बच गया ... पर मैं लिए बिना नहीं मानूँगी ... जब आओगे तब ब्याज सहित वसूल लूँगी।'' बोलते-बोलते रुआँसी हो आई, थोड़ी देर चुप रही, बोली - ''सवा दस बजे सबसे अच्छा मुहूरत है ... भैया ठीक उसी समय पर राखी बाँध लेना ... मेरी फोटो सामने रखकर।''

''पगली ... तेरी फोटो सामने रखकर क्यूँ ... तुझे सामने बैठाकर राखी बाँधूगा ... मैं तैयार होकर आता हूँ, ठीक दस-दस पर स्काइप पर मिलते हैं।''

छुटकी ने राखी के साथ ही कैडबरी का बड़ा डिब्बा और लेवाइस की आसमानी रंग की टी-शर्ट भी भेजी थी। मैं अब कोई गलती करना नहीं चाहता था, अतएव दस बजकर दस मिनट से पहले ही वीडियो कॉल कर लिया। पीच कलर के लहँगे में छुटकी बहुत प्यारी लग रही थी। उसने आरती का थाल भी सजाकर रखा था। सवा दस बजने में तीन-चार मिनट बाकी थे। मैंने माहौल को हल्का करने के लिए छुटकी को छेड़ा - ''थोड़ा कम खाया कर छुटकी ... देख नया लहँगा भी टाइट हो रहा है।''

''क्यूँ कम खाऊँ भैया ... वैसे मैं खाती तो पहले जितना ही हूँ पर अब दिमाग खाने वाला कोई नहीं है न, इसलिए मोटी हो गई हूँ थोड़ी सी'' - छुटकी का जवाब सुनकर मैं निरुत्तर हो गया।

''बहुत बातूनी हो गई है तू ... चल टाइम हो रहा है ... जल्दी से राखी बाँध'' - कहते हुए मैंने अपना दायाँ हाथ बढ़ा दिया।

छुटकी जोर से हँसी - ''पहले आरती तो करने दो।''

उसने आरती उतारी। मैंने अपने हाथों से राखी बाँधी, कैडबरी क्रंची का एक बाइट लिया। छुटकी ने अपने पैर फैला दिए - ''भैया, इनको कौन छुएगा?''

''अरे मैं भूला थोड़े हूँ ... तेरे लिए पैसे निकाल रहा था ... अब रहने देता हूँ ... पैर ही छू लेता हूँ।''

इसके बाद पापा, मम्मी और दादी से भी बात हुई। लगा अपनों के पास पहुँच गया हूँ ... बहुत तरोताजा महसूस किया। दुनिया ने भी कितनी तरक्की कर ली है ... कहीं भी रहो और अपनों से साक्षात बतिया लो। दादी बताती हैं, उनके जमाने में तो लाइट ही नहीं थी ... लैम्प की रोशनी में सारे काम करना पड़ते थे। पापा ने चौथी तक लैम्प की रोशनी में ही पढ़ाई की थी।

शाम को अंकल के यहाँ गोष्ठी में कोटा के लगभग सभी प्रसिद्ध साहित्यकार आए थे। मेरे लिए किसी गोष्ठी को सुनने का यह पहला अवसर था, यद्यपि इससे पूर्व मैंने पापा के साथ दो बार छतरपुर जलविहार मेले का कवि सम्मेलन सुना था। गोष्ठी में सुनाई गई बहुत सी रचनाएँ तो मेरे ऊपर से निकल गईं ... समझ ही नहीं आईं, लेकिन उनकी तारीफ बहुत हुई। मुझे अपने हिन्दी ज्ञान पर बहुत शर्मिंदगी महसूस हुई। अंकल ने दो गीत सुनाए, दोनों ही प्रेम गीत, बहुत अच्छे लगे। उनके दूसरे गीत की पहली दो पंक्तियाँ सुनकर लगा कि ये तो मेरे मन की बात है ... सोचते ही चित्रा का चित्र उभर आया।

पहली नज़र में प्यार का, यह अहसास बड़ा ही प्यारा है।

नयनों में छवि तुम्हारी है, अधरों पर नाम तुम्हारा है।

मुझे चित्रा की याद ही नहीं आई थी दिन भर। अंकल के गीत ने दिला दी। मेरा मन फिर से अनजान डर की गोद में जा बैठा। कहीं चित्रा कुछ अलग सोचती हो मेरे बारे में। उसकी वो राखी, आँखों के सामने आकर स्थिर हो गई थी .. . पर उसने अभी तक मुझे फोन भी तो नहीं किया। नहीं किया तो अच्छा ही हुआ न, यही तो मैं चाहता भी था ... फिर किसके लिए खरीदी उसने राखी? चित्रा ऐसी तो नहीं है ... हर बात शेयर करती है फिर ये बात क्यों नहीं शेयर की? ये मुझे क्या हो रहा है ... मुझे क्यों डर लग रहा है उसकी राखी को लेकर? क्या यही प्रेम है जो एक लड़के और एक लड़की के बीच में होता है? मेरा दिमाग सोच नहीं पा रहा था। इसी उधेड़बुन में खोया था कि अंकल ने आवाज़ दी - ''समीर, सब तुमसे भी कुछ सुनना चाहते हैं ... सुनाओ तुम भी कुछ''

''अंकल मैं ... पर मैंने तो कभी कविता लिखी ही नहीं ... मुझे पता भी नहीं कैसे लिखते हैं कविता'' - मैं समझ नहीं पा रहा था, क्या बोलूँ।

''कोई भी कविता ... जो तुम्हें याद हो।''

''हाँ ... हाँ कोई भी'' - कई कवियों की एक साथ आवाज़ आई।

मैं थोड़ी देर सोचता रहा, पर हिम्मत नहीं कर पा रहा था, इतने विशिष्ट लोगों के बीच कुछ बोलने की। एक बार स्कूल में अपनी हँसी उड़वा चुका था। तब मैं आठवीं में पढ़ता था। क्लास टीचर ने तुलसी जयंती पर आयोजित एक कार्यक्रम में, तुलसी के साहित्य पर बोलने के लिए मुझे तैयार किया था। मैंने भी अच्छी तैयारी की थी, लेकिन जब बोलने खड़ा हुआ तो सब भूल गया। टीचर ने जेब से कागज निकालकर देख लेने का इशारा किया। मैंने कागज निकाले,

लेकिन सिर के ऊपर चल रहे पंखे ने उनको भी हवा में उड़ा दिया। सारे बच्चे खिलखिलाकर हँस दिए। टीचर ने उनको डाँटा, पर दुर्घटना तो घट चुकी थी। मैं किसी से नज़रें नहीं मिला पा रहा था। बहुत शर्मिंदा महसूस कर रहा था।

अंकल ने मुझे अपने पास बुलाया और कहा - ''तुम यहाँ मेरे पास बैठकर सुनाओ।''

''पूरी याद तो नहीं है ... पापा के एक मित्र की कविता है जो मुझे बहुत अच्छी लगती है ... लेकिन मुझे कविता पढ़ने का कोई अनुभव नहीं है ... मेरी गलती को क्षमा करेंगे।'' - मैंने बड़ी हिम्मत से बोलना शुरु किया।

मस्त बड़े थे कच्ची उम्र की कमियों वाले दिन।
मैगी, बेरी, बिरचुन, तेंदू, अमियों वाले दिन।
आते हैं याद बहुत लँगड़ी, कंचों वाले दिन।
छुपा-छुपाई, लूडो और पतंगों वाले दिन।
खट्टी-मीठी चूरन की वो गोली वाले दिन।
धमाचौकड़ी, मस्ती, हँसी-ठिठोली वाले दिन।
दीपावली, दशहरा, राखी, होली वाले दिन।
स्कूलों की छुट्टी के, आँख-मिचोली वाले दिन।
लोटपोट, नंदन, छूटी हैं नावें कागज की,
माचिस की डिबियों में बंद तितलियों वाले दिन।
हुए किशोर तो लगे सताने कड़की वाले दिन।
भोले मन को लगे रिझाने खिड़की वाले दिन।
आँखें मिलते ही शरमाते थे हम भी वह भी।
दिल में कुछ-कुछ होता था, पर समझे नहीं कभी।
एक दिन संग चलने का जब था प्रस्ताव मिला।
मन-मयूर था लगा नाचने, तन था खिला-खिला।
इक आइस्क्रीम खिलाकर दिल जीत लिया उसका,
कितने सहज थे चवन्नी-अठन्नियों वाले दिन।

सबने वाह-वाह कर मेरा उत्साहवर्द्धन किया। अंकल ने मुझे गले से लगा लिया।

अगले दिन लंच पर चित्रा से भेंट हुई। चित्रा बड़े ही रहस्यमय अंदाज में मुझे देख रही थी। मैं दूसरी ओर देखने लगा। पहली बार मुझे उससे डर महसूस

हो रहा था। लंच टाइम भी खतम होने का नाम नहीं ले रहा था ... उफ्फ! कितना लम्बा खिंचता जा रहा था लंच का समय। चालीस मिनट, एक युग जैसे लग रहे थे। मौन चित्रा ने ही तोड़ा - ''कुछ बोलोगे नहीं!''

''कल अंकल के यहाँ गोष्ठी थी ... बहुत बड़े-बड़े साहित्यकार आए थे ... तीन घंटे कैसे निकल गए पता ही नहीं चला'' - मैंने सप्रयास मन की उथल-पुथल को छुपाते हुए कहा।

''कल रक्षाबंधन भी तो था।'' - उसने मुझे छेड़ने के लहजे में कहा।

''हाँ ... पता है मुझे ... मानसी से स्काइप पर राखी भी बँधवाई थी ... उसे बहुत मिस किया ... बार-बार उसकी याद आती रही।''

''अच्छा ... और कुछ'' - मुझे लगा वह जबरन मुझसे कुछ कहलवाना चाह रही है ... शायद वही, जिससे मैं बचना चाह रहा हूँ।

''तुम बताओ ... तुमने क्या किया?'' - मैंने हिम्मत करके कह ही दिया।

''मैंने भी तो तुम्हारे साथ जाकर राखी खरीदी थी ... पर तुम कैसा बंदर सरीखा मुँह बनाए घूम रहे थे।'' - चित्रा मुझे घूरते हुए बोली - ''मेरे हाथ में राखी देखकर कैसी फट रही थी तुम्हारी ... बताओ?''

'अरे ये क्या बोल रही है ... गाली, वो भी इतने बिंदास तरीके से ... मैंने तो कभी गालियाँ नहीं निकाली मुँह से और यह कितनी बेतकल्लुफी से ... कब देख ली इसने मेरी बंदर जैसी सूरत ... बहुत होशियार है ... कहाँ-कहाँ नज़र रखती है ये ... कितनी आँखें हैं इसके पास ...' पल भर में कितना कुछ सोच लिया था मैंने।

''तुमने जवाब नहीं दिया ... क्या मैंने फट्टू गलत कहा।'' - वह इतनी जोर से हँसी कि मैं सहम गया, फिर आवाज़ धीमे करते हुए बोली - ''सॉरी यार ... पर तुम जानना नहीं चाहते कि उस राखी का मैंने क्या किया ... जानना है तो फिर पूछते क्यूँ नहीं!''

''बताओ मेरी माँ!'' - मेरे मुँह से निकला। शायद मैं तब तक निश्चिंत हो चुका था, इसलिए दिमाग में छाई हुई तनाव की धुंध छँटनी शुरु हो गई थी।

''तुमने निशिथ व्यास को देखा है न ... वही जो हमारे अपार्टमेंट में ग्राउंड फ्लोर पर रहता है। हरामखोर रोज मुझे घूर कर देखता था, और जोर-जोर से गाने गाता था ... हम तुम एक कमरे में बंद हों ... आती क्या खंडाला ... बेबी को वेस पसंद है। परसों तो हद्द ही हो गई ... जब मैं कोचिंग के लिए आ रही थी तो जनाब गा रहे थे ... जुम्मा चुम्मा दे दे, चुम्मा दे दे'' - बोलते-बोलते चित्रा उत्तेजित होने लगी - ''मैंने उसे ऐसी सीख दी कि अगले जन्म में भी याद रखेगा।''

''तो तुमने उसको राखी बाँधी ... पर कैसे?'' - मेरी उत्सुकता बढ़ गई थी।

''तो क्या तुम्हारे लिए ली थी पगलोट'' - चित्रा ने एक बार फिर अजीब तरीके से देखा, पर इस बार मुझे डर नहीं लगा ... कुछ अलग ही तरह का अहसास हुआ। वह आगे बोली - ''मैं थाली में राखी और मिठाई लेकर सुबह-सुबह ही उसके घर पहुँच गई ... उसकी माँ से कहा, ''निशिथ मेरा भाई की तरह ध्यान रखता है। मेरा कोई भाई नहीं है ... हर रक्षाबंधन पर मुझे बहुत बुरा लगता है ... पर भगवान ने मेरी प्रार्थना सुन ली और निशिथ को मिला दिया ... आज मैं बहुत खुश हूँ निशिथ जैसे भाई को पाकर ... पता है फिर क्या हुआ? मेरी जबर्दस्त एक्टिंग देखकर माँ तो लट्टू हो गई मुझ पर ... और निशिथ का चेहरा देखने लायक था ... कुछ कहते नहीं बन रहा था स्साले से।''

''तुम तो सचमुच कलाकार हो।''

''हाँ ... हूँ ... दीपिका पादुकोण से भी बड़ी वाली ... पर तुम्हारे लिए नहीं ... तुम तो भोंदू हो भोंदू ... मेरे हाथ में राखी क्या देखी, मुझसे बात करना ही छोड़ दिया ... कल पूरे दिन बात नहीं की ... अच्छा आगे सुन ... निशिथ की माँ ने उसे बुलाया और मेरे सामने बैठाकर राखी बँधवाई ... मेरे पैर छुलवाए और एक सूट मुझे गिफ्ट में दिया ... तुरंत समझ में आ गया बच्चू को, मुझसे भिड़ने की जुर्रत का नतीजा ... आज न घूरने की हिम्मत हुई और न कोई गाना-वाना गाने की।''

''तुम भी कमाल करती हो ... अब तो वह भाई है तुम्हारा।''

''माय फुट ...'' चित्रा का यह रूप मुझे बहुत अच्छा लगा। यह जानकर मुझे तसल्ली मिली थी कि उसके मन में मेरे लिए वही भावनाएँ हैं, जो मेरे मन में थीं ... पर क्या नाम है इन भावनाओं का? यह प्रश्न अब भी अनुत्तरित था, यथावत था। पर मन प्रफुल्लित था ... साँसें सुगन्धित लगने लगी थीं ... अन्दर पराग सा झरता महसूस होने लगा था ... जैसे बसंत आने को हो।

04

शनिवार का दिन था। इस दिन कोचिंग का समय दोपहर दो बजे तक ही रहता था और एक घंटे का टेस्ट भी उसी दिन होता था। मैं चित्रा को छोड़ते हुए घर लौटा तो सीढ़ियों पर संकेत टकरा गया। उसके हाथ में ट्रैवल बैग था। मैंने पूछा - ''कहीं जा रहे हो भैया?''

''हाँ, अंकल आए हैं ... दो दिन बाद लौटूँगा'' - कहता हुआ संकेत तेजी से सीढ़ियाँ उतर गया। मैं उसे जाते देखता रहा। कोई खास बात नहीं थी पर मुझे उसका जाना सामान्य नहीं लग रहा था ... पिछले महीने भी वह अंकल से मिलने गया था। मुझे खुद पर कोफ्त होने लगती है कि कैसी-कैसी बेकार की बातें सोचने बैठ जाता हूँ और उनका मंथन शुरु कर देता हूँ। ''अरे संकेत अंकल से मिलने गया है तो इसमें गलत क्या है ... मैं क्यों सोच रहा हूँ इस बारे में। मुझे खुद को होशियार समझने का फोबिया होता जा रहा है।''

मैं कमरे में आ गया। शनिवार को अपरान्ह का सदुपयोग मैं कमरे को व्यवस्थित करने में किया करता था। पूरे सप्ताह तो मैं इस ओर ध्यान ही नहीं देता था ... कपड़े, किताबें, मॉर्कर, हाईलाइटर, पेंसिलें, कॉपियाँ, पेन ड्राइव और नोट्स इधर-उधर बिखरे पड़े रहते थे। मैं कपड़े इकट्ठे कर वॉशिंग मशीन में डालने जा रहा था कि मेरी नज़र संकेत के कमरे के अंदर चली गई। वह दरवाजा बंद करके नहीं गया था। उसका कमरा भी मेरी ही तरह अस्त-व्यस्त था। मैं अंदर चला गया ... टेबल पर डेबोनेयर मैगज़ीन के दो-तीन पुराने इशू रखे हुए थे। कवर पेज पर किसी अमेरिकी एक्ट्रेस की उत्तेजक तस्वीर थी। मैंने हाथ में मैगज़ीन लेकर जैसे ही उसके पेज पलटने शुरु किए, मेरे हाथ काँपने लगे और मैगजीन हाथ से फिसलकर नीचे गिर गई। मैंने जल्दी से मैगज़ीन उठाकर टेबल पर रखी और बाहर आ गया। मेरे पैर काँप रहे थे और दिल तेजी से धड़के जा रहा था। मैं कमरे में आकर धम्म से बिस्तर पर बैठ गया। मेरी नज़रों के सामने संकेत का चेहरा घूम रहा था ... पिछले तीन महीनों में देखी उसकी एक्टिविटीज, उसके तौर तरीके, उसका व्यवहार सब मुझसे कुछ कहना चाह रहे थे जैसे ... पर क्या? समझ नहीं पा रहा था। शायद मेरी उमर भी अभी बहुत सी बातों को समझने की नहीं हुई थी।

यह तीसरा साल था, संकेत का आंटी के यहाँ रहते हुए। वह बारहवीं पास करके आया था कोचिंग लेने तथा दो बार मेंस का एग्जाम दे चुका था, किन्तु एक बार भी पास नहीं हो पाया था। बड़े ही बेफ़िक्र किस्म का लड़का था वह ... पढ़ाई को लेकर ज़रा भी सीरियस नहीं लगता था। कोचिंग के बाद रूम पर शायद ही कभी पढ़ते देखा था। जब भी टकराता मोबाइल पर किसी न किसी से बतियाता मिलता। बहुत सज-सँवर कर रहता, तरह-तरह की खुशबू वाले परफ्यूम यूज करता ... हमेशा फैशनेबल और ब्रांडेड कपड़ों में दिखाई देता ... तरह-तरह के गैज़ेट उसके पास थे। ''बड़े बाप का बेटा है ... मौज करने यहाँ आया है।'' ... उसको लेकर मेरे मन में यह धारणा बन चुकी थी। दो बार प्रारम्भिक चरण में ही असफल हो जाने के बावजूद उसके मन में कोई अफसोस नहीं था, कम से कम मुझे ऐसा ही लगता था। हमारे बीच में यदा-कदा बात होती भी तो उसकी बातें मेरी समझ में नहीं आती। वह हमेशा गैज़ेट्स के बारे में बातें करता, उनके फीचर्स के बारे में बताते हुए गर्व अनुभव करता। उसके पास जो गैज़ेट्स थे उनमें से अधिकांश के बारे में मैंने पहले कभी नहीं सुना था। मुझे उसकी बातों से बोरियत होने लगती। हमारे नेचर में जमीन-आसमान का अन्तर था। मैं जिस काम के लिये कोटा आया था, उसी पर फ़ोकस रहना चाहता था। मैं तो हफ्तों तक फेसबुक पर अपना स्टेटस भी अपडेट नहीं करता था। मुझे हमेशा इस बात का अहसास बना रहता कि इन सबके लिए तो पूरा जीवन पड़ा है ... फिलहाल मुझे पढ़ाई और केवल पढ़ाई पर ही फोकस करना है ... पापा के सपनों को साकार करना मेरा पहला कर्तव्य है। माँ ने मुझसे जो वादे लिए हैं, उन पर खरा उतरना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

मुझे तीन माह से ज्यादा हो गए थे कोटा आए, लेकिन कहीं घूमने नहीं गया था। क्लास में बहुत से बच्चे कोटा के विभिन्न स्थानों की चर्चा करते रहते थे ... कभी सिटी मॉल की, कभी सेंटर स्क्वायर माल की, कभी सेवेन वंडर्स पार्क की तो कभी हैंगिंग रॉक फॉउन्टेन की। सुनकर मेरी भी इच्छा होती ... मुझे तो किसी मॉल में जाने का कभी मौका ही नहीं मिला था। चित्रा एक बार सेंटर स्क्वायर मॉल और एक बार गराडिया महादेव मंदिर होकर आई थी। बहुत तारीफ की थी उसने दोनों स्थानों की। बारिश में भीगने पर अक्सर मुझे सर्दी हो जाया करती थी अतएव मैं बारिश में कहीं आना-जाना अवॉयड ही करता था। अब बारिश के मौसम की विदाई हो चुकी थी ... गणेश चतुर्थी की धूम थी इन दिनों।

चित्रा का फोन आया ... रविवार की शाम को पहले सिटी मॉल चलने और फिर गणेश उत्सव की झाँकियाँ देखने के लिए।

रविवार को सबसे पहले हम लोग सिटी मॉल गए। वहाँ से चित्रा ने अपने लिए पीटी शूज लिए और फिर हम दोनों ने फूड जोन में बैठकर एक प्लेट हक्का नूडल्स शेयर की। तत्पश्चात् गणेश उत्सव के पंडालों में स्थापित मूर्तियाँ और झाकियाँ देखने में ऐसा खोए कि हमें लौटने में नौ बज गए। चित्रा को उसके फ्लैट में छोड़कर मैं जल्दी-जल्दी चला जा रहा था। रास्ते में विनय दीवान मिल गया। वह संकेत के साथ ही सेंचुरी क्लासेज में कोचिंग ले रहा था। मैं आंटी के घर पर एक बार उससे मिल चुका था, जब वह संकेत से मिलने आया था। उस दिन उसके हाथ में बहुत सारे नोट्स और किताबें थी। वह और संकेत बहुत देर तक रूम बंद करके पढ़ते रहे थे। मुझे यह देखकर अत्यंत खुशी हुई थी कि संकेत पढ़ाई को लेकर सीरियस हो रहा है।

विनय मेरे साथ चलने लगा। वह बोला - ''मैं पास ही रहता हूँ, मेहरोत्रा नर्सिंग होम से दो मकान छोड़कर ... मेरे रूम पर चलो आज मेरा पार्टनर भी नहीं है।''

''नहीं भैया ... बहुत देर हो गई है, आंटी इंतजार कर रही हैं ... एक बार फोन भी कर चुकी हैं'' - मैंने कहा।

''उनको फोन कर दो कि आज नहीं आओगे, मेरे साथ ही रुक जाना।''

विनय का यह प्रस्ताव मुझे बहुत अटपटा लगा। मेरी विनय से बमुश्किल दो मिनट की मुलाकात थी। वह आंटी से झूठ बोलने की शिक्षा देते हुए अपने साथ रुकने पर जोर दे रहा था। उसका रूममैट भी आज नहीं है इसको जोर देकर बताने के पीछे क्या आशय है उसका? मैं इस रहस्यमय वाक्य के सूत्र की तलाश में था, जो पकड़ में नहीं आ रहा था। मुझे चुप देखकर उसने फिर से कहना शुरु कर दिया - ''सोचते क्या हो चलो न, आंटी से बोल देना एक दोस्त के यहाँ रुक गया हूँ।''

''नहीं भैया ... मैं उनसे झूठ नहीं बोलता ... और फिर किसलिए झूठ बोलूँ ... मुझे कहीं नहीं जाना ... सीधे घर जाऊँगा'' - मैंने जब दृढ़तापूर्वक कहा तो विनय के स्वर में भी विनम्रता झलकने लगी - ''अरे तुम नाराज हो रहे हो ... मैं तो ऐसे ही कह रहा था ... अकेला हूँ आज तो सोचा तुमसे कम्पनी मिल जाएगी। नहीं चलना चाहते तो कोई बात नहीं ... मैं तुम्हें आंटी के घर पर छोड़ता हुआ चला जाऊँगा।''

हम दोनों चलते रहे। हमारे बीच कोई बात नहीं हुई इसके बाद। घर के सामने पहुँचकर मैंने कहा - ''थैंक्स भैया ... गुड नाइट''

''ओके'' - उसने मिलाने के लिए हाथ बढ़ाया और फिर मेरे बढ़े हुए हाथ को पकड़कर चूम लिया - ''गुडनाइट डियर''

फिर एक नया अनुभव मिला था ... ज़िंदगी का नया सबक। आखिर विनय के मन में क्या था, यह तो नहीं पता, लेकिन उसके हाव-भाव, बात कहने और देखने का ढंग मुझे नॉर्मल नहीं लगा था। वैसे भी अनजान लोगों से घनिष्ठता बढ़ाने में मेरी कभी भी रुचि नहीं रही है। माँ ने भी अनेकों बार समझाया था कि किसी को बिना जाने उस पर विश्वास कदापि नहीं करना। सही कहती हैं माँ ... किसी को जानना इतना आसान है भी नहीं? कितनी-कितनी पर्तों में चेहरे छुपाए मिलते हैं लोग ... बाहर कुछ, अंदर कुछ। तीन माह से संकेत के साथ रह रहा हूँ पर आजतक नहीं समझ पाया उसे ... मैं ही क्या आंटी भी ठीक से नहीं जान पाई हैं। शुरु-शुरु में तो वह उसे पढ़ने के लिए कहती भी थीं ... समय से आने-जाने के लिए भी टोकती थीं, लेकिन बाद में उन्होंने उससे कुछ भी कहना बंद कर दिया। मैंने एक बार आंटी से कहा भी था कि जब संकेत आपकी बात नहीं मानता तो आप रूम खाली करने को क्यूँ नहीं कह देतीं। तब आंटी ने जो उत्तर दिया उसने मेरे मन में आंटी के प्रति श्रद्धा को और प्रगाढ़ कर दिया ... सच्चे प्रेम और वात्सल्य की प्रतिमूर्ति हैं आंटी। उन्होंने कहा था - ''कह तो दूँ बेटा, पर डरती हूँ ... कच्ची बुद्धि है अभी ... कहीं कुछ गड़बड़ कर बैठे तो मैं अपने को कैसे माफ कर पाऊँगी ... दो साल में उसने शुरुआती परीक्षा भी पास नहीं की है। मुझे पता है कि वह माँ-बाप के पैसे बर्बाद कर रहा है ... इस एग्जाम को वह कभी भी पास नहीं कर सकता ... पर मैं उसको असफलता का अहसास कराना नहीं चाहती ... असफलता का अहसास होते ही व्यक्ति टूटने लगता है और ज़िंदगी उसके लिए बोझिल होने लगती है।''

बात लोगों को समझने की चल रही थी, संकेत का उदाहरण तो बस यूँ ही याद आ गया। क्लास में तो कितनी तरह की बातें दबी जुबान में सुनी हैं। ऋषि भण्डारी सर और वनिता दुबे को लेकर कई बच्चे बड़ी आपत्तिजनक बातें करते रहते हैं। वनिता को मैंने देखा नहीं है। वह सीनियर क्लास में है। भण्डारी

सर हम लोगों को केमिस्ट्री पढ़ाते हैं और उनकी गिनती कोटा के अच्छे केमिस्ट्री टीचर्स में होती है, लेकिन जब उनके बारे में अमर्यादित बातें सुनता हूँ तो विश्वास नहीं होता। एक बार जब चित्रा ने वही बातें दोहराईं तो अविश्वास नहीं कर सका। चित्रा ने उनकी निगाहों से कुछ अलग तरह के रसायनों को रिसता महसूस किया था। इतना तो मुझे समझ में आने लगा था कि लड़कियों की इन्द्रियाँ लड़कों की अपेक्षा कुछ ज्यादा ही जाग्रत होती हैं ... आँखें भी उनके पास दो से अधिक होती हैं ... तभी तो सात-सात पर्तों के पीछे छुपी चीजें भी दिख जाती हैं। जो चीजें चित्रा को सहजता से दिख जाती हैं, मैं उन्हें नहीं देख पाता। चित्रा इसीलिए मुझे बुद्धू भी कहती रहती है और टांट भी करती रहती है कि दिन की रोशनी में भी मैं जिन चीजों को ठीक से नहीं देख पाता उनको रात में कैसे देख पाऊँगा। चित्रा सब स्थितियों पर बड़ी पैनी नज़र रखती है और अक्सर उसकी कही बात सही निकलती है। उसका कहना है कि तुम देखना एक दिन भण्डारी सर और देवयानी पाण्डा के बीच की केमिस्ट्री कुछ न कुछ गुल ज़रूर खिलाएगी। देवयानी हमारी क्लास की चंचल, लेकिन पढ़ाकू लड़की है। उसको लेकर चित्रा का यह ऑब्जरवेशन मुझे नहीं जमा। पर मैं उसको क्या कहता, चुप ही रहा, क्योंकि मुझे लगता था कि भण्डारी सर यदि वनिता दुबे को प्यार करते हैं, तो देवयानी के साथ वह ऐसा कैसे कर सकते हैं?

इसी तरह अश्विन तुली और नंदिनी पटेल के बारे में भी बहुत कानाफूसी सुनी थी। मुझे दोनों ही बहुत सीधे-सादे और अपने काम से काम रखने वाले बच्चे लगते थे। नंदिनी राजकोट से कोटा कोचिंग के लिए आई थी जबकि अश्विन अम्बाला कैंट से। मैंने भी उन्हें साथ में आते-जाते देखा था, पर इससे क्या किसी को मनचाही बातें बनाने का लायसेंस मिल जाता है ... मैं भी तो चित्रा के साथ ही अधिकांश समय रहता हूँ ... उससे बहुत पक्कीवाली दोस्ती है ... उसे पसन्द भी करता हूँ ... तो क्या हमारे बारे में भी कल कोई कुछ भी बोलने लगेगा। क्या कहूँ लोगों की सोच को? इक्कीसवीं सदी में भी लड़की और लड़के को साथ देखकर पंद्रहवीं सदी में पहुँच जाते हैं लोग ... पर चित्रा का यह कहना भी महत्वपूर्ण है कि जहाँ आग होती है वहीं से धुआँ उठता है। वह मुझसे कुछ नहीं छुपाती ... सब बातें शेयर करती है। बहुत बेबाक लड़की है ... कई बार उसकी बातें मुझे हतप्रभ कर जाती हैं और मैं लड़का होकर भी शर्म से नज़रें नहीं मिला पाता, बेमतलब इधर-उधर ताकने लगता हूँ।

दो दिन बाद चित्रा ने जो बताया उसने तो मेरे होश ही उड़ा दिए। वह वाशरूम में अश्विन और नंदिनी को आलिंगनबद्ध होकर एक-दूसरे को किस करते हुए देखकर आई थी। दिखने में इतने भोले-भाले और इतनी बेशर्मी ... मैं सोचकर ही सिहर गया था। कितने बदनुमा दाग हैं, उजले चेहरों के पीछे? मैं स्वयं को भाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे आंटी की छत्रछाया और चित्रा जैसी दोस्त यहाँ मिली वरना मैं भी दुनिया के इन अँधेरे पक्षों को नहीं देख पाता ... और न ही इन्हें देखने की समझ विकसित हो पाती। हो सकता था, ये अँधेरे मुझे भी अपनी गिरफ्त में लेने लगते ...

05

मैं अगले दिन के टेस्ट की तैयारी कर रहा था कि मानसी का फोन आ गया - ''भैया एक खुशखबरी है ... मैंने डिस्ट्रिक्ट लेबल पेंटिंग कॉम्पटिशन में सेकंड प्राइज जीता है ... पूरे ग्यारह सौ रुपए, सर्टीफिकेट और ट्रॉफी।''

''ये तो बहुत अच्छा है छुटकी ... पर इसकी बधाई तो मुझे मिलनी चाहिए'' - मैंने मानसी को छेड़ते हुए कहा।

''हे ... हे ... हे, आपको बधाई क्यूँ भैया ... आपको चाहिए तो ट्रॉफी दे दूँगी, पैसे तो मैं ही रखूँगी ... वहाँ पर वैसे भी कोई चांस नहीं है आपके पास ट्रॉफी जीतने का ... माँ ने सब बंद करवा रखा है आपका ... न स्केचिंग, न बास्केटबाल'' - मानसी ने नहले पर दहला मारने की कोशिश की।

''कॉम्पटिशन तो तूने मेरे ही कलर बॉक्स से जीता है न ... मैं यहाँ नहीं आता तो तुझे मेरे कलर छूने को भी नहीं मिलते ... तो बोल बधाई मुझे मिलनी चाहिए कि नहीं।''

''ले लो बधाई भैया ... पर परेशान मत हो ... मैं तो स्टेज पर बोलकर भी आई हूँ कि ये पुरस्कार मेरे भाई को समर्पित है ... आपकी बहुत याद आई अपना पहला पुरस्कार लेते हुए।''

''अरे अब परेशान मैं हूँ या तू है पगली ... ये तो शुरुआत है ... देखना अब तो लाइन लग जाएगी ... तू गाती भी बहुत अच्छा है और अब पेंटिंग में भी कमाल करने लगी है ... तू बहुत तरक्की करे ... नाम कमाए।''

''पर आपके बिना मजा नहीं आया ... खुशी भी फीकी सी लगती रही'' - मानसी का गला आर्द्र होने लगा तो उसने होशियारी दिखाई - ''लो भैया मम्मी

से बात कर लो।"

सच में लड़कियाँ बहुत जल्दी बड़ी हो जाती हैं ... कल तक बात-बात में झगड़ा करने वाली मानसी मेरे घर से बाहर आते ही कितनी समझदार और जिम्मेदार हो गई है। माँ को कितनी मुश्किल होती थी उसको सुबह-सुबह स्कूल के लिए जगाने में ... अब तो माँ बताती हैं ... खुद ही उठकर समय से पहले तैयार हो जाती है। वीक-एंड पर किचेन के कामों में भी हाथ बँटा देती है ... पापा के लिए कभी-कभी शाम की चाय भी बनाती है। मैं भी देखना चाहता हूँ छुटकी को बड़े होते ... एक परम आलसी को दौड़-भाग करते हुए ... घर के कामों में हाथ बँटाते हुए ... पर मेरी किस्मत में नहीं है यह सब। कोटा आकर कितनी चीजें पीछे छूटती जा रही हैं ... मेरा बचपन, भाईयों जैसे यार-दोस्त, मम्मी-पापा की छत्रछाया, दादी का दुलार और छुटकी की धींगामस्ती। मैं रहता वहाँ तो छुटकी भी समय से पहले बड़ी नहीं होती। हालांकि मैं भी बड़ा हो गया हूँ ... या कहूँ, समय से पहले बड़ा होना पड़ गया। अब हर काम खुद करता हूँ ... हर समय चौकस, चौकन्ना रहना पड़ता है, हर घड़ी खुद को परखना पड़ता है, अपनी हर एक्टिविटी पर खुद ही नज़र रखनी पड़ती है कि कहीं कोई काम गलत तो नहीं कर रहा हूँ ... किसी भी बात को बोलने से पहले सोचता हूँ कि सही है कि नहीं ... मन में हमेशा एक दबाव बना रहता है ... हर समय प्रेशर-सिचुएशन, टेस्ट में अच्छा करना है, समय के भीतर सारे प्रश्न हल करने हैं, सबके सपनों में रंग भरने की जिम्मेदारी कंधों पर है, खुद को हर हाल में सिद्ध करना है, टूटना नहीं है, हर परिस्थिति में सीधा खड़ा रहना है। सबकुछ तो सीख गया हूँ इस उमर में ... वहाँ रहता तो क्या कभी इन स्थितियों से पाला पड़ता और बड़ा हो पाता? इसके बावजूद मेरी और छुटकी की कोई तुलना नहीं है ... वह चार साल छोटी है मुझसे और मम्मी-पापा के साथ रहते हुए बड़ी हो गई है। वह ज्यादा समझदार है ... मुझे तो परिस्थितियों ने समझदारी सिखाई है।

संकेत अंकल से मिलकर लौट आया था, लेकिन उससे मुलाकात नहीं हो पाई थी। वह कोचिंग भी नहीं जा रहा था। दो दिन से अपने कमरे में ही था। मैंने घड़ी की ओर देखा ... बारह बजकर पैंतीस मिनट हो रहे थे। मैंने अपना टेबल लैम्प बंद किया और सोने के लिए कुर्सी से उठ गया। देखा जग में पानी खतम हो गया है। रात में जागने पर दो बार पानी पीने की आदत है मुझे। मैं जग लेकर नीचे जा रहा था कि संकेत के कमरे की लाइट जलती देखी। दरवाजा

भी पूरी तरह बंद नहीं था। लौटकर मैंने सहज उत्सुकतावश उसके कमरे में झाँककर देखा ... वह पलंग पर बैठा अपनी कमर पर कोई क्रीम लगा रहा था। मैं वहीं रुककर देखने लगा। कमर पर रक्तिम धारियाँ उभरी हुईं थी ... दूर से बिल्ली के पंजों सरीखे निशान लगे। लाइट बंद करने के लिए वह पलटा तो मैं तेजी से अपने कमरे में आ गया। कुछ देर उसके बारे में सोचता रहा कि ये निशान कैसे बने होंगे, बिल्लियाँ तो आजकल दिखाई ही नहीं देती ... सोचते-सोचते कब नींद आ गई, पता नहीं चला।

शनिवार को हुए टेस्ट में मैंने दो स्थानों का सुधार किया और सातवें स्थान पर आया। चित्रा चौथे स्थान पर रही। धीरे-धीरे मेरी रैंकिंग में काफी सुधार आ गया था ... सबसे बड़ी बात यह थी कि डिफिकल्ट लेवल के प्रश्नों में भी मुझे नम्बर मिल रहे थे ... विषयवार समझ स्पष्ट हो रही थी। पिछले साढ़े तीन माह से अरविंद पाराशर पहले तीन में आ रहा था, लेकिन पिछले दो टेस्ट्स में वह क्रमशः इक्कीसवें और फिर सत्ताइसवें स्थान पर पहुँच गया था। उसके परफॉरमेंस को लेकर जहाँ टीचर अचंभित थे वहीं मेरे कुछ साथी चटखारे लेकर एक अलग ही कहानी सुना रहे थे। वह बॉयज हॉस्टल में रहने वाले कुछ सीनियर लड़कों की बुरी संगत में पड़ गया था। कुछ बच्चों ने उसे कई बार उन लड़कों के साथ सिगरेट पीते देखा था। उज्जवल सेठी ने एक दिन उसे उन्हीं लड़कों के साथ घूमर बियर बार के अंदर जाते देखा था। अरविंद बीकानेर से वहाँ आया था ... पिता सेल्स टैक्स में ऑफिसर हैं ... अकेला लड़का है ... खर्च के लिए भी मनचाहे पैसे मिल जाते हैं।

जब भी मैं ऐसा कोई समाचार सुनता तो व्यथित हो जाता ... कारण तलाशने में जुट जाता। अधिकांशतः मेरी समझ में कुछ नहीं आता, पर कभी-कभी धुँधलके से कुछ तस्वीरें आकार लेने लगतीं। अरविंद के मामले में भी मुझे उससे ज्यादा गलती उसके पैरेंट्स की लगती है। क्यों उससे नहीं पूछते कि इतने पैसों की क्या ज़रूरत है? चार माह बाद भी मेरी माँ रोज मुझसे पूरे दिन का फीडबैक लेती हैं ... तो क्या उसकी माँ नहीं लेती? यदि नहीं लेती तो कितनी बड़ी गलती कर रही हैं वह ... अरविंद को जब हॉस्टल में रखा है तो कभी आकर देखना भी चाहिए किस तरह रह रहा है ... यहाँ के हॉस्टल किसी स्कूल-कॉलेज के पारंपरिक हॉस्टल तो हैं नहीं ... जूनियर, सीनियर, इंजीनियरिंग एसपायरेंट के साथ ही मेडिकल और आर्कीटेक्ट में जाने के इच्छुक लड़के भी इन हॉस्टल्स में

एक साथ रहते हैं। एक चौकीदार के भरोसे पूरे हॉस्टल की व्यवस्था चलती है, जिसकी बात को अधिकांश बच्चे सुनते भी नहीं हैं। चौकीदार भी कुछ पैसों की लालच में लड़कों को सिगरेट और बियर, हॉस्टल में ही उपलब्ध करा देता है। अब बच्चे बिगड़ें नहीं तो क्या हो।

अरविंद के बारे में जानकर बहुत पीड़ा पहुँची थी मुझे। कुछ बच्चे खुश भी थे कि उनका एक कॉम्पेटिटर दौड़ में पिछड़ गया है। एक होशियार और प्रतिभाशाली बच्चे का इस तरह गलत रास्ते पर चले जाना दुखदायी था। यदि अरविंद ने स्वयं को नहीं संभाला तो ज़िंदगी हाथ से फिसलती चली जाएगी और रह जाएगा केवल पछतावा, समूचे परिवार के लिए। फुर्सत में अक्सर मैं संकेत के बारे में भी सोचता ... जब से रात में उसको देखा था, बहुत रहस्यमय लगने लगा था वह ... कुछ न कुछ गड़बड़ ज़रूर है उसके साथ। दो-दो बार बुरी तरह असफल हो जाने के बाद भी उसे जरा भी अफसोस नहीं है ... कोई सीख नहीं ली है उसने अपनी असफलता से ... अभी भी अपने में मस्त रहता है ... बिल्कुल भी गंभीर नहीं है पढ़ाई को लेकर। पैसों के साथ ही अपना बहुमूल्य समय भी नष्ट कर रहा है। यह आभास तो उसे हो ही चुका होगा कि ये एग्जाम उसके लिए नहीं है ... उसे किसी और फील्ड में ट्राई करना चाहिए।

मैं हमेशा की तरह उस दिन भी कोचिंग से लौटकर अंकल के पास बैठ गया। अंकल की कुछ कविताएँ वागर्थ में छपकर आईं थी, वह उन्हें ही देख रहे थे। मुझे देखा तो मैगजीन एक तरफ रखकर बोले - ''बच्चे, कुछ परेशान लग रहे हो ... कोई बात हो तो निसंकोच कहो।''

''कुछ विशेष नहीं है अंकल ... एक बात है, जिसे मैं आपको बताना चाहता हूँ ... शायद आप कुछ मार्गदर्शन कर सकें'' - मैंने उन्हें अरविंद की कहानी सुना दी।

''गंभीर बात है, पर यह अच्छी बात है कि तुम अपने प्रतिद्वंद्वी को लेकर भी अच्छा सोचते हो ... क्या एक बार तुम उसको मुझसे मिलवा सकते हो? शायद उसे कुछ समझा सकूँ।'' अंकल बोले - ''जो बच्चे सदा आगे रहते हैं, उन पर हमेशा अपनी पोजिशन बरकरार रखने का भारी दवाब रहता है ... अरविंद भी संभवतः इसी दवाब में बिखर रहा है। स्कूल की बात अलग है ... यह तो एक कॉम्पटिशन है ... जिसमें न केवल आगे निकलने की होड़ है अपितु गला-काट प्रतिस्पर्द्धा है ... हर पल आपको परीक्षा देनी है अपने कौशल की,

अपनी काबिलियत की, अपनी दक्षता की, अपनी तैयारी की। आपको न केवल परीक्षा देनी है बल्कि प्रूव भी करना है कि आप श्रेष्ठ हैं, लेकिन ज़िंदगी भी जब इम्तहान लेने लगे तो चुनौती चौतरफा हो जाती है। अरविंद के साथ भी यही हो रहा है ... वह ज़िंदगी के इम्तहान में असफल हो रहा है और इस असफलता की दवा उसने नशे में खोज ली है। अभी देर नहीं हुई है सब ठीक हो जाएगा ... यदि मेरी बात नहीं समझ पाया तो डॉक्टर संचेती के पास ले चलेंगे उसे . .. काउंसलिंग के लिए।''

अंकल की बातों से मुझे बहुत शांति मिली। अरविंद से मेरी कोई खास दोस्ती नहीं थी फिर भी मैं उसे लेकर परेशान था ... क्यूँ हूँ, मुझे स्वयं आश्चर्य था, इस बात पर।

अंकल के पास से मैं अपने कमरे में आ गया। मुझे संकेत से मिलने की भी इच्छा हो रही थी शायद आज कोई 'सुधारक' मेरे अंदर प्रवेश कर गया था। मैं कपड़े चेंज कर संकेत के रूम में आ गया - ''भैया क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?''

''आ जाओ भाई ... तुम्हें पूछने की ज़रूरत है क्या? अदरवाइज मत लेना, मेरा रूम बहुत बिखरा पड़ा है ... लापरवाह हूँ न।''

उस समय संकेत पलंग पर अधलेटा सा मोबाइल पर कोई वीडियो देख रहा था। मुझे देखकर वीडियो बंद कर दिया और पलंग पर ही मुझे बैठा लिया।

''भैया आप ठीक तो हैं ... तीन-चार दिनों से आप कमरे से बाहर ही नहीं निकले ... आंटी भी आपके बारे में पूछ रही थीं ... अरे ये आपके होंठों को क्या हुआ? लग रहा है जैसे किसी ने काटा हो'' - मैंने एक साँस में बहुत कुछ कह डाला।

''थैंक्स भाई ... दो दिन से थोड़ा बुखार सा था, अब मैं बिल्कुल ठीक हूँ ... होंठों पर उदयपुर में बर्र ने काट लिया था'' - संकेत ने कुछ सकुचाते हुए उत्तर दिया - ''तुम्हारी पढ़ाई कैसी चल रही है?''

''ठीक ही चल रही है ... भैया, आपको भी इस बार एग्जाम क्रैक करके दिखाना है।''

''भाई मुझे समझ में आ गया है कि इस एग्जाम में पास होना मेरे बस की बात नहीं है ... मुझसे नहीं हो पाएगा ... कोशिश ज़रूर करूँगा, फिर इसके बाद मैं अंकल के साथ बिजनेस करूँगा ... इसलिए उनके साथ जाकर बिजनेस के ट्रिक्स सीख रहा हूँ।''

''ये तो बहुत अच्छा है ... पर ये काम तो आप घर पर रहकर भी कर सकते हैं ... अंकल का बिजनेस क्या है?''

''उनकी स्पोर्ट्स मैन्युफैक्चरिंग की एक यूनिट है जालंधर में और बिजनेस पूरे राजस्थान में फैला है। मैं तो बेगुसराय से यहाँ आया हूँ, वहाँ रहकर तो अंकल से सम्पर्क करना भी मुश्किल हो जाएगा, इसलिए पटना में रहने का प्लान है।''

इसके बाद संकेत ने बहुत कुछ बताया। वह पढ़ने में कभी अच्छा नहीं रहा ... उसके बहुत से दोस्त यहाँ आ रहे थे तो वह भी ज़िद करके आ गया था। कुछ दोस्त जी-एडवांस क्रेक करके कानपुर, खड़गपुर या गौहाटी चले गए थे कुछ आल इंडिया एंट्रेंस टेस्ट में सेलेक्ट हो गये और कुछ स्टेट पी.ई.टी. से इंजीनियरिंग में चले गये। वह अकेला बच गया तथा अंकल के कारण एक साल के लिए यहाँ रुक गया। अंकल का नाम मिल्कियत सिंह खत्री है ... वह उसके रियल अंकल नहीं हैं। वह उनसे एक दोस्त के साथ मिला था और उसके दोस्त की मुलाकात भी अंकल से किसी सोशल साइट पर हुई थी। अंकल उसे बहुत लकी मानते हैं। जब वह पहली बार उनके साथ बिजनेस टूर पर गया था, तब अंकल को बहुत बड़ा ऑर्डर मिला था, तब से अंकल उसे हमेशा अपने साथ ले जाते हैं। हर बड़ा ऑर्डर मिलने पर उसे कीमती उपहार देते हैं। ''मेरे पास जितने भी गैजेट्स तुम देख रहे हो वे सब उनके द्वारा ही दिए गए हैं'' - अंत में संकेत ने कहा था।

मुझे उसकी कहानी फिल्मों से भी ज्यादा फिल्मी लगी हालाँकि कुछ प्रश्नों के उत्तर मिल गए थे तो कुछ उत्तर उलझन में भी डाल गए थे। पर अब मैं अपने मन को संकेत नाम की पहेली में और उलझाना नहीं चाहता था। कल रात से ठीक से पढ़ भी नहीं पा रहा था। एकाग्रता के लिए चित्रा के बताए आसन भी मन को बाँध पाने में असफल रहे थे। मन भी कितना चंचल होता है ... थर्मोडायनामिक्स को समझने की कोशिश करो तो मन स्टेटिक हो चित्रा के पास ले जाता है ... ऑप्टिक्स का चैप्टर खोलो तो छुटकी का बिम्ब उभर आता है और ट्रिगनोमेट्री पढ़ने बैठो तो अरविंद और संकेत की घुमावदार कहानियों में समझदारी का कोण तलाशने लगता हूँ। अब ये सब नहीं चलेगा ... मन ने कहा ... मुझे निर्लिप्त रहना सीखना ही होगा। चित्रा ने तो आज ही उससे कहा था - ''क्या पड़ी है तुझे अरविंद के बारे में इतना सोचने की ... तू समझता है कि अरविंद तेरी बात ध्यान से सुनेगा और सुधर जाएगा।'' चित्रा हर परिस्थिति में

सामान्य रहती है, कभी भावावेश में बहते नहीं देखा उसे। समय को बेहतर तरीके से मैनेज करती है और उसका अधिकतम सदुपयोग करती है। नियमित योगाभ्यास करती है। उसने मुझे भी तो सिखाया है एकाग्र चित्त होना ... पर मैंने कभी नियमित रूप से उन आसनों को किया ही नहीं ... पर आज से शुरु ... नियमित रूप से प्राणायाम भी और त्राटक भी।

06

जब मैं कोटा आया था, तब माँ ने बहुत सारे इंस्ट्रक्शन्स दिये थे ... क्या करना है और क्या-क्या नहीं करना है। दो साल तक कोई फिल्म नहीं देखनी है ... न ही क्रिकेट मैच देखने में समय व्यर्थ करना है ... आई.पी.एल. और बिग बॉस को तो कतई फॉलो नहीं करना है ... बास्केटबाल को हाथ नहीं लगाना है और स्केचिंग को तो भूल ही जाना है। सुबह-शाम दूध ज़रूर पीना है और खाने में लापरवाही बिल्कुल नहीं करनी है। आइस्क्रीम से बचकर रहना है सर्दी हो जाती है ... दोस्त सोच-समझकर बनाना ... अनजान लोगों से दूर ही रहना ... बेमतलब घूमना-फिरना नहीं ... टीवी आधा घंटे देख सकते हो, केवल तारक मेहता का उल्टा चश्मा और कुछ नहीं ... कपिल शर्मा का शो तो बिल्कुल नहीं। फेसबुक और व्हाट्सएप भी तभी जब ज़रूरत हो। बाप रे बाप ... इतने इंस्ट्रक्शन्स एक साथ। माँ बोलती जा रहीं थी और मैं चुपचाप सुनता रहा था। मुझे बुरा नहीं लगा ... माँ का कंसर्न देखकर अच्छा ही लगा था। पहली बार उनसे दूर हो रहा था, तो बहुत सारी चिंताएँ उनके मन में थी ... डर भी रहा होगा, जिसे वह व्यक्त करना नहीं चाहती थी। मैंने माँ को उनकी सारी बातें मानने के लिए आश्वस्त किया था। बास्केटबाल और स्केचिंग दोनों ही मुझे बहुत प्रिय थे। बास्केटबाल की स्कूल-टीम में भी मैं था और स्केचिंग में संभाग लेवल की स्पर्द्धाओं में दो बार सिल्वर मेडल जीत चुका था।

माँ से लगभग रोज ही मेरी बात होती थी ... मैं उन्हें बिना पूछे ही दिन भर की सारी बातें बता देता था ... केवल चित्रा से दोस्ती की बात उन्हें बताने की हिम्मत नहीं कर पाया था। माँ से जितने भी वादे किए थे उनको अब तक पूरी जिम्मेदारी के साथ निभाया था ... व्हाट्सएप पर केवल छुटकी, आबिद, नवीन और चित्रा से ही चैट की थी, वह भी पन्द्रह बीस मिनट से ज्यादा कभी नहीं। फेसबुक पर चार माह में चार बार भी स्टेटस अपडेट नहीं किया था ..

. प्रोफाइल पिक्चर भी केवल एक बार चेंज की थी। जब कभी फेसबुक को देखने का मन भी करता तो केवल नोटिफिकेशन देखकर मन बहला लेता या खास दोस्तों को बर्थडे विश कर बंद कर देता। कोटा बास्केटबाल का बड़ा सेंटर है ये मैंने सुन रखा था। श्रीराम रेयांस की टीम से देश के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी खेला करते हैं। अंकल ने जब मेरे शौक पूछे थे तो उन्हें बताया था बास्केटबाल के बारे में। एक बार उनके साथ टाइगर्स अकादमी में एक मैच देखने भी गया था, तब अंकल ने वहाँ भारत के सबसे मशहूर खिलाड़ी खुशीराम से मिलवाया था। उन्होंने मुझे नियमित रूप से आने के लिए कहा था और मैंने झूठ ही उनसे हाँ कह दिया था। जब याद करता हूँ तो झूठ बोलने पर दुख होता है। उनसे लिए ऑटोग्राफ मेरी धरोहर हैं।

चित्रा को गाने का शौक है। वह अपने साथ हारमोनियम लेकर आई है और यदा-कदा रियाज भी करती है। कहती है जब भी पढ़ते हुए कुछ समझ में नहीं आता तो वह गाना गाकर रिफ्रेश फील करती है। इसके बाद दिमाग चलने ही नहीं, दौड़ने लगता है। चित्रा ने कई बार उसे भी गाकर सुनाया है ... बहुत अच्छा गाती है, मुझे अलका याज्ञनिक की झलक दिखती है उसमें। मेरे लिए खासतौर से एक गीत चुनकर रखा है उसने। जब भी अनुरोध करो, उसे ही गुनगुनाकर सुनाती है - ''पापा कहते हैं, बड़ा नाम करेगा'' और मैं सुनकर आनंद विभोर हो जाता हूँ।

चित्रा अक्सर ही स्केचिंग करने के लिये मुझसे कहती है। उसकी दलील होती है कि टेंसन के समय अपने शौक में खो जाना मन को बहुत शांति देता है ... शरीर की सारी थकावट दूर हो जाती है। पर माँ से किए गए वादे को याद कर सहम जाता हूँ। उस दिन मुझे अपना वादा तोड़ना पड़ा। चित्रा ने टेस्ट में पहला स्थान पाया था और उसने खुशी के इस अवसर पर अपना स्केच बनाने की रिक्वेस्ट की थी। मैं टाल नहीं सका। कोटा में वह मेरी सबसे अच्छी दोस्त तो थी ही, मेरी मेंटर भी थी और मेरा मनोबल भी। मैंने स्केच बनाकर उसे प्रिजेंट किया ... वह खुशी से उछल पड़ी। उसे खुश देखकर मुझे भी आत्मिक खुशी मिली, पर माँ से किए गए वादे को तोड़ने का अपराध बोध भी मन में रेंगता रहा।

शाम को माँ से बात करते हुए मैंने उन्हें बता दिया - ''माँ, मैं अपने वादे पर कायम नहीं रह सका ... आज मैंने स्केचिंग की ... आपको सुनकर दुख

हो रहा होगा ... आप मुझे डाँट सकती हैं, नाराज हो सकती हैं ... पर प्लीज़ ... प्लीज़ मुझे माफ ज़रूर कर दीजिए।''

मेरी उम्मीद के विपरीत माँ का स्वर अत्यंत कोमल और संयत रहा - ''कैसी बात कर रहे हो बेटू ... तुम अपने प्रॉमिस को लेकर इतने संजीदा रहोगे ये मैंने सोचा ही नहीं था ... मेरा ये मतलब कतई नहीं था कि तुम अपने सारे शौक भूल जाओ। मैं तो केवल इतना चाहती थी कि तुम इनमें खोकर अपने उद्देश्य से न भटको ... मैंने तुम्हें हमेशा भूख-प्यास तक भूलकर स्केचिंग में खोया देखा है ... मेरे बच्चे, माफी तुम्हें नहीं मुझे चाहिए, जो मैं तुम्हें समझे बगैर इतने बंधनों में बाँधकर चली आई। तुम कभी-कभार स्केचिंग भी कर सकते हो, थोड़ा-बहुत क्रिकेट भी देख सकते हो और एकाध फिल्म देखने भी जा सकते हो'' - मुझे लगा बोलते-बोलते माँ भावुक होती जा रही हैं और उनका गला रुँधने लगा है। उन्होंने सोचा होगा, उनकी आवाज़ में घुल रहे आँसू मुझे दिखने लगे इससे पहले ही विषय परिवर्तन हो जाए तो बेहतर होगा। उन्होंने मानसी को आवाज़ दी और फोन मानसी के हाथों में दे दिया - ''लो छुटकी से बात कर लो''

''किसका स्केच बनाया है भैया ... मुझे व्हाट्सएप करो, देखूँ तो कैसा बना है?''

''भेजता हूँ छुटकी ... पहले बता सब कैसे हैं?''

छुटकी से बात कर मैंने उसे स्केच व्हाट्सएप कर दिया। कुछ सेकंड में ही उसका मैसेज आ गया - ''भैया कौन है ये ... वैसे जो भी है दिखने में कुछ खास तो नहीं है फिर आपने इसका स्केच क्यूँ बनाया'' - मैसेज के साथ अटैच, उदास चेहरे वाली दो इमोजी मुझे मुँह चिढ़ा रहीं थी।

''बहुत सयानी हो गई है तू ... कोई उल्टा-सीधा मतलब मत निकाल ... जो मन में आया बना दिया।''

चोर की दाढ़ी में तिनके वाली कहावत चरितार्थ हो रही थी मुझ पर, अतएव मैंने उससे पिंड छुड़ाते हुए मैसेज किया - ''छुटकी कल मेरा टेस्ट है, उसकी तैयारी करनी है ... तू भी अपना होम वर्क कर ले।''

''ठीक है भैया ... गुड नाइट ... वैसे तुम्हारी पसंद इतनी भी बुरी नहीं है।'' - छुटकी का मैसेज और साथ में जीभ निकालकर आँख मारती हुई इमोजी आई।

मैसेज देखकर मेरे होंठों पर हँसी थिरकने लगी। मन के किसी कोने से आवाज़ आई - थैंक्स छुटकी।

अगले दिन कोचिंग इंस्टिट्यूट का माहौल बहुत गमगीन था। सीनियर क्लास की लड़की, गीता कंवर का एक वीडियो वायरल हो रहा था। वह बीस अन्य लड़कियों के साथ एक गर्ल्स हॉस्टल में रह रही थी, इनमें से चार लड़कियाँ तो उसके साथ कोचिंग ले रही थी ... दो हमारे कोचिंग इंस्टिट्यूट में थीं, शेष दूसरे इंस्टिट्यूट में पढ़ रही थी। गीता को कोचिंग में आने पर ही इस वीडियो के बारे में पता चला था। उसके साथी कुछ लड़कों ने उसे इस बारे में बताया था। किसी ने नहाते समय उसका वीडियो बनाया था। गीता तभी से रोए जा रही थी। दूसरी लड़कियाँ भी डरी हुईं थी कि किसी ने उनका भी वीडियो न बना लिया हो।

चित्रा बहुत गुस्से में थी। मेरे पास शब्द नहीं थे उसको शांत करने के लिए। उसे इतने गुस्से में कभी नहीं देखा था। उसका गुस्सा जायज भी था। एक भोली-भाली लड़की को सारी दुनिया के सामने नंगा कर दिया गया था। मेरी तो वीडियो देखने की हिम्मत ही नहीं हुई ... विवरण सुन-सुनकर ही मेरी हालत खराब हो रही थी। ज़िंदगी भी क्या-क्या गुल खिलाती है ... कैसी-कैसी परीक्षाएँ लेती है, जिसके बारे में कल्पना कर पाना भी मुश्किल है। भेड़ियों से कहाँ-कहाँ बचा जाए? अभी तक तो सड़कों पर, सुनसान जगहों पर ही स्वयं को संभालना पड़ता था ... अब तो बंद कमरों के अंदर भी पहुँच गए हैं वे ... सर्वथा नितान्त पल भी अपने नहीं रहे। कितने पतित होते जा रहे हैं लोग। दुनिया दूसरे ग्रहों पर जीवन खोजने में व्यस्त है, और हम अपने ग्रह को जीने के लायक नहीं छोड़ रहे।

अगले दो दिनों तक गीता कोचिंग क्लास में नहीं आई। तीसरे दिन खबर मिली कि उसने सुसाइड कर लिया। ज्ञात हुआ कि यमुना नगर से भाई के आने की खबर सुनकर बहुत अधिक परेशान हो गई थी ... रात में कॉमन रूम में जाकर उसने फाँसी लगा ली, कब किया उसने यह, किसी को पता ही नहीं चला।

गीता की मौत की खबर ने तूफान ला दिया। बच्चों और नागरिकों का गुस्सा बॉइलिंग पॉइंट पर पहुँच गया। पुलिस की निष्क्रियता ने आग में घी का काम किया। प्रथम दृष्टया हॉस्टल मालिक और केयर टेकर दोषी थे पर सत्ताधारी दल से घनिष्ठता के चलते पुलिस उन पर हाथ डालने से बच रही थी।

भाई के साथ गीता की लाश को विदा करने ग्लोबल के साथ ही कुछ दूसरे कोचिंग इंस्टिट्यूट्स, कॉलेज और स्कूलों के बच्चे भी स्टेशन पहुँचे थे। सैकड़ों बच्चों की आँखों में आँसू थे। गीता की रूम पार्टनर साक्षी मिश्रा ने एक तरह से

सबको धिक्कारते हुए लड़कियों से आवाहन किया - "बहिनों, चार दिन बाद दशहरा है, यदि रावण को मारने समय पर राम नहीं आएँगे तो क्या सीताएँ हाथ-पर-हाथ धरे बैठी रहेंगी ... हमें ही रावण को मारना होगा ... वरना हममें से हर कोई शिकार बनने के लिए तैयार रहे।"

इसके बाद वही हुआ जो उन दरिंदों के साथ होना चाहिए था। बच्चों की भीड़ ने हॉस्टल मालिक लखन लाल पाण्डे और केयर टेकर मीरा बाई को घसीट-घसीट कर मारा। पुलिस को भी सक्रिय होना पड़ा। वह उन दोनों को गिरफ्तार कर ले गई। अगले दिन दो अन्य लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया, जिन पर वीडियो वायरल करने का संदेह था। कोर्ट से भी किसी को राहत नहीं मिली।

बाद में जो कहानी सामने आई वह बड़ी ही घृणित और चारित्रिक पतन की डराने वाली कहानी थी। सत्तर वर्षीय जीवन लाल विधुर था, जिसकी पत्नी बीस साल पहले गुजर गई थी। घर की देखभाल के लिए आठ-दस साल पहले वह अपने गाँव से बाल विधवा तीस साल की मीरा बाई को लेकर आया था। उसी साल जीवन लाल ने अपने तिमंजले घर के ऊपरी हिस्से में गर्ल्स हॉस्टल खोला था और आठ वाशरूम्स में से एक में स्पाई कैमरा भी फिट कराया था। रात में वह और मीरा बाई मिलकर कम्प्यूटर पर रिकॉर्ड हुई क्लिप्स देखते और अपनी काम-पिपासा शांत करते। बदकिस्मती से कम्प्यूटर खराब हो गया, जिसे सुधारने के लिए मीरा बाई ने अपने परिचित मणि लूनावत को दिया था। मणि ने ही कम्प्यूटर में रिकॉर्ड किए गए ग्यारह वीडियोज में से एक अपने किसी मित्र को रौब गाँठने के लिए भेजा था, जो उसने वायरल कर दिया। अब चारों सलाखों के पीछे थे।

बहुत दिनों तक चित्रा इस घटना को लेकर परेशान रही। मैं भी रहा। उसे सबसे ज्यादा दुख इस बात को लेकर था कि एक महिला ही एक लड़की के दर्द को नहीं समझ सकी। एक लड़की की नंगी देह देखकर पुरुष का कामातुर हो जाना तो समझ में आता है पर एक स्त्री भी आनंदित महसूस करे ... यह बहुत ही घिनौनी मानसिकता है ... धिक्कार है ... शर्म से जमीन में गड़ जाने की इच्छा होती है। कामेच्छा के वशीभूत होकर वह कामांधता की सारी सीमाएँ लाँघ गई थी ... उसने सम्पूर्ण नारी समाज को लज्जित किया था। चित्रा को लगता था कि गीता ने भी आत्महत्या करके ठीक कदम नहीं उठाया। उसकी तो कोई गलती नहीं थी

... उसे डटकर परिस्थिति का सामना करना चाहिए था। मुझे भी चित्रा की बात सही लगती थी पर पहली बार मैं उससे पूरी तरह सहमत नहीं था। मेरा सोचना था कि गीता ने दो दिनों तक लड़ने की कोशिश की थी पर हम सबने ही उसे अकेला छोड़ दिया था ... कोई उसके बगल में ताकत के साथ खड़ा नज़र नहीं आया। जब वह यह दुनिया छोड़कर चली गई तभी लोगों का गुस्सा फूटा। यदि यही गुस्सा पहले फूट पड़ा होता तो शायद उसे जीने के लिए ताकत मिल गई होती, संबल मिल गया होता ... गीता के मन में विश्वास जगता कि सच्चाई की हार नहीं हुई है ... उसकी पवित्रता में लोगों को अब भी विश्वास है। पर हम लोग जागे भी तब, जब अमावस की रात चाँद को लील चुकी थी।

एक दिन तो चित्रा ने मुझे झकझोर ही दिया था, जब उसने पूछा था - ''हम लड़कियाँ ही क्यों हर बार मरती हैं ... यदि किसी लड़के का नंगे नहाते हुए वीडियो वायरल हुआ होता तो क्या वह लड़का भी मरने की सोचता।''

मुझे कोई उत्तर नहीं सूझा। इस बारे में मैंने सोचा भी नहीं था। वही बोली - ''नहीं मरता ... मैं मुँह माँगी शर्त लगाकर कह सकती हूँ कि वह मरने की सोचता भी नहीं ... वह खुद ही दस और दोस्तों के पास अपनी नंगी फोटो भेजकर पूछता, देखो मैं कैसा लग रहा हूँ।''

सही कह रही है चित्रा। लड़कों के मामले में कोई इन बातों पर ध्यान भी नहीं देता। मैं तो स्वयं ही अक्सर लड़कों को मात्र सैंडो अंडरवियर पहिने हुए घूमते देखता रहता हूँ। एक बार जब मैं रमन से मिलने क्लासिक बॉयज हॉस्टल गया था, तो वहाँ तीन-चार लड़कों को केवल अंडरगारमेंट में बैठे देखा था। बहाना था, बेहद गरमी है। लड़कियों के लिए भी गरमी उतनी ही रहती है ... पर कभी किसी लड़की को इस हाल में नहीं देखा। ये हमारे समाज का पुरुषवादी रवैया है ... विडम्बना भी है और हमारे समय का नंगा सच भी। पुरुषों पर कोई बंधन नहीं, लड़कियों और औरतों पर तमाम पाबंदियाँ हैं। न कोई समाज शास्त्री, न कोई धार्मिक संत और न ही हमारी शिक्षण व्यवस्था कुछ करना चाहती है ऐसे मसलों पर ... और तो और उसे सोचने तक की फुर्सत नहीं है। कोई घटना घटती है ... क्षणिक रूप से लोगों को उत्तेजित करती है, थोड़ा-बहुत विरोध प्रदर्शन हो जाता है, फिर सबकुछ पहले जैसा चलने लगता है ... कहीं कुछ नहीं बदलता।

07

दीपावली पर घर जाने के लिए हमें दस दिन का अवकाश मिला था। जहाँ घर जाने की खुशी थी वहीं चित्रा से बिछुड़ने का दुख भी मन में था। रास्ते भर मैं इन्हीं दो ध्रुवों के बीच झूलता हुआ मानसिक सामंजस्य बैठाने में व्यस्त रहा। एक ओर छुटकी, दादी, माँ, पापा, आबिद, नवीन, आर्ट-टीचर बसंत निर्गुणकर सर, बास्केटबाल-कोच सुरिंदर सिंह सर जैसे लोग स्मृति में बार-बार उभर रहे थे कि इतने दिनों बाद इनसे मिलकर कितना आनंद आएगा वहीं दूसरी ओर चित्रा की भी याद मन से नहीं जा रही थी ... उसकी बेबाक हँसी, निष्कपट व्यवहार, परिपक्व सोच, निश्छल सलाह और आत्मविश्वास से भरा व्यक्तित्व सबकुछ आँखों में तैरने लगता। बीते पाँच महीनों के दौरान घटित कितनी ही घटनाओं के चित्र उपस्थित हो जाते और चित्रा के नए रूप के दर्शन कराते ... हर बार मुझे कुछ न कुछ नया सीखने को मिलता ... ज़िंदगी के नए वातायन खुलते हुए लगते।

मैं सोच रहा था कि छुटकी से अचानक जिज्जी बाई में ढल जाने वाली मानसी मुझे देखकर किस तरह रिएक्ट करेगी? क्या वह अब भी मुझे जीभ निकालकर चिढ़ाएगी और मैं भी उसकी चोटी खींचकर सता पाऊँगा। अरे! ये भी कोई बात हुई ... मैं अब बच्चा थोड़े ही रहा जो बच्चों सरीखी हरकतें करूँगा ... मैं छुटकी को गले लगाकर बहुत सारा प्यार करूँगा, साथ में उसकी पसन्द के खेल ... चपेटा, मामुलिया आदि जो मैंने कभी नहीं खेले हैं, इस बार उसके साथ खेलूँगा। दस दिन तक केवल और केवल खुशियाँ ही दूँगा उसे। उसके लिए चित्रा से सलाह करके स्थानीय मसूरिया-मलमल का एक सूट-पीस भी लिया है ... रक्षाबंधन की गिफ्ट। देखकर खुश हो जाएगी ... मैं उसकी इस छवि को मोबाइल में कैद कर लूँगा। सूट देखते ही वह समझ जाएगी किसकी पसंद का है? वह जानती है कि मैंने तो आजतक अपने लिए बनियान तक नहीं खरीदी है फिर इतना सुंदर सूट-पीस। वह चित्रा के बारे में पूछेगी तो क्या कहूँगा उससे ... बता दूँगा, दोस्त है मेरी ... इसमें झूठ क्या है ... दोस्त ही तो है चित्रा।

दादी मुझे देखते ही ज़रूर उलाहना देंगी ... ठीक से खाता-पीता नहीं है ... कितना दुबला हो गया है। फिर पापा के लिए कहने लगेंगी किसी की सुनता ही नहीं ... इतनी दूर भेज दिया और अब देखो आधा रह गया है। उनकी गोदी

में बैठकर कितना आत्मिक सुख मिलता है बता नहीं सकता। उनका सारा प्यार, सारी दुआएँ, सारे आशीष, लगता है मेरे लिए ही हैं। मानसी को भी वह इतना ही प्यार करती हैं ... अभी से उसकी शादी के सपने देखते हुए रो पड़ती हैं। उनके प्यार के विस्तार की कोई सीमा नहीं है ... अनंत आकाश से भी बड़ा है उनका प्यार। ममता का पूरा समंदर उनके अंदर हिलोरें लेता है।

मम्मी के लिए क्या कहूँ ... वह तो मुझे देखने के लिए बहुत व्याकुल होंगी ... माथा चूमेंगी, गालों पर हाथ फेरेंगी, पीठ सहलाएँगी। एकाध दिन जबरन अपने साथ भी सुलाएँगी और बहुत सारी बातें करेंगी फिर भी मन नहीं भरेगा। जितने दिन रहूँगा, बहुत व्यस्त रहने वाली हैं वह। रोज नए-नए पकवान बनाएँगी ... इतना खिलाने की कोशिश में रहेंगी कि अगले छः माह के लिए तृप्त हो जाऊँ। मेरे जाने के दिन पास आते ही अकेले में रोएँगी। अच्छी एक्टर तो वह हैं नहीं, सो जब मैं पूछूँगा क्या हो गया तो कहेंगी कि आँख में कुछ चला गया है। इतनी भोली केवल माँ ही हो सकती है और कोई नहीं। सोचते-सोचते मेरी आँखें भी झिलमिल होने लगीं हैं ... और मैं सहयात्रियों से नज़रें बचाकर रुमाल से आँखें ढाँप लेता हूँ।

मैं पापा के पैर छूता हूँ तो पापा सिर पर हाथ फेरकर खुश रहो, बोलते हैं। ये उनके स्नेह करने का तरीका है। मुझे पता है उनके हृदय का सरोवर भी प्यार से लबालब भरा है, लेकिन मजाल क्या छलककर बाहर आ जाए। अब, जब मैं उनके सपनों को पूरा करने जी-जान से जुटा हूँ तो उनके भीतर का सरोवर उफनाना भी चाहता होगा तो भी वह उसे उफनाने नहीं देंगे। पिता शायद ऐसे ही होते हैं ... जिम्मेदारियों से लदे-फदे, शांत, गंभीर, सारी परेशानियों को अकेले झेलने वाले, हर झंझावात का दृढ़ता से मुकाबला करने वाले, कोमल पर निष्ठुर लगने वाले। अपने पापा को लेकर चित्रा भी यही सोचती है पर वह उनके गले लगकर उनके मन की बातें पढ़ लेती है। मैं इस विषय में भी कमजोर हूँ ... पर इस बार पापा से मैं बहुत सी बातें करना चाहता हूँ ... उनका बेटा उनके सपनों के लिए कृत संकल्पित है उन्हें आश्वस्त करना चाहता हूँ ... मैं अपनी जिम्मेदारी समझने लगा हूँ इसका विश्वास दिलाना चाहता हूँ। लव यू पापा ...

नवीन मेरा प्रिय दोस्त ... नर्सरी से दसवीं तक साथ में पढ़ा। वह भी इंजीनियर बनना चाहता था और हमने भोपाल या इंदौर में साथ में कोचिंग करने के बहुत सारे प्लान भी बनाए थे। उसके इनकम टैक्स वकील पिता चाहते थे कि

नवीन सी.ए. बने अतएव उसने ग्यारहवीं में कॉमर्स ले लिया। अब अपने पापा को सी.ए. बनकर दिखाना उसकी पहली प्राथमिकता है। उसे थिएटर का शौक है ... गुल दीदी के थिएटर-ग्रुप से वह चार साल से जुड़ा है। कई नाटकों में उसने भाग लिया है। जबलपुर की किसी नाट्य-संस्था ने उसे इस साल हरदौल नाटक में उसके अभिनय के लिए सम्मानित भी किया है। उसने इस कार्यक्रम के फोटो व्हाट्सएप पर मुझसे शेयर भी किए थे ... राजसी परिधान में सचमुच राजकुमार लग रहा था। दशहरे की छुट्टियों में वह इसी नाटक की प्रस्तुति के लिए टीकमगढ़, झाँसी और दतिया भी गया था। हर जगह अखबारों में उसकी तारीफ छपी थी। अपने प्रिय दोस्त से मिलने की तीव्र उत्कंठा है ... उसके नाटक का वीडियो देखना है ... उससे ट्रीट भी लेनी है ... कमिंग टू मीट यू नवीन, माई डियर।

मेरा दूसरा पक्का दोस्त है आबिद ... छठवीं क्लास से साथ में है। मेरी, नवीन और आबिद की तिकड़ी पूरे स्कूल में फेमस थी। मेरे कोटा जाते ही उसने भी धमाल मचाना शुरु कर दिया। स्कूल की क्रिकेट टीम का कप्तान है इस साल। पिछले दो वर्षों में स्कूली-क्रिकेट में अपने प्रदर्शन के आधार पर इस बार मध्य प्रदेश की अंडर-19 टीम की सेलेक्शन-ट्रायल हेतु बुलाया गया है उसे। भिलाई और इंदौर में आयोजित कोचिंग कैंप से दो-तीन दिन पूर्व ही लौटा है ... अमय खुरासिया और राजेश चौहान से बैटिंग और बॉलिंग के टिप्स लेकर। उसने एक मिनिएचर बैट पर मेरे लिए बहुत से खिलाड़ियों के ऑटोग्राफ भी लेकर रखे हैं। मैं आ रहा हूँ तुझसे मिलने मेरे दोस्त ... बिना पार्टी लिए नहीं मानूँगा ...

बसंत निर्गुणकर सर बहुत निराश होंगे जब मैं उनको स्केचिंग से दूर रहने के बारे में बताऊँगा। उनको मुझमें बहुत संभावनाएँ दिखती थी। वह अक्सर मुझसे कहते यदि तुम इसी लगन और मेहनत से काम करोगे तो एक दिन दुनिया तुमको हलदनकर, ओकाफ़ोर या इलिनार हंटर के बराबर सम्मान देगी। सच कहूँ तो इन कलाकारों के नाम मैंने उनसे ही सुने थे और मुझे इनके काम के बारे में जरा भी ज्ञान नहीं था ... पर सर बोलते थे तो ज़रूर ही दुनिया के कला-जगत में इनकी तूती बोलती होगी। जब भी मैं सोचता कि क्या सच में इनके स्तर का कलाकार मैं बन सकता हूँ तो लगता सर मुझे चने के झाड़ पर चढ़ा रहे हैं। यह उनके उत्साहवर्द्धन का तरीका है। स्केचिंग मेरा शौक है पर इसे कैरियर बनाने के बारे में मैंने कभी सोचा भी नहीं था। सर से मिलने तो ज़रूर जाऊँगा ... काम के प्रति समर्पण और लगन वाला भाव तो उन्हीं की देन है, यह मैं कैसे भूल सकता हूँ।

बास्केटबाल न खेल पाने का मुझे भी दुख है। इस खेल की तेजी, दमखम और लोच मुझे बहुत आकर्षित करती है। मैं मन को समझाता रहता हूँ ... दो साल की ही तो बात है ... एक बार आई.आई.टी. में सेलेक्शन हो गया तो फिर खेलने के लिए समय निकाल ही लूँगा। मैं खुशी राम से मिला था, यह सुनकर वह खुश होंगे। उन्होंने भी खुशी राम से कोचिंग ली थी। हमने कई बार उनके मुँह से खुशी राम के अद्‌भुत खेल कौशल के किस्से सुने थे। सुरिंदर सर से मिलने तो जाना ही है, अपना इनर्जी लेवल बनाए रखने की टिप्स भी लेना है उनसे। पचास साल की उम्र में भी वह तीस के लगते हैं।

मैं अभी रास्ते में ही हूँ ... चित्रा तो देवास पहुँच भी गई होगी। पर उसने फोन नहीं किया ... अपनों के बीच इतना खो गई कि मुझे भूल ही गई। जाते-जाते बोला भी था उसने कि पहुँचते ही फोन करूँगी। अरे! मैं भी क्या-क्या सोचने बैठ जाता हूँ ... कितना स्वार्थी हो जाता हूँ कभी-कभी ... उस चित्रा के बारे में गलत धारणा बना रहा हूँ ... उस पर अविश्वास कर रहा हूँ, जिसने मेरी ज़िंदगी में रंग भरे, दुर्गम राहों को आसान बनाया, खुद को पहचानना सिखाया, सोया आत्मविश्वास जगाया, चीजों को अनेक एंगल से समझने के गुर दिए। कमाल के हो यार समीर बाबू आप भी ... प्रश्न भी करते हो और उत्तर भी स्वयं दे लेते हो। खुद पर हँसने की इच्छा हुई पर सामने बैठी मोटी आंटी को देखकर हँसी अंदर ही घुटकर रह गई।

थोड़ी देर बाद मैंने ही चित्रा को फोन लगा लिया। उधर से आवाज़ आई - ''तो जनाब का मन नहीं लग रहा है ... बहुत बोरियत हो रही है बाबू।''

''मैंने तो केवल ये जानने के लिए फोन किया कि घर पहुँची कि नहीं .. . कोई परेशानी तो नहीं हुई।''

''अच्छा ... बहुत स्मार्ट हो गया मेरा ढब्बू जी ... यदि मैं कहूँगी कि परेशानी हुई तो क्या तुम ट्रेन से उतरकर देखने आ जाओगे!'' - और फिर वही बेलौस हँसी जो मुझे आनंद से भर देती है।

''तुम कहकर तो देखो आ जाऊँगा।''

''वाह ... हमीं से सीखकर हमीं पर वार ... क्या कहने इस नवेले शूरवीर के?''

कैसी-कैसी उपमाएँ देती है मुझे, ढब्बू और शूरवीर तो सर्वथा विरोधाभासी हैं ... पर मुझे बुरा नहीं लगता, बल्कि उससे घनिष्ठता का अहसास होता है।

कुछ देर हमारे बीच ऐसी ही बातें होती रहीं, पर उसकी मौसी व्यवधान बनकर बीच में आ गईं जो उसी समय इंदौर से मिलने आईं थी। बरबस फोन काटना पड़ा।

08

दस दिन कैसे बीत गए पता नहीं लगा। वापस कोटा लौट रहा हूँ तो फिर वही विचारों का सिलसिला थम नहीं रहा है। बहुत सारी बातें हैं, मित्रों के साथ बिताए पलों की आत्मीय स्मृतियाँ हैं, सर लोगों की शुभकामनाएँ हैं और घर वालों का आशीष तो है ही जो साथ में लेकर जा रहा हूँ। चित्रा को बताने के लिए भी बहुत कुछ है। उसे पता है मेरी और उसकी दोस्ती की बात घर में पता चल चुकी है। छुटकी ने तो चित्रा से तीन-चार बार बात भी की है ... जमने लगी है उसकी चित्रा से। उसे मेरी पसंद पर गर्व भी है। अकेले में मुझे छेड़ती भी है - ''भैया मैं सब समझती हूँ बहुत तेज दौड़ रहे हो आप।'' मैं उसकी चोटी खींचता हूँ - ''पगली, तू दोस्ती को क्या समझे ... अभी तक रत्ना के साथ चपेटे खेलती रहती है ... तू अपना दिमाग ज्यादा मत चलाया कर।'' वह मेरी समझ पर हँसती है कि उसे अभी तक बच्ची समझता हूँ। उलाहना सा देती प्रतीत होती है कि भैया को इतना भी समझ में नहीं आता कि मैं न तो अब तितलियों जैसी उड़ती-फिरती हूँ और न ही गौरैया जैसी फुदकती रहती हूँ, हिरणियों जैसी चंचल भी नहीं रही ... कितना आहिस्ता-आहिस्ता संभल-संभल कर चलती हूँ कि दादी भी सामने पड़ने पर दस बार बलैंया लेती हैं। बड़े होने के और कितने सबूत चाहिए ... बोलो समीर भैया।

रूप-चौदस के दिन जब दादी ने पहले की तरह मुझे सामने खड़ा करके मेरी नज़र उतारी थी - ''अज्जाझारे करई तुमरिया, रोग-जोग ले जाए दिवरिया'' और माँ ने माथे के दाईं ओर काजल की टिकली लगाते हुए कहा था कि तू तो पाँच माह में कितना बड़ा लगने लगा है ... मुझे तुरंत छुटकी पर संदेह हो गया कि उसने माँ के कान में कुछ न कुछ फूँका ज़रूर है। छुटकी ने मान भी लिया कि उसने चित्रा के बारे में माँ को बता दिया है - ''वह दोस्त है तो परेशान क्यूँ हो ... क्या वह नवीन और आबिद भैया से अलग तरह की दोस्त है?'' उसने प्रतिप्रश्न किया तो मैं यह सोचकर चुप रह गया कि यदि कुछ बोला तो पता नहीं ये आगे क्या अर्थ का अनर्थ कर बैठे। मुझे तसल्ली हुई कि उसने ऐसा कुछ माँ

को नहीं बताया था, जो उनके मन में शंका पैदा करे। वह तो केवल मुझे चिढ़ा रही थी। उसने माँ से इतना ही कहा था - ''भैया अपनी फ्रेंड से कुछ डाउट क्लीयर कर रहे थे तो मेरी भी उनकी फ्रेंड से बात हुई है ... बहुत इंटेलिजेंट है, फर्स्ट आती है हमेशा।'' इस बार छुटकी ने बड़े होने का पुख्ता सबूत दिया था। अब वह मेरी प्यारी छुटकी के साथ-साथ अच्छी फ्रेंड भी है।

चित्रा को लेकर सबसे ज्यादा मेरे दोस्तों ने मुझे छेड़ा था। नवीन ने उदास सा चेहरा बनाते हुए बहुत भोले अंदाज में कहा था - ''यार तू भी गया काम से ... अब मैं ही अकेला रह गया ... आबिद पर तो कितनी लड़कियाँ फिदा हैं, उसे भी नहीं मालूम ... मैदान पर लगाया गया एक स्क्वायर कट ही दसियों लड़कियों के दिल में हूँक उठा देता है।''

''अरे यार, तू भी गजब है ... क्या-क्या सोचता है!'' - मैंने कहा था।

''रहने दे भाई, इसकी तो बेमतलब ही अपनी सुलगाने की आदत पड़ गई है'' - आबिद बोला था - ''इसका कुछ नहीं हो सकता ... तुझे इसकी हरकतें बताऊँगा तो विश्वास नहीं होगा।''

''अरे बता न''

''हरदौल में इसकी भाभी बनी थी जो ... मंच पर तो उसके पैर छूता था और मंच के पीछे उससे चिपकने लगता था।''

''स्साले ...'' मैंने नवीन के पेट में इतनी जोर से चिकौटी काटी थी कि उसकी हल्की सी चीख ही निकल गई।

''बोल इसके आगे वाली भी बता दूँ'' - आबिद ने नवीन की ओर देखते हुए पूछा, फिर बिना उसके उत्तर का इंतजार किए कहने लगा - ''इसके डायरेक्टर ने इसे डाँटा भी था ... अभी मूँछ तक आई नहीं और इश्क के चक्कर में पड़ने लगे।''

बहुत दिनों बाद हम तीनों मिले थे तो फुल-मस्ती के मूड में थे। सबने खूब एन्जॉय किया ... खूब धमाल मचाया ... पाँच माह की पूरी कसर निकाली।

कोई स्टेशन आया था। चाय, गरमागरम पकौड़े की आवाज़ों ने मेरी विचार-श्रृंखला को भंग कर दिया। घड़ी देखी, दो बज रहे थे। भूख का अहसास होने लगा। माँ ने टिफिन लगाकर दिया था ... कुछ ज्यादा ही खा गया, शायद अवचेतन अवस्था में यह सोचते हुए कि अब माँ के हाथ का खाना चार माह बाद ही मिलेगा। उन्होंने मेरी पसंद की चीजें बनाकर टिफिन में रखी थी और मीठे में बालूसाई रखना भी नहीं भूली थीं।

खाना खाकर ऊपर वाली सीट पर आँखें बंद कर लेट गया, पर नींद नहीं आई। दिन में सोने की आदत भी नहीं है। फिर वही ख्याल, कुछ प्रश्न और उत्तर ... मूँछ और इश्क के बीच क्या संबंध है ... क्या प्रेम मूँछ वाले ही कर सकते हैं ... उत्तर तलाशने की कोशिश में हूँ जो वेक्टर एनालिसिस से भी ज्यादा कठिन लग रहा है इस समय ... इनऑर्गेनिक केमिस्ट्री के फार्मूलों से भी ज्यादा जटिल प्रतीत हो रहा है। आसान नहीं है प्रेम को परिभाषित कर पाना ... मन स्वीकार भी कर रहा था और परिभाषा तलाशने में व्यस्त भी था।

सही है चेहरे पर मूँछ न आए तो सब बच्चा ही समझते हैं। सीनियर क्लास का विपुल सोलंकी कितनी अजीब निगाहों से देखता है ... जब भी टकराता है तो चिकने कहकर ही सम्बोधित करता है। मुझे तो उसके सामने आते ही सिरहन होने लगती है ... एक अनजाना सा डर दिल में उतरने लगता है। उसके इरादे मुझे अच्छे नहीं लगते। सोचता हूँ तो विनय की झलक दिखती है उसमें। किसी हिंसक पशु सा उद्विग्न लगता है जो हिरणी के बच्चे को पकड़ने के लिए घात लगाकर बैठा हो और मात खा गया हो।

चित्रा ने एक बार उसके साथ बात करते देखा था मुझे, पूछ रही थी - क्या बोल रहा था। मैंने टालने की कोशिश की तो रूठ सी गई - ''ठीक है मत बता, आगे से कुछ नहीं पूछूँगी।''

''अरे, बताने लायक कुछ नहीं है तो क्या बताऊँ''

''मुझे सब पता है ये सोलंकी का बच्चा क्या चीज है ... तुम आँखें बंद कर रहते हो और मैं खोलकर ... सब दिखता है मुझे।''

मैं कुछ बोल नहीं सका। मेरा हाथ पकड़कर एक तरफ खींच ले गई, बोली - ''तू ऐसा ही गोल गपच्चू रहेगा तो देखना तेरे साथ भी एक दिन वही होकर रहेगा जो रीतेश के साथ हुआ था।''

''क्या साथ हुआ था रीतेश के साथ!'' मैंने चौंकते हुए चित्रा की ओर देखा था।

''रेप'' चित्रा ने किंचित नाराजगी से उत्तर दिया था।

सुनकर मैं काँप गया ... आश्चर्य से आँखे फाड़े उसे देखे चला जा रहा था और वह मुझे। मेरे पैर डगमगाने लगे थे, गला सूख रहा था ... लड़खड़ाकर

वहीं बैठ गया। रीतेश ने हमारे साथ ही एडमिशन लिया था, लेकिन वह दूसरे सेक्शन में था। पंद्रह दिनों बाद ही वह कोचिंग छोड़कर चला गया तो मुझे लगा था कि वह यहाँ के माहौल में स्वयं को एडजस्ट नहीं कर पा रहा है, इसलिए चला गया। पर चित्रा की बात तो अलग ही कहानी कह रही है। यह सच है कि रीतेश उसी बॉयज हॉस्टल में रह रहा था, जहाँ सोलंकी रहता है।

चित्रा भी बगल में बैठ गई और मेरी पीठ पर हाथ फेरने लगी। बैग से पानी की बोतल निकाली और अपने हाथ से ही मेरे मुँह में लगा दी। मैं थोड़ा सामान्य हुआ। बोली - ''माफ कर दे मुझे ... तेरी दोस्त हूँ, तेरे साथ कुछ गलत होते नहीं देख सकती ... तुझे वह चिकना कहकर बुलाता है और तू कुछ बोलता भी नहीं ... मतलब जानता है न इसका।''

''यहाँ आकर बहुत कुछ समझने लगा हूँ ... पर मैं क्या करूँ, कुछ सोच ही नहीं पाता ... कोई पंगा न हो, इसलिए चुप रह जाता हूँ।''

उसने मेरा हाथ अपने हाथ में ले लिया। सहलाते हुए बोली - ''मैं तेरे साथ हूँ हमेशा साथ दूँगी तेरा ... बस बच्चा बनकर मत रह ... शोले का वह डायलाग याद है न ... जो डर गया वह मर गया। हम ज़िंदा लोग हैं, तो हमें ज़िंदा दिखना भी चाहिए ... यह नहीं कि कोई मुर्दा समझकर हमारे साथ मनचाहा खेल खेले और हम कुछ कर ही न सकें ... तुझे पता है न इस उमर में लड़कियों से ज्यादा शोषण लड़कों का होता है और बेचारे किसी से कुछ कह भी नहीं पाते ... कहें भी कैसे?''

हम दोनों कुछ देर ऐसे ही बैठे रहे। चित्रा तब तक मेरा हाथ अपने हाथ में ही लिए रही। कुछ सोचकर उठते हुए बोली - ''चलो आइस्क्रीम खाते हैं और वहीं कुछ देर बैठकर बात करेंगे ... मैं मम्मी को बोल देती हूँ थोड़ी देर से आऊँगी ... तुम भी आंटी को फोन कर दो।''

मैं चुपचाप उसके साथ चलने लगा।

''समीर तुम ऐसे चुप रहोगे तो मैं स्वयं को गिल्टी फील करती रहूँगी .. . तुम्हें लगता है कि मैंने तुम्हारा दिल दुखाया है तो कान पकड़कर माफी माँगती हूँ'' - साथ में चलते-चलते चित्रा ने कहा।

''मैं खुद पर शर्मिंदा हूँ ... इन बातों को कभी समझने की कोशिश ही नहीं की मैंने ... किसी यार-दोस्त ने बताया भी नहीं ... यहाँ आकर कुछ-कुछ समझने लगा हूँ ... तस्वीर इतनी डरावनी हो सकती है पहली बार तुम्हारे मुँह से सुना ... मैं तुमसे नाराज नहीं हूँ ... तुमने तो मुझे सचेत किया है, एक वीभत्स सच से परिचित कराया है ... ये सब बातें जब तुम्हें पता हैं तो मैं क्यूँ नहीं समझ सका इन्हें।'' - मेरी आवाज़ में अभी तक कंपन था ... मन से डर पूरी तरह निकला नहीं था।

''इसमें तुम्हारी गलती नहीं है ... पढ़ने वाले लड़के अक्सर पढ़ाई की धुन में इन बातों पर ध्यान नहीं देते। इस उमर में शारीरिक परिवर्तन सभी में होते हैं ... लड़कों में भी और लड़कियों में भी। लड़कियों में दिखाई पड़ने लगते हैं, लड़के केवल महसूस करते हैं। लड़कियों को माँ या बड़ी बहिन के रूप में इन परिवर्तनों को बताने वाले उपलब्ध रहते हैं ... स्कूल में क्लास टीचर भी समझाती हैं, लेकिन लड़के आपस में बात करके ही सीखते हैं। कुछ को ये अवसर भी नहीं मिल पाता। हमारे संस्कार ही कुछ ऐसे हैं कि माँ ये बातें अपने बेटों से शेयर करने में झिझकती हैं और लड़के भी नहीं पूछ पाते। मेरी माँ मेरी बहुत अच्छी फ्रेंड है ... हम सब बातें करते हैं ... मैंने तुम्हारे बारे में कुछ नहीं छुपाया माँ से ... निशिथ की हरकतों के बारे में भी उनको बता चुकी थी, यहाँ तक कि राखी बाँधने वाली बात भी उनकी सहमति लेकर ही की थी .. लेकिन किसी लड़के के लिए माँ को सब बातें बताना आसान नहीं है। मुझे पता है तुमने कभी अपनी माँ से मेरे बारे में बात नहीं की होगी ... बोलो, सच कह रही हूँ या झूठ है ये!''

मैं हतप्रभ था, चित्रा की बेबाकी और समझदारी पर। कितना कुछ जानती है, कितनी सधी हुई व्याख्या की है उसने ... कहीं भी गलत नहीं है वह। मैं तो उसके आस-पास भी नहीं हूँ दुनियादारी की बातों में। मुझे शुरु से ही यह आभास था कि चित्रा कोई सामान्य लड़की नहीं है। वह अपनी भावनाएँ दिल में छुपाकर रखने में विश्वास नहीं करती। वह जिससे दोस्ती करती है तो उसे बखूबी निभाती है ... मित्रता का सही मतलब मैंने उसी से सीखा है ... न दुराव, न छिपाव . .. पूरी निष्ठा और समर्पण ... चित्रा के लिए यही माने हैं दोस्ती के। आज मैं उसका दूसरा ही रूप देख रहा था, एक विश्वसनीय गुरु का, अभिभावक का, मार्गदर्शक का और मोटिवेटर का।

आइस्क्रीम पार्लर आ गया था। चित्रा ने संडे ऑर्डर की। हमने एक ही गिलास में एक ही चम्मच से आइस्क्रीम खाई। इस आइस्क्रीम का स्वाद सबसे अलग था, जिसे मैं ज़िंदगी भर नहीं भुला पाऊँगा ... इस आइस्क्रीम में ब्राउनी,

हॉट फ़ज और कारमल सॉस के साथ ज़िंदगी के ऐसे सबक गुँथे हुए थे जो मेरी जीवन-दृष्टि बदलने वाले थे। मुझमें नया साहस, नया उत्साह और नया हौंसला भरने वाले थे।

ट्रेन धीमी हो गई थी। नीचे बैठे अंकल अपना सामान समेट रहे थे ... रतलाम आने वाला था। ओह! कितना समय हो गया ... चाय पीने की इच्छा होने लगी। रतलाम में उतरकर मैंने चाय और एक पैकेट बिस्किट का लिया और अपनी सीट पर आकर बैठ गया। बहुत रिलैक्स महसूस कर रहा था, जैसे सिर से कोई बोझ उतर गया हो। उस दिन के बाद विपुल से अकेले में आमना-सामना नहीं हुआ था, जब हुआ भी तो चित्रा साथ थी। वह चुपचाप देखकर आगे बढ़ जाता था। ट्रेन चल दी। नीचे वाली सीट पर कोई नहीं आया था, तो मैं वहीं टिककर बैठा रहा।

आँख बन्द की तो विचार फिर आने-जाने लगे। इस बार विचारों के केंद्र में, मैं स्वयं था। पिछले कुछ समय में मैंने अपने शरीर में बहुत से परिवर्तन महसूस किए थे, अंदर ही अंदर बहुत कुछ बदल रहा है, यह भी जान रहा था। तकिए को पैरों के बीच में दबाकर सोने की नई आदत बन गई थी इस बीच ... इसके बावजूद इन परिवर्तनों का महत्व, इनकी गंभीरता, इनका औचित्य सही अर्थों में नहीं समझ सका था। नवीन और आबिद ने भी ये परिवर्तन महसूस किए होंगे पर उनने भी कभी बात नहीं की। क्या हमारे बीच झिझक की दीवार अब भी मौजूद है? क्या मन का संकोच इतना बड़ा है कि दोस्ती के महीन दरवाजे के भीतर प्रवेश करने में उसे भी झिझक है? या फिर हम तीनों ही नहीं समझ पाए। तीनों की अलग-अलग रुचियाँ हैं, जिनमें डूबे रहना ही हमें ज्यादा प्रिय लगता है ... क्या ये भी एक कारण हो सकता है जो हम ज़िंदगी के इन अहम् परिवर्तनों को सही संदर्भ में देख नहीं पा रहे या उमर के साथ-साथ हम बड़े ही नहीं हुए ... फिर लड़कियों को लेकर आपस में हमारा मजाक, हमारी छेड़छाड़ क्या है ... महज मनोरंजन या अपने अज्ञान को छुपाने का उपक्रम या दूसरों की देखा-देखी खुद को बड़ा सिद्ध करने का थोथा प्रयास।

आबिद और नवीन की तो नहीं जानता, पर मुझे चित्रा का साथ बहुत भाता है ... मन चाहता है कि हमेशा उसके साथ रहूँ। वह भी मुझे पसंद करती है तभी तो मेरे दब्बूपन पर नाराज हो जाती है ... मुझे झकझोरकर बचपन से बाहर निकालने की कोशिश करती रहती है। अपनी नज़रों से मुझे दुनिया का कितना

कचरा दिखाया है उसने, लोगों की कुत्सित मानसिकता से पर्दा उठाकर बताया है। पर मैं उतना साहसी अभी भी बन ही नहीं पाया ... माँ को भी चित्रा के बारे में कहाँ बता सका, क्यूँ डरता हूँ बताने में ... क्या माँ मना कर देगी, यह डर सताता है मुझे ... हमारी दोस्ती को पता नहीं क्या नाम दे, ये लगता है मुझे। छुटकी को तो बता देना था, पर उसने क्यूँ नहीं बताया। क्या वह भी यही सोचती है? सोचते-सोचते कब नींद आ गई पता ही नहीं चला। ट्रेन के कोटा पहुँचने से पहले जब बोगी में हलचल शुरु हुई तभी मेरी नींद खुली ... तुरन्त उठा और अपना सामान समेटने में लग गया।

09

कोटा आने के बाद कुछ दिनों तक घर की याद आती रही, लेकिन फिर वही लम्बी-लम्बी क्लासेज, लेक्चर्स, रिवीजन और टेस्ट्स की व्यस्तताओं ने ज्यादा सोचने का समय ही नहीं दिया। क्लास में चित्रा के पास ही बैठता था। टेस्ट्स में टाइम-मैनेजमेंट का क्या महत्व है यह मुझे पहले टेस्ट से ही समझ में आ गया था। धीरे-धीरे ये कमी दूर हो रही थी और मेरी रैंकिंग भी सुधरती जा रही थी। अब मैं पहले पाँच में आ रहा था और अपने प्रदर्शन से खुश था।

सभी बच्चे पुरानी कड़वी यादों को छोड़कर आगे बढ़ चुके थे। करन नारंग की आत्महत्या पूरी तरह भुलाई जा चुकी थी और तो और अब गीता की चर्चा भी कोई नहीं करता था। समय सारे जख्म भर देता है पर यहाँ समय से ज्यादा बड़ा हीलर तो आपसी प्रतिस्पर्द्धा है, स्वार्थ है जो पीछे मुड़कर किसी को देखने की परमिशन ही नहीं देता। यह बात कभी-कभी सालती भी थी कि इन संस्थाओं में हमें इतना स्वार्थी क्यों बनाया जा रहा है कि आगे आने वाले जीवन में हम किसी की सहायता करने की सोच ही न सकें।

शिवमूर्ति सर ने टाइम की महत्ता के सिलसिले में एक बार कहा था कि आई.आई.टी. का पेपर रॉकेट साइंस की तरह है, समय की गणना में गफलत हुई और मात खाई। इसी सिलसिले में कुछ उदाहरण भी दिए थे कि किस तरह टाइम के एक छोटे से हिस्से के कारण लोग इतिहास रचते-रचते रह गए। 1984 के लॉस एंजेल्स ओलिम्पिक में पी.टी. ऊषा दशमलव के सौवें भाग से पदक नहीं जीत पाई थी ... उससे भी पहले मिल्खा सिंह ने सबसे आगे रहते हुए केवल पलटकर दूसरे प्रतिद्वंद्वियों को देखना चाहा था और पलक झपकते ही तीन

खिलाड़ी उनसे आगे निकल गए थे। उनका समझाने का आशय था कि उन दोनों ने ही समय की सूक्ष्मता का महत्व नहीं समझा और खामियाजा भुगता। समय किसी का इंतजार नहीं करता, इसलिए समय को पकड़कर रखना सीखो ... हाथ से फिसलने मत दो उसे। किसी भी तरह की भावनाओं में नहीं बहना है ... सामने कितनी ही बड़ी विपत्ति हो, कितना ही बड़ा दुख का पहाड टूट पड़ा हो, कोई कितनी ही बड़ी लालच दे और चुनौती देने वाला भी कोई अपना ही क्यों न हो, हर स्थिति में भावशून्य बना रहना है तभी अपना गोल एचीव कर सकोगे। ये इस स्पर्द्धा की निर्मम एवं कड़वी सच्चाई है।

उस दिन घर लौटा तो अंकल चेस की बिसात बिछाए गहन सोच-विचार में खोए हुए थे। मैं चुपचाप उनके पास बैठ गया। कुछ देर तक उन्होंने मेरी ओर ध्यान ही नही दिया जब मैं जाने को उठने लगा तो इशारा करके बिठा लिया। बोले - "ये वो बाजी है, जिसमें विश्वनाथन आनंद ने वेसलीन टोपोलोव को हराकर अपना विश्व खिताब सुरक्षित रखा था। पता है इस बाजी में क्या खास बात थी।" मेरे न में सिर हिलाने पर वह आगे बोले - "ये मुकाबले की आखिरी बाजी थी और दोनों खिलाड़ियों के पास उस समय साढ़े पाँच अंक थे। आनंद को आखिरी बाजी में काले मोहरों से खेलना था, जो चेस में हानिकारक माने जाते हैं, लेकिन आनंद ने बाजी जीत ली। तुम्हें बताता हूँ ... कैसे? विपरीत परिस्थिति में भी वह अपना दिमागी संतुलन कायम रखने में सफल रहे थे। 33वीं चाल तक आनंद बहुत संभल-संभलकर खेल रहे थे फिर उन्होंने बाजी पलट दी। तुमने कभी इस नजरिए से सोचने की कोशिश नहीं की कि अभी तक क्लास में पहले नंबर पर क्यूँ नहीं आ पाए। मेरा सोचना है तुम संभलकर टेस्ट नहीं दे रहे हो ... जिन प्रश्नों में निगेटिव मार्किंग होती है और जिनके एक से अधिक सही उत्तर होते हैं, उनमें तुम कन्फ्यूज हो जाते हो और अपना कीमती समय बर्बाद कर बैठते हो ... यह तुम्हारे कॉन्फिडेंस को हिला देता है। पहले उन प्रश्नों को हल करो जो तुम्हें आते हैं, फिर उनमें हाथ डालो जिनमें निगेटिव मार्किंग होती है। ऐसे में तुम समय के भीतर ज्यादा स्कोर कर पाओगे। हर टेस्ट को तुम इस बिसात की तरह लो कि हर बार तुमको काले मोहरों से खेलना है और जीतकर दिखाना है। तुम्हें किसी को हराना नहीं है बल्कि स्वयं के लिए जीतना है।"

अंकल का आंकलन सही था ... हर टेस्ट में समयाभाव के कारण तीन-चार प्रश्न छूट ही जाते थे और कुछ उत्तर गलत भी हो जाते थे। चित्रा यद्यपि

बहुत हेल्प करती थी ... उसने बहुत सी विधियाँ बताईं थी, जिनसे मैं मैथ्स और फिजिक्स के कितने ही सवालों को आसानी से हल करना सीख गया था। उसे जो भी नया तरीका पता चलता था, वह मुझसे शेयर ज़रूर करती थी, लेकिन समय का सही सदुपयोग करना तो मुझे ही सीखना था, इसमें चित्रा क्या मदद करती। पर अंकल ने खेल-खेल में बहुत पते की बात की। उनका अनुभव अप्रतिम है और तर्क शक्ति लाजवाब।

अगले टेस्ट में ही मुझे अंकल की सीख का लाभ मिला। यद्यपि इस बार भी समयाभाव के कारण तीन प्रश्न छूट गए, लेकिन किसी प्रश्न में निगेटिव मार्क न मिलने के कारण मैं तीसरे नम्बर पर पहुँच गया। चित्रा पूर्ववत पहले स्थान पर रही। अरविंद पाराशर की रैंकिंग हर टेस्ट के बाद नीचे और नीचे जा रही थी। अगले टेस्ट में मैं दूसरे स्थान पर पहुँच गया और अरविंद बयालिसवें। इसके बाद अरविंद तीन दिनों तक कोचिंग ही नहीं आया। पता लगा कि मानसिक तनाव और अत्यधिक ड्रिंक लेने के कारण वह हॉस्टल में चक्कर खाकर गिर पड़ा था और मिनोचा हॉस्पिटल में भर्ती है। उसे नर्वस ब्रेकडाउन हुआ है तथा बीकानेर से उसके पापा और मम्मी भी पहुँच चुके हैं।

हॉस्पिटल में मनोचिकित्सक डॉ० अमोल रेगे अरविंद का इलाज कर रहे थे। उन्होंने काउंसलिंग करने से पहले पापा-मम्मी से उसकी शुरुआती ज़िंदगी तथा कोचिंग के कुछ बच्चों से अरविंद की आदतों और व्यवहार की जानकारी ली। उनका पहला इम्प्रेशन था कि इकलौता लड़का होने के कारण अरविंद की परवरिश बहुत ही लाड़-प्यार से हुई है ... उसे कभी किसी चीज की कमी नहीं रही ... उसकी हर फरमाइश पूरी की जाती रही ... उसे बिना किसी श्रम के हर चीज सहजता से उपलब्ध होती रही। उसे हर चीज आसानी से पाने की आदत पड़ गई। उसके साथ यह प्लस पॉइंट था कि पढ़ने में भी वह अच्छा था, लेकिन उसके पापा ने यहीं गलती कर दी और उसके मन में सर्वश्रेष्ठ होने का भ्रम पैदा हो गया। यद्यपि यह सब उनसे अनजाने में ही हुआ। हर दीपावली और होली पर वह स्कूल के हर टीचर के यहाँ मिठाई व कोई न कोई गिफ्ट आयटम भिजवा देते थे। इससे पहले कभी किसी ने स्कूल के टीचर्स पर इस तरह की अनुकंपा नहीं की थी। वह सोचते थे कि वह अपने सामाजिक दायित्व को निभा रहे हैं, लेकिन वह इस बात को नहीं समझ पाए कि टीचर्स के मन में अरविंद के प्रति कृतज्ञता का भाव भी पनप सकता है। अरविंद पढ़ने में अच्छा था, अतएव क्लास

में पहला स्थान पाने पर कभी संदेह नहीं हुआ कि इसमें टीचर्स की सदाशयता का अंश भी सम्मिलित है।

हर चीज आसानी से पा लेना अरविंद की आदत बन चुकी था और जब स्कूल में नम्बर भी आसानी से मिलने लगे तो उसे सबसे होशियार बच्चा होने का भ्रम भी हो गया। जीवन में उसे संघर्ष करके या मेहनत करके आगे निकलने का अवसर ही नहीं मिला। खुश किस्मती से कोचिंग के शुरुआती टेस्ट्स में भी उसका प्रदर्शन अच्छा रहा, जिससे उसके भ्रम को और मजबूती मिलती चली गई। इस परीक्षा में तो हाड़-तोड़ मेहनत करने वाले भी पीछे रह जाते हैं ... इसमें नम्बर खैरात में नहीं मिलते। एक-एक नम्बर के लिए पसीना बहाना पड़ता है ... दिमाग को मथना पड़ता है ... एक जुनूनी की तरह किताबों में खोना पड़ता है, यह मुझसे बेहतर कोई नहीं समझ सकता। अर्जुन की तरह हर समय चिड़िया की आँख पर ही नज़रें टिकाए रखनी पड़ती है। अरविंद चूक गया इसमें। एक बार पिछड़ा तो पिछड़ते ही चला गया। उसने संघर्ष करना सीखा ही नहीं था, इसलिए तनाव में रहने लगा। कमजोर पलों में उसे सहारा देने के नाम पर दोस्तों ने नशे की दुनिया में धकेल दिया। नतीजा सामने है। पिता को अब अपनी गलती समझ में आ रही थी। परेशान थे बहुत। डॉक्टर के इस आश्वासन के बाद कि स्थिति बहुत बिगड़ी नहीं है, ठीक हो जाएगा ... थोड़ा टाइम ज़रूर लगेगा, उनकी चिंता कम हुई, पर माँ सदमें में थी। अरविंद के पलंग के पास बैठीं उसे निहारती रहतीं, पल भर के लिए भी अकेला नहीं छोड़तीं।

क्लास के बाद अक्सर बच्चे अरविंद की चर्चा करते सुनाई दे जाते। मेरे और चित्रा के बीच भी कई बार इस बारे में चर्चा हो चुकी थी। मुझे अरविंद के मामले में टाँग न अड़ाने की सीख दे चुकी चित्रा स्वयं मुझसे ज्यादा व्यथित थी। इस एग्जाम की यही निर्ममता हमें अखरती थी। अपरिपक्व मस्तिस्क और टनों का बोझ। नियति किसे अरविंद बना दे और किसे करन, कोई नहीं जानता। माँ-बाप भी अपने बेटे या बेटी की क्षमताओं का सही आंकलन नहीं करते या करना नहीं चाहते और दूसरों की देखा-देखी उतार देते हैं, इस रण में विजेता बनकर लौटने के लिए। यह ठीक वैसा ही है जैसे तैराकी न जानने वाले को इंग्लिश चैनल पार करने के लिए अटलांटिक महासागर में छोड़ दिया जाए।

10

संकेत ने यह कहकर मुझे चौंका दिया कि ''अंकल तुमसे मिलना चाहते हैं।'' उसके यह कहते ही दर्जनों प्रश्न मेरे मस्तिष्क में हलचल मचाने लगे ... क्यों मिलना चाहते हैं? ऐसा क्या काम है उनको? मेरे बारे में क्या जानते हैं, वह जो मिलने की इच्छा हो रही है? मैं तो जानता भी नहीं उनको ... ज़रूर संकेत ने उनसे कुछ ऐसा-वैसा कहा होगा, जिस कारण उनने मिलने की इच्छा जाहिर की है। मुझे चुप देखकर मेरे सारे प्रश्नों का उत्तर संकेत ने स्वयं ही दे दिया।

''अंकल कल दोपहर में यहाँ पहुँच रहे हैं, उन्होंने कहा है कि इस बार तुमको भी साथ लेकर आऊँ ... मैंने ही उन्हें तुम्हारे बारे में बताया था, ये देखो उनका मैसेज आया है'' - संकेत ने अपना मोबाइल मेरी ओर बढ़ाते हुए कहा।

मैंने मोबाइल हाथ में ले लिया। मैसेज में संकेत के साथ अपनी फोटो देखकर विस्मय हुआ, लेकिन फिर याद आया ... यह फोटो संकेत ने दो माह पहले जब मैं उससे मिलने उसके रूम में गया था, क्लिक की थी। लेकिन उसने अंकल को यह फोटो क्यों भेजी? क्या मकसद रहा होगा उसका? जो भी हो, हम दोनों की फोटो के नीचे अंकल का मैसेज था - ''ग्रेट लुक, वेरी क्यूट।'' इसके बाद दोनों की चैट के कुछ अंश थे। प्रत्युत्तर में संकेत ने एक शरारती आँखों वाली इमोजी के साथ पूछा था - ''कौन'' अंकल का उत्तर था - ''दोनों'' फिर आगे लिखा था - ''कल कोटा पहुँच रहा हूँ ... उसी पुराने होटल मधु श्री में रुकूँगा। इस बार कोटा में ही काम है चार-पाँच दिन रुकना पड़ेगा। शाम को रुकने की तैयारी से आ जाना, साथ में अपने पार्टनर को भी ले आना ... क्या नाम बताया था! उसका ध्यान नहीं आ रहा है।''

''समीर'' - संकेत ने लिखा था।

मैंने फोटो के ऊपर वाले मैसेज देखने चाहे पर उसके पूर्व के मैसेज डिलीट किए जा चुके थे। एक बार फिर सारे संदेश दोबारा पढ़े, निहितार्थ समझ में नहीं आया। मोबाइल मेरे हाथों से वापस लेते हुए संकेत ने कहा - ''कल शाम को पाँच बजे तैयार रहना।''

''पर भैया, मैं क्या करूँगा वहाँ जाकर ... आप तो वहीं रुक जाओगे।''

''मैं तुम्हें वापस छोड़कर फिर चला जाऊँगा।'' - संकेत ने कहा।

''मैं अभी निश्चित नहीं बता सकता ... कल जब कोचिंग से आऊँगा तभी बताऊँगा।'' मैंने टालने वाले अंदाज में कहा।

अगला दिन शनिवार था, अतएव मैं तीन बजे ही वापस आ आया। मुझे देखकर संकेत भी तुरंत मेरे रूम में चला आया, बोला - ''समय का ध्यान रखना। मैं तो अभी से तैयार हो गया हूँ।''

संकेत का उतावलापन और साथ ले जाने की आतुरता मुझे कुछ संकेत देना चाहती थी पर मैं उस संकेत को नहीं देख पा रहा था। संकेत के बारम्बार कहने पर मैं जाने को तैयार हो गया। साढ़े पाँच बजे हम दोंनो मधु श्री होटल के कमरा नम्बर 202 में थे। अंकल हमारा ही इंतजार कर रहे थे। उन्होंने पहले संकेत को फिर मुझे गले से लगाया। इसके बाद कुछ स्नैक्स और कोल्ड ड्रिंक ऑर्डर किए और हमारे साथ सोफे पर बैठ गए। कुछ इधर-उधर की बातें होती रहीं। अंकल वेशभूषा से संभ्रांत और बोलचाल के तौर-तरीकों से काफी संस्कारित लगे मुझे। पचास के आस-पास उमर होगी उनकी, लेकिन पूरी तरह फिट, कहीं भी अतिरिक्त चर्बी नहीं, किसी एथलीट सरीखी टोन्ड बॉडी।

घड़ी देखी सात बज गए थे, मैं चलने के लिए उठ गया - ''बहुत देर हो गई, अब जाना चाहिए मुझे।''

''संकेत ये क्या ... तुमने बताया नहीं था कि रात में यहीं रुकना है .. . कल के लिए मैंने राधिका रिसोर्ट में एक सूट तथा एम्यूजमेंट पार्क के टिकट भी बुक किए हैं, सब व्यर्थ हो जाएँगे'' - अंकल ने संकेत की ओर देखते हुए कहा।

''मैंने तो भैया से यहाँ आने के लिए मना कर दिया था, पर उनकी ज़िद के कारण आना पड़ा। यदि मुझे रुकने के बारे में पता होता तो मैं आता ही नहीं ... आंटी भी मेरा इंतजार कर रही होंगी ... मैं उनसे सात बजे तक वापस आने का बोलकर आया था।'' - संकेत के बोलने से पहले ही मैंने जवाब दिया।

सुनकर अंकल कुछ परेशान लगे। उन्होंने पुनः रुकने के लिए कहा, पर मैंने दृढ़ता दिखाई - ''भैया, आप चलेंगे या रुकेंगे, आपको रुकना हो तो रुक जाइए मैं अकेला ही चला जाऊँगा।''

''अच्छा एक मिनट रुको'' कहते हुए अंकल बैग में कुछ ढूँढने लगे। जब पलटे तो उनके हाथ में दो पैकेट थे - ''ये लो तुम्हारे लिए ... तुम्हारी पसंद की चीजें हैं, स्केचिंग के लिए इम्पोर्टेड पेंसिल सेट और आर्ट पेपर बुक।''

मैंने यह कहते हुए कि ''मैंने स्केचिंग करना छोड़ दिया है।'' लेने से विनम्रतापूर्वक मना किया। माँ ने किसी से उपहार लेने के लिए सख्ती से मना किया था और वैसे भी किसी अपरिचित से उपहार लेने में मुझे भी दिलचस्पी नहीं थी। मैं संकेत को वहीं छोड़कर लौट आया।

रास्ते भर मैं सोचता रहा कि संकेत ने मुझे रुकने के बारे में पहले क्यों नहीं बताया और अंकल को मेरी रुचियों के बारे में कैसे पता? संकेत से भी कभी रुचियों के बारे में मेरी बात नहीं हुई थी ... फिर किसने बताया होगा? होगा कोई, मुझे क्या? मैं व्यर्थ ही क्यूँ अपने दिमाग का दही बनाऊँ? मन को दूसरी तरफ ले जाने के लिए मैंने चित्रा को फोन लगाया। फोन कनेक्ट होते ही चित्रा की आवाज़ आई - ''क्या हुआ बच्चू ... आज मन नहीं लग रहा।''

''अरे, खुशी साझा करने के लिए फोन किया ... बहुत देर से एलजेब्रा के एक क्वेश्चन में उलझा हुआ था, सॉल्व करके उठा हूँ'' - मैंने कलाकारी दिखाई।

''अच्छा जीनियस ... कौन सा क्वेश्चन है मुझे भी समझाओ''

''शकुंतला देवी मजाक अच्छा कर लेती हैं'' - मैंने अपनी विद्वता झाड़ते हुए एक प्रसिद्ध गणितज्ञ के नाम का उल्लेख चित्रा के लिए करते हुए कहा।

''ऐ ऐ ... ज्यादा होशियारी नहीं ... कितना शोर-गुल हो रहा है ... बसों के हॉर्न सुनाई दे रहे हैं, सही-सही बोल बाहर घूम रहा है न।'' - चित्रा की रोष मिश्रित आवाज़ कानों में गूँजी।

''सही पकड़े हैं जी ... तुम तो शर्लाक होम्स की भी चाची हो ... हाँ बाहर ही हूँ, संकेत भैया के साथ आया था, अब वापस लौट रहा हूँ।'' - मैंने हथियार डाल दिए। मुझे चित्रा की बात याद हो आई, कभी झूठ मत बोलना, एक झूठ सौ झूठ को जन्म देता है।

''ठीक है ... घर पहुँच फिर बात करना।''

संकेत मंगलवार की शाम को वापस आया। कुछ ही देर में वह मेरे कमरे में वही दो पैकेट लेकर आ गया।

''तुम उस दिन ऐसे ही वापस आ गए, अंकल को अच्छा नहीं लगा। उनके कहने पर तुमको रुक जाना था, एक ही दिन की तो बात थी ... हम लोगों ने रिसोर्ट में बहुत एंजाय किया ... अंकल बार-बार तुमको याद करते रहे'' - संकेत ने पलंग पर बैठते हुए कहा।

''भैया, मैं यहाँ एंजाय करने नहीं पढ़ाई करने आया हूँ ... मैंने तो आपके साथ जाने से ही मना किया था, लेकिन आप जबर्दस्ती ले गए ... आपने प्रॉमिस किया था कि वापस छोड़ दूँगा ... पर आपने उनके सामने एक शब्द नहीं कहा, आपको बोलना चाहिए था ... वैसे भी मैं अंकल से पहली बार मिला था और आंटी से एक घंटे के लिए बोलकर गया था ... आपको पता है कि आंटी की अनुमति के बिना मैं कहीं नहीं जाता।''

''क्या आंटी-आंटी करते रहते हो ... मैं भी यहीं रहता हूँ और एक सीमा तक ही आंटी को अपने कामों में हस्तक्षेप करने देता हूँ, यह देखा ही है तुमने। तुम अब बड़े हो गए हो, अपने निर्णय खुद ले सकते हो ... तुम्हारी भी तो कोई लाइफ है कि नहीं।''

''भैया प्लीज़ ... आपने मेरे किसी प्रश्न का उत्तर नहीं दिया उल्टा आक्षेप लगा रहे हैं। बड़े होने का मतलब अपनों का अनादर करना नहीं होता ... आंटी मेरी गार्जियन हैं और माँ की अनुपस्थिति में माँ जैसा ही ख्याल रखती हैं मेरा ... मैं उनका दिल दुखाने की सोच भी नहीं सकता ... और फिर उसके लिए, जिससे मेरा कोई वास्ता ही नहीं है।'' - संकेत की बात सुनकर मुझे बुरा तो बहुत लगा था, जिसका कुछ अंश मेरे जवाब में भी झलक आया।

''ठीक है ... तुम्हारी इच्छा ... तुम बने रहो बच्चे ही। ये लो अंकल ने भेजा है ... तुम्हारे लिए स्पेशली लेकर आए थे ... तुम्हारे फेसबुक अकॉउंट से तुम्हारी हॉबीज का पता करके लिया था इसे उनने।''

''नहीं, मैं नहीं ले सकता ... उनको आप वापस कर देना और मेरी तरफ से धन्यवाद बोल देना।''

संकेत नाराजगी व्यक्त करते हुए चला गया। इसके बाद उसने मुझसे बोलना ही बंद कर दिया। मैंने मिलने पर उसे पूर्ववत विश भी किया और ''कैसे हो भैया'' पूछा भी, पर वह मुँह मोड़कर निकल गया। पहले भी उसका व्यवहार अबूझ लगता था, अब रहस्यमय भी लगने लगा था। वह मुझसे इतना नाराज क्यों है मेरी समझ में नहीं आ सका। मैंने भी अधिक ध्यान नहीं दिया, देने से फायदा भी नहीं था।

अरविंद को हॉस्पिटल में भर्ती हुए तीन हफ्ते बीत चुके थे। जैसा कि होता आया है ये घटना भी पानी के बुलबुले सरीखी थोड़ी उत्तेजना पैदा कर फुस्स हो गई। शुरु-शुरु में अरविंद के साथ खड़े दिखने वाले मेरी क्लास और उसके

हॉस्टल के बच्चे सब भूल-भुलाकर अपने में मस्त हो चुके थे। हर वीक-एंड पर मैं और चित्रा अरविंद को देखने चले जाते थे। अरविंद अब पहले से बेहतर था और बातें भी करने लगा था। आंटी भी संभल चुकी थीं। इस वीक-एंड पर जब हम मिलने गए तो आंटी ने बताया - ''कल हम लोग अरविंद को लेकर बीकानेर लौट रहे हैं ... डॉक्टर ने अभी स्ट्रेस न लेने की सलाह दी है और बीकानेर के एक डॉक्टर से बात करके उनको पूरी केस हिस्ट्री बता दी है अब वही अरविंद को देखेंगे। तुम लोगों का बहुत-बहुत शुक्रिया कि तुम्हें अरविंद की इतनी चिंता रही और उसका हाल जानने आते रहे। भगवान तुम दोनों पर अपना आशीष बनाए रखे ... तुम्हें ज़िंदगी में हर सफलता मिले, मैं प्रभु से प्रार्थना करुँगी।''

आंटी की बात सुनकर कभी भावुक न होने वाली चित्रा की आँखें सजल हो गई। अरविंद को शुभकामना देते हुए उसके आँसू छलक ही पड़े - ''भाई, जल्दी स्वस्थ होकर आना ... हम इंतजार करेंगे।''

चित्रा भी अजीब है ... फौलादी आवरण के पीछे मोम सा दिल भी रखती है ... जरा-सी आँच क्या मिली, पिघलकर आँखों के रास्ते बाहर आ गया।''

11

कभी-कभी सोचता हूँ कि एक रण जीतने की खातिर कितनी खुशियों की बलि देनी पड़ रही है ... कितने मोर्चों पर जूझना पड़ रहा है। न मैं छुटकी की वह खुशी देख पाया जो उसके चेहरे पर अपना पहला सम्मान ग्रहण करते समय आई होगी और न ही मैं आबिद का आलराउंड खेल देख सका, जिसने उसे प्रदेश की अंडर-19 टीम तक पहुँचा दिया। पिछड़े क्षेत्र के 18 साल के एक लड़के के लिए यह बहुत बड़ी उपलब्धि थी। पूरा शहर उमड़ पड़ा था, उसके सम्मान समारोह में। मैं तो तस्वीरें देखकर ही अभिभूत हो गया था। नवीन का नाटक भी मैं नहीं देख सका, जिसके बीस से ज्यादा शो हो चुके हैं। आगरा में तो उसे श्रेष्ठ अभिनय के लिए नरेंद्र गांगुली गोल्ड मेडल से सम्मानित भी किया गया था। कैसा दुर्भाग्य है कि अपने निकटतम लोगों की एक भी खुशी में मैं सम्मिलित नहीं हो पाया। याद करता हूँ तो एक हूक सी उठती है दिल में। अब जब से निधि दीदी और प्रवीण भैया की शादी की खबरें मिली हैं, तो दिल भारी हुआ जा रहा है।

निधि इलाहाबाद वाली बुआ की लड़की हैं और मुझे बहुत स्नेह करती हैं। सभी चचेरे, ममेरे, मौसेरे और फुफेरे भाई-बहिनों में मुझे भी वह अत्यंत प्रिय

हैं। उन्होंने हमेशा मेरा उत्साह बढ़ाया है। जब मैं कोटा आने वाला था, तब मुझसे लम्बी बात की थी और मेरे क्षीण आत्मविश्वास को प्रबल करने में बहुत मदद की थी। दिल्ली में हॉस्टल में रहते हुए उन्होंने एम.बी.ए. किया था, अतएव परिवार से दूर रहने पर होने वाली तकलीफों से वह भली-भाँति परिचित थी। ढेर सारे टिप्स दिए थे उन्होंने। कोटा आकर भी उनसे अनेक बार बात हुई थी और हर बार बात कर मैं ज्यादा इनर्जेटिक फील करता रहा हूँ। वर्तमान में वह गुड़गाँव में किसी मल्टीनेशनल कम्पनी में एच.आर. हेड हैं। उनका विवाह साथ में काम करने वाले टेक्नीकल हेड मधुरेंद्र के साथ होने जा रहा है। दीदी ने उनकी फोटो भेजी है मुझे ... एकदम परफैक्ट मैच है दीदी के लिए।

प्रवीण भैया नवीन के बड़े भाई हैं। नौ साल बड़े हैं उससे, सेंट्रल एक्साइज में इंस्पेक्टर हैं। सौम्य और हँसमुख। हमने यानि कि नवीन, आबिद और मैंने, प्रवीण भैया की शादी में जम के धमाल मचाने का बहुत पहले से प्रोग्राम बनाया हुआ था, डांस के लिए गाने तक सेलेक्ट करके रखे थे, लेकिन अब सब बेमानी हो गया है। मुझे केवल फोटो और छोटे-छोटे वीडियो क्लिप देखकर ही संतोष करना पड़ेगा।

इन्हीं उदासियों के बीच कभी-कभी मुझे अतीव प्रसन्नता का अवसर भी मिल जाता, लगता ऊपरवाला सब बैलेंस करके चलता है। यदि ज़िंदगी में यह बैलेंस न रहे तो ज़िंदगी बेपटरी होने का खतरा बढ़ जाता है। दिसम्बर माह में हुए दूसरे टेस्ट में मैं सीधा तीसरे स्थान से पहले स्थान पर पहुँच गया। चित्रा से पूरे दो अंक ज्यादा मिले थे। इस सफलता पर मुझे उछलना चाहिए था और मैं उछला भी, पर चित्रा से दो अंक आगे निकलने की बात मन को अशांत कर रही थी। मैं प्रथम आना तो चाहता था, पर चित्रा को पीछे छोड़कर नहीं, अपितु उसके साथ संयुक्त रूप से। मेरा मन बार-बार कह रहा था ... जिसने मुझे इतना कुछ सिखाया उसे ही पीछे छोड़कर आगे बढ़ गया। पर चित्रा बहुत खुश थी, उसकी आँखें इसकी गवाही दे रही थी और शब्दों में वही चुलबुलापन झलक रहा था, जो ऐसे अवसर पर अपेक्षित था - ''बच्चे ने पहली बार अपनी क्षमता के अनुसार प्रदर्शन किया है, मैं बहुत खुश हूँ ... वर माँगो वत्स।''

चित्रा की इस अदा पर हँसी आ गई मुझे और मैं भी महाभारत सीरियल वाले मोड में आ गया - ''वर दो माते कि अब कभी आपसे आगे निकलने की हिम्मत न करूँ।''

''धत्त, ये वर अस्वीकृत किया जाता है'' - चित्रा मेरे गाल पर चिकोटी काटते हुए बोली और हम दोनों जोर से खिलखिला पड़े।

''चलो मेक्डी चलते हैं ... आज की ट्रीट मेरी ओर से'' - चित्रा ने हाथ पकड़ते हुए कहा।

''ट्रीट कल ... आज तुम्हारे घर चलते हैं, आंटी से आशीर्वाद लेने'' - मैंने कहा तो चित्रा ने तुरंत हाँ कह दी और घर पर फोन भी कर दिया।

हमारे पहुँचने से पहले ही आंटी ने ब्रेडरोल और सूजी का हलुआ बना लिया था। उन्होंने पैर छूने से पहले ही मुझे गले से लगा लिया और सिर पर हाथ फेरते हुए सदा प्रथम आने का आशीर्वाद दिया। उनका स्पर्श पाकर माँ की याद हो आई।

लौटते समय चित्रा मुझे छोड़ने नीचे तक आई। आते समय उसने देख लिया था, निशिथ अपनी स्कूटी खड़ी कर रहा है। उसने मेरा हाथ पकड़कर हिलाया और कहा - ''देखो तुम्हें मजेदार सीन दिखाती हूँ।''

मैं कुछ समझ नहीं सका। चित्रा नीचे उतरते हुए अपने मोबाइल में कुछ खोज रही थी। मेरा ध्यान उसकी ओर तब गया जब हम नीचे आ गए और उसके मोबाइल से आवाज़ आने लगी - ''मेरे भैया, मेरे चंदा, मेरे अनमोल रतन .. .।'' गीत सुनते ही निशिथ सिर नीचा किए लगभग दौड़ते हुए अपने घर के अंदर घुस गया। चित्रा ने मेरा हाथ दबाया - ''देखा, मेरा रुतबा''

''हाँ देख लिया ... पर तुम अच्छा नहीं कर रही उसके साथ ... माफ कर दो बेचारे को।''

''ओए, ज्यादा स्मार्ट मत बन, मुझे याद है वो दिन जब मैं राखी खरीदने गई थी तुम्हारे साथ ... चेहरे पर कैसी हवाईयाँ उड़ रही थी ... उस दिन तो पूछने तक की हिम्मत नहीं हुई कि किसके लिए ली है ... अब फट्टू से फाड़ू बन रहा है।''

''प्लीज़ ... मुझे अच्छा नहीं लगा तो कहा ... अब तुम्हारी मर्जी ...''

''ठीक है बाबा ... यूँ बागड़बिल्ले सा मुँह मत बना ... आज से उसे छेड़ना बंद, मुझे माफ कर दे यार''

चित्रा की यही अदा मुझे अंदर तक खुशी से भर देती है। कितना ध्यान रहता है उसे मेरा ... मेरी बात फटाक से मान लेती है ... कभी दुखी देखना नहीं चाहती ... मेरी बात का जरा भी बुरा नहीं मानती।

कभी-कभी लगता है ... वह मुझे जितना समझने लगी है उतना शायद मैं भी स्वयं को नहीं समझता। समझता होता तो रक्षाबंधन वाले दिन उस पर संदेह क्यूँ करता? रातभर निरर्थक चिंता में दुबला क्यूँ होता रहता? पर उसके बाद के दो-तीन महीनों में हम और पास आए हैं और ज्यादा अच्छी तरह से एक-दूसरे को समझने लगे हैं। हमारे बीच की अंडरस्टैंडिंग सुपर-डुपर है, गलतफहमियों को पास फटकने ही नहीं देते हम ... हमारे बीच कोई परदा नहीं, हर बात आपस में शेयर करते हैं। दस-बारह दिन ही हुए होंगे जब कोचिंग से आते समय उसके पेट में दर्द होने लगा था, तो उसने मेडिकल स्टोर से तुरंत व्हिस्पर अल्ट्रा लाने को कहा था और वह सुलभ इंटरनैशनल वाशरूम में घुस गई थी।

अंकल और आंटी दोनों ही टेस्ट में फर्स्ट आने की खबर सुनकर बहुत खुश हुए। अंकल बोले - ''वेल डन माई डियर ... आई न्यू, यू हेव द पोटेंशियल टू डू इट ... अब पीछे मुड़कर नहीं देखना ... तुम्हें रजनीश का रिकॉर्ड तोड़कर दिखाना है मेरे बच्चे।''

रजनीश श्रीवास्तव छः साल पहले उनके यहाँ मेरी ही तरह पी.जी. बनकर आया था और पाँच साल पहले 89वीं रैंक के साथ पास होकर निकला था। मुम्बई आई.आई.टी. से इंजीनियरिंग करने के बाद आजकल अहमदाबाद आई.आई. एम. से मैनेजमेंट में पी.जी.डी.एम. कर रहा है। इसके बाद छः बच्चे और अंकल के यहाँ पी.जी. में रहे पर कोई भी 'जी' क्रेक नहीं कर सका। अहमदाबाद से एक बार रजनीश अंकल से आशीर्वाद लेने भी आया था, पर मैं उससे नहीं मिल पाया था।

अगले टेस्ट में भी मुझे पहला स्थान मिला। चित्रा दूसरे और शुरुआती टेस्ट्स में हमेशा पहले स्थान पर आने वाला वेंकटेश तीसरे स्थान पर आया। चित्रा और मैंने भी महसूस किया कि वेंकटेश मेरी सफलता से काफी आहत हुआ है। ''देयर इज समथिंग रांग बडी ... हाऊ केन ए विलेज-ब्यॉय पुश मी डाउन इन टू सक्सेसिव टेस्ट्स'' - उसे मैंने अखिल बदानी से कहते सुना था। सुनकर मैं अवाक रह गया। कितने इनसेंसिटिव हो गए हैं लोग? ये भी कोई असफलता है, जिसे लेकर अपमानित महसूस किया जाए और गड़बड़ी की आशंका जताई जाए। चित्रा कितनी स्पोर्टिंग है इस मायने में ... हार और जीत में जरा भी विचलित नहीं होती। उसे अपने पर भरोसा है और उसका यही भरोसा उसे सबसे अलग

करता है। वेंकटेश की बात सुनकर मुझे भय भी लगा कि यदि एक दो और टेस्ट्स में वह पहले स्थान पर नहीं आ सका तो उसकी स्थिति भी अरविंद जैसी न हो जाए। मैंने कभी किसी से आगे निकलने की कोशिश नहीं की। मेरी स्पर्द्धा तो खुद से चल रही थी, जैसे-जैसे मुझे टाइम मैनेज करना आ गया, मैं ऊपर पहुँचने लगा। हालाँकि यह सच है कि मेरे लिए जो सीढ़ी ऊपर जा रही थी, वही सीढ़ी किसी को नीचे भी ला रही थी।

यहाँ आने वाले हर बच्चे को पता है कि वह एक रेस में शामिल है और स्टार्टिंग-ब्लॉक पर दौड़ने के लिए अपनी पोजिशन लेकर खड़ा है। सब जीत नहीं सकते, लेकिन सब जी-जान लगाकर दौड़ेंगे, हर कोई जानता है। जो पूरी सजगता से, चौकन्ना रहते हुए दौड़ेगा, जीतेगा भी वही और जो बगल वाले पर नज़र रखकर दौड़ेगा उसका फिसलना तय है। ये बात शिवमूर्ति सर ने शुरु में ही सबको स्पष्ट रूप से बता दी थी कि इस इम्तहान में समय का क्या महत्व है।

मुझे व्यथित देखकर, चित्रा मुझ पर बेतहाशा भड़की - ''तू बात-बात पर इतना भावुक होगा, इतना सोच-विचार करेगा तो यहाँ तेरा काम ही क्या है ... भाग जा यहाँ से, जाके छुप जा माँ की गोद में।''

''क्या करूँ ... मैं ऐसा ही हूँ भोंदू, विलेज-ब्यॉय ... अरविंद की हालत देख चुका हूँ, एक अजीब भय मन में बैठ गया है'' - मैं नज़रें झुकाए चित्रा के सामने बैठा जमीन कुरेद रहा था - ''तू सच बता चित्रा, क्या मैं सच में जाहिल गँवार हूँ? विलेज-ब्यॉय की इमेज क्या ऐसी ही होती है?''

''हाँ, तेरे कारण ही ऐसी इमेज बनी है उनकी'' - चित्रा ने मुझे झकझोरते हुए कहा - ''वह तेरे साथ ब्लेम-गेम खेल रहा है कि तू टेंशन में आ जाए और उसका काम बन जाए। उसकी बात ने हर्ट किया न तुझे ... यदि उसने विलेज-ब्यॉय कहा भी तो क्या हो गया? क्या विलेज-ब्यॉय का मतलब असभ्य होता है, गँवार होता है? वह अपने मकसद में कामयाब हो गया, तुझे जाल में उलझा के। एक बात तू अच्छी तरह से समझ ले ... किसी रोगी या किसी वृद्ध को देखकर व्यथित होने से तू बुद्ध नहीं बन जाएगा ... सोच-सोचकर बेमतलब तड़पता रहेगा, वेंकटेश यही चाहता है। अरविंद की बात अलग थी, उसने किसी को नीचा दिखाने की कोशिश नहीं की ... स्वयं घुट-घुटकर डिप्रेशन में चला गया था, पर वेंकटेश में बदले की भावना भरी है ... वह जीतने के लिए किसी भी हद तक जाने वाला बंदा है ... तू ऐसे इंसान के लिए दुखी है। मैं तुझसे डरती

हूँ ... नहीं तो इस बात पर उसकी सारी हेकड़ी निकालकर रख देती।'' - मैं चुपचाप नज़रें झुकाए चित्रा की बात सुन रहा था। वह बोले चले जा रही थी। ऐसा लग रहा था कि उसकी बात कभी खतम ही नहीं होगी। मैं चुप रहा तो हारकर बोली - ''मैं बहुत ज्यादा बोल गई यार, हँस दे नहीं तो रो दूँगी।''

मैं खिलखिलाकर हँस तो नहीं सका, पर उसकी ओर देखकर मुस्करा ज़रूर दिया। हर परिस्थिति को सामान्य बनाने की कमाल की क्षमता है चित्रा में।

12

अगले दो टेस्ट्स में चित्रा पहले स्थान पर रही और मैं दूसरे। वेंकटेश क्रमशः चौथे और फिर पाँचवें नम्बर पर खिसक गया। उसने मुझ पर एक बार फिर टांट मारा था। इस बार मैंने उसे घूरकर देखा और अकड़ते हुए उसके सामने से निकला। अखिल उसे खींचकर एक तरफ ले गया।

ये पहले साल के आखिरी टेस्ट थे। इसके बाद ग्यारहवीं की परीक्षा के लिए कोचिंग से ग्यारह सप्ताह की छुट्टियाँ थी। एक पड़ाव समाप्त हुआ था और अब घर जाकर एक दूसरी परीक्षा में झोंकना था खुद को। हमने कोचिंग की छुट्टियाँ हो जाने के बाद दो दिन रुककर कोटा घूमने का प्रोग्राम बनाया था। इस दौरान हम कुछ स्थानों को देखने जाने वाले थे। मुझे सेवेन वंडर्स पार्क और रॉयल सेनेटाफस देखने की इच्छा थी, जिनके बारे में मैंने बहुत से लोगों से तारीफ सुनी थी। चित्रा का गराड़िया महादेव तथा गोदावरी धाम मंदिर देखने का मन था। पहले दिन हमने चारों स्थानों को देखा। चित्रा के साथ दूसरी बार आउटिंग पर आया था। उसके हाथ में हाथ डालकर घूमने का आनंद ही अलग था। पहली बार उसको छूने में मैंने कुछ अलग तरह की ऊष्मा महसूस की, जो एक तरफ साँसों की लयात्मकता बाधित कर रही थी तो दूसरी तरफ दिल में उमंगों के अनार फूटने का अहसास करा रही थी। चित्रा ने भी मेरे हाथ को जोर से पकड़ रखा था। शायद उसे भी ऐसा ही कुछ फील हो रहा हो। चित्रा ने ही समझाया था कि उमर के इस पड़ाव को वयः-संधि बोलते हैं, जब इंसान न बच्चा होता है और न जवान। इस उमर में होने वाले शारीरिक परिवर्तन मन पर गहरा प्रभाव डालते हैं। लड़के हों या लड़कियाँ सब शरीर में होने वाले परिवर्तनों को लेकर थोड़ा भयभीत भी होते हैं और उत्सुक भी। लड़कियों के परिवर्तन तो नज़र आने लगते हैं ... उनको इनके बारे में बताने के लिए माँ, बहिन या सहेलियाँ भी उपलब्ध होती हैं, पर लड़कों को यह सुविधा सहजता से नहीं मिलती। उन्हें समझने में समय लगता है ... कुछ परेशान रहते हैं, तो कुछ नज़रअंदाज करने की कोशिश करते हैं। शर्मीले और आत्मकेन्द्रित लड़के तो इन परिवर्तनों के बारे में सोचना ही नहीं चाहते। आज पहली बार मैंने अपने अंदर हुए परिवर्तनों को सही मानों में महसूस किया था। चित्रा का साथ इतना क्यूँ भाता है, समझ सका था, उसके स्पर्श में विद्युतीय-आवेश की अनुभूति क्यूँ होती है, जान सका था।

अगले दिन हम अहलुवालिया मॉल और सेंटर स्क्वायर माल घूमने गए। पहले हमने बद्रीनाथ की दुल्हनिया का मैटनी शो देखा। चित्रा को कुछ खरीदारी भी करनी थी। घूमते-घूमते पेट में चूहे दौड़ने लगे तो हम फूड जोन में आ गए। हमने चीज सैंडविच और कैपेचिनो ऑर्डर किया। मैंने पहला सिप लिया ही था कि चार लाइन छोड़कर खत्री अंकल और अश्विन को बैठे देखकर बुरी तरह चौंक गया। मेरी किस्मत अच्छी थी कि दोनों में से किसी ने मुझे नहीं देखा था। जब वे जाने के लिए खड़े हुए तो मैंने रुमाल गिरा दिया और उसे उठाने के उपक्रम में अपना सिर टेबल के नीचे झुका लिया था। अश्विन के हाथों में वेस्टसाइड और नाइके के कैरी बैग थे।

''अंकल, अश्विन के साथ'' - मेरे मन में ये प्रश्न कौंधना स्वभाविक था। परसों दोपहर में ही तो संकेत अंकल से मिलकर लौटा था और उसने कहा था कि अंकल को छोड़कर आ रहा हूँ। क्या संकेत ने झूठ बोला था या उसको खबर नहीं है कि अंकल गए नहीं हैं, वह अब तक यहीं हैं? मुझे विचार निमग्न देख चित्रा ने पूछा - ''क्या हुआ?''

''संकेत के अंकल को देखा अभी अश्विन के साथ।''

''अरे तुम्हें इससे क्या? घूम रहे होंगे, तुम कहीं मेरी कम्पनी में बोर तो नहीं हो गए।''

''मैं और बोर ... मैं तो कयामत तक तुम्हारे साथ बैठा रहूँ ... इसी तरह, तुमको देखते हुए।''

''गजब ... रोमांटिक होना सीख रहे हो ... किस फिल्म का डायलाग है ये।''

''चित्रा-समीर प्रोडक्शन प्राइवेट लिमिटेड की अंडर प्रोडक्शन फिल्म का।'' - मैंने उसकी ओर देखते हुए थोड़े नाटकीय अंदाज में कहा।

''ये मुंडा तो गया काम से ... अब आंटी और उनके इंस्ट्रक्शंस का क्या होगा ... मैं तो चली, वरना ब्लेम मेरे सिर पर आ जाएगा।'' - चित्रा ने और भी अधिक नाटकीय होकर जवाब दिया। हम दोनों ने एक-दूसरे को देखा और हँसने लगे।

चित्रा को सुबह-सुबह उज्जैन के लिए निकलना था। मेरी ट्रेन दोपहर में थी। चित्रा को उसके फ्लैट पर छोड़ने के बाद मैं भरे हुए गले और बोझिल मन के साथ लौटा। चित्रा भी विदा देते हुए भावुक हो गई थी, लेकिन उसमें आत्म-नियंत्रण गजब का है, तुरंत संभलते हुए बोली थी - ''बच्चे, मन लगाकर पढ़ाई करना और मुझसे रोज-रोज बात मत करना ... शुभ रात्रि ... गुड लक''

मैं रास्ते में ही था कि उसका मैसेज आ गया - ''तुम्हें मना किया है रोज-रोज बात करने को, पर मैं फ्री हूँ इस बंधन से ... समझ गए न या और स्पष्ट रूप से समझाऊँ।''

मुझे उचित जवाब नहीं सूझा तो उदास चहरे वाली एकट्ठी पाँच इमोजी भेज दी।

घर आकर कुछ देर अंकल और आंटी के साथ समय बिताया। इस बार तीन माह के लिए जा रहा था, अतएव आंटी थोड़ा उदास थीं। अंकल मेरी ओर देखते हुए बोले - ''पहुँचकर सूचना देना वरना यह चिंता में घुटती रहेंगी ... जब भी समय मिले फोन करना ... हमारा आशीर्वाद है, अच्छे नम्बरों से पास होकर वापस आना ... कल ही संकेत भी जा रहा है, फिर शायद वापस न आए .. . घर बिल्कुल सूना हो जाएगा।''

''अंकल, आप ध्यान रखिएगा आंटी का, ज्यादा काम न करें''

''रखना ही पड़ेगा, वरना कमर और पैरों की मालिश कौन करेगा, अपने वश की तो है नहीं'' - अंकल अपना दुख छुपाने के उपक्रम में जबरन हँसते हुए बोले।

मुझे भी अपना सामान लगाना था। जो चीजें यहाँ छोड़कर जानी थे उन्हें भी अलग जमा करके रखना था। मैं ऊपर आया तो अपने कमरे में जाने से पहले संकेत से भी विदा ले लेना उचित लगा मुझे। वह भी अपना सामान समेट रहा था। मुझे देखा तो बोला - ''जा रहा हूँ मैं ... अब नहीं आऊँगा वापस ... वहीं अंकल का बिजनेस जमाऊँगा ... वह हर दो माह में गाइड करने पटना आते रहेंगे।''

''मैं प्रार्थना करूँगा कि आपका बिजनेस जल्दी ही सेट हो जाए और आप खूब तरक्की करें।''

''थैंक्स समीर ... तुम बहुत अच्छे हो पर मैं तुम्हारे साथ ज्यादा हिल-मिल नहीं सका, तुमसे दूरी बनाकर ही चलता रहा। मुझसे कोई गलती हुई हो तो मुझे माफ करना भाई ... अंकल के पास नहीं ले जाना चाहिए था तुम्हें ... ये बाद में रियलाइज हुआ।''

''छोड़ो भैया, उस बात को ... पर एक बात पूछना है आपसे। उनके मन में क्या था, क्यों बुलाया था मुझे?''

''रहने दो उस बात को ... तुम बहुत भोले हो, ये दुनिया बहुत कमीनी है ... कुछ समय बाद तुम स्वतः समझ जाओगे इन बातों को, तब तक इंतजार करो।''

''ठीक है भैया ... आप नहीं चाहते बताना तो मत बताइए, मैं समय का इंतजार कर लूँगा ... पर एक बात आपको बतानी ही होगी।''

''पूछो ... सुनकर डिसाइड करूँगा ... बताऊँ कि नहीं।''

''अंकल कहाँ हैं अभी?''

''वह जालंधर पहुँच गए हैं ... सुबह उनका मैसेज भी आया था, ये देखो।''

मैंने संकेत के हाथ से मोबाइल ले लिया और संदेश पढ़ने लगा - ''रीच्ड जालंधर इन टाइम डियर स्वीटी, विल टॉक टू यू इन द ईवनिंग।''

संकेत बैठने का इशारा कर इस बीच वाशरूम चला गया था। अंकल के मैसेज का संबोधन अटपटा सा था। मैंने मोबाइल के पिछले संदेश देखने चाहे पर वे डिलिट कर दिए गए थे कुछ तस्वीरें ज़रूर शेष थी। मैं उन्हें देखने लगा ... शायद राधिका रिसोर्ट की ही थी। अधिकांश तस्वीरों में अंकल और संकेत स्वीमिंग ड्रेस में ही थे। एक तस्वीर देखकर मैं रुक गया। कमरे के अंदर खींची गई सेल्फी थी। संकेत अंकल की गोदी में टॉप लेस लेटा हुआ था और अंकल सेल्फी ले रहे थे। इसी तरह की कुछ और तस्वीरें भी थीं।

संकेत वाशरूम से आ गया तो उसको मोबाइल वापस करते हुए मैंने पूछा - ''भैया, शाम को आपकी अंकल से बात हुई।''

''हाँ ... लगभग दस मिनट तक हमारी बात हुई।''

''कुछ न कुछ गड़बड़ है भैया, आज दोपहर में मैंने अंकल को मॉल में देखा था, एक लड़के के साथ।''

''ऐसा कैसे हो सकता है ... तुम्हें गलतफहमी हुई है।''

''भैया, मैं उस लड़के को जानता हूँ ... उसका नंबर भी है मेरे पास .. . आप उसे फोन लगाकर पूछ लो पर अपना नाम नहीं बताना।''

मैंने संकेत को अश्विन का नम्बर दिया। डायल करते ही आवाज़ आई - ''हैलो, कौन?''

''मैं अमृतसर से एम.एस. खत्री का भतीजा बोल रहा हूँ ... अंकल आपसे मिलने गए हैं, उनका फोन नहीं लग रहा है, क्या उनसे बात हो पाएगी?''

''खत्री अंकल नहीं ... नहीं। मेरे अंकल का नाम तो ए.एस. खन्ना है, वह आए थे ... दो दिन तक मैं उनके साथ ही था ... आज शाम को सात बजे वापस चले गए हैं, वह।''

''देखो समीर ... मैंने कहा था ... तुम्हें कोई गलतफहमी हुई है ... जिससे बात हुई है उसके अंकल का नाम ए.एस. खन्ना है। हो सकता है दोनों की फिजिक एक जैसी हो और तुम्हें धोखा हो गया हो।''

मैं चुपचाप अपने कमरे में आ गया। बिखरी किताबें, कॉपीज, होमवर्क-शीट्स, पेन, पेंसिल, कपड़े समेटते हुए दिमाग में लगातार खत्री अंकल, संकेत, अश्विन और खन्ना अंकल के चेहरे घूम रहे थे। खत्री और खन्ना ... खन्ना और खत्री, कैसी पहेली थी ये ... नहीं कोई पहेली-वहेली नहीं है ... न ही मुझे कोई धोखा हुआ है ... वह सौ फीसदी खत्री अंकल ही थे ... पर अश्विन के लिए वह खन्ना अंकल क्यूँ बन गए ... समझना कठिन नहीं था। कभी पोल खुली तो मामला दूसरे पर ठेला जा सके ... बहुत ही घृणित खेल, खेल रहे थे वह बच्चों के साथ। मैं समझ रहा था उनका खेल ... सब समझ में आने लगा था मुझे ... वह क्यूँ आते थे यहाँ और फिर बच्चों को उपहार देकर अपने माया जाल में फँसाते थे। पता नहीं कितने संकेत और अश्विन उनके चंगुल में हैं। उफ्फ ... मैं तो पागल हो जाऊँगा - ''मुझ पर भी नज़र थी उनकी ... क्या करूँ मैं, संकेत तो विश्वास ही नहीं कर रहा ... अश्विन भी नहीं करेगा ... चित्रा को बताऊँ ... नहीं ये उसको बताने लायक नहीं है ... बताना तो पड़ेगा ... हमने तय किया है कि हम आपस में कभी कुछ नहीं छुपाएँगे ... ठीक है बाद में बता दूँगा, जब लौट के आऊँगा ... पर मैं क्यूँ इतना दिमाग खपा रहा हूँ? क्या ज़रूरी है हर बात में टाँग अड़ाना? भूल जाओ और अपना सामान समेटो ... सुबह जल्दी उठना है, चित्रा को स्टेशन पर सी-ऑफ करने जाना है फिर मुझे भी तो निकलना है। खन्ना और खत्री में उलझे रहोगे तो रात ऐसे ही बीत जाएगी समीर प्यारे।''

13

घर में रहने का आनंद ही अलग है। समय बड़ी तेजी से भागता है। ग्यारह हफ्ते ऐसे फुर्र हो गए कि कोटा जाने का समय आ गया। पर इस बीच अनेक सुखद बातें भी हुई। छुटकी ने पहली बार नब्बे पर्सेंट से ज्यादा नंबर स्कोर किए। उसे सातवीं में 92% अंक मिले। इसके पहले वह सत्तर पर्सेंट पाकर भी उड़ती रहती थी। पापा की शुगर और ब्लड प्रेशर भी कंट्रोल में रहने लगे थे ... सबसे बड़ी बात ... उनकी टमी भी काफी हद तक फ्लैट हो गई थी और वह युवा लगने लगे थे। मम्मी उन्हें छेड़ती भी थी कि जब से बेटा कोचिंग में फर्स्ट आया है आपकी तोंद अंदर जाने लगी है। आई.आई.टी. में एडमिशन कराने जाने पड़ेगा तो अभी से तैयारी चल रही है आपकी भी। सही भी है स्मार्ट बेटे का बाप भी स्मार्ट होना चाहिए। मम्मी तो सदाबहार हैं ही, कभी न थकने वाली, अपार ऊर्जा की स्वामिनी। परीक्षा के बाद मिले समय में हम तीनों दोस्तों, आबिद, नवीन और मैंने खूब मस्ती की, तालाब में स्वीमिंग सीखी, डेरा पहाड़ी तक रोज साइकिलिंग की और महाराजा कॉलेज के ग्राउंड पर बास्केटबाल खेली।

मेरे आने से तीन दिन पूर्व आबिद का बर्थ डे था। उसने आजतक कभी केक काटकर बर्थ डे नहीं मनाया था। उसकी अम्मी को पटाकर इस बार हमने उसका बर्थ डे भी खास तरीके से सेलिब्रेट किया। आंटी के हाथ की सेंवई और मैंगो केसर कुल्फी हम कई बार खा चुके थे। इस बार हमारी फरमाइश पर उन्होंने इनके अलावा वेज बिरयानी, शाही पनीर और रुमाली रोटियाँ बनाई थी। मैं और नवीन उस रात आबिद के घर पर ही रुक गए। पहले सबने दहला पकड़ खेला फिर अंताक्षरी। जब आंटी सोने चली गई तो हम तीनों भी एक ही बिस्तर पर पसर गए। मुझे बहुत कुछ कन्फर्म करना था दोनों से, शरीर में हुए परिवर्तन का जीव-विज्ञान समझना था ... प्रेम क्या है? कैसा लगता है किसी के प्रेम में? यह जानना था। मुझे पता था दोनों के किस्सों के बारे में ... पर पहले कभी बहुत ज्यादा जानने की उत्सुकता नहीं हुई थी। क्या उन्हें भी कुछ अलग सा फील होता है? बातों को घुमाकर पूछना मुझे आता नहीं, इसलिए सीधे ही पूछ लिया - ''प्यार क्या है?''

"कौन सा प्यार, माँ-बेटे का, भाई-बहिन का या आदम-हव्वा का।" - आबिद ने हमें ऐसे देखा जैसे उसने बहुत विद्वतापूर्ण बात की हो।

"ये तीनों ही नहीं ... वह प्यार, जिससे दिल में हरसिंगार खिलने लगें, मन मयूर सा नाचने लगे, साँसें चंदन सी महकने लगें, आँखों में नींद की जगह चाँद उतरने लगे, सभी शिराओं में ऊर्जा का संचार होने लगे ..."

मेरी बात पूरी हो पाती इससे पूर्व ही दोनों बोल पड़े - "अरे ... अरे ... बस भी कर, कोई लफड़ा चल रहा है तेरा, तो बता भाई"

"लफड़ा-वफड़ा कुछ नहीं है ... मैं जानना चाहता हूँ क्या तुम लोगों को भी कुछ-कुछ ऐसा ही फील होता है?"

"भाई, तू तो मजनू से भी बड़ा वाला आशिक हो गया है ... रहम आ रहा है तुझे देखकर ... अच्छा भला गया था, ये क्या बनकर आ गया।"

"प्लीज़ यार, आई एम सीरियस ... मजाक नहीं ... क्या यही प्रेम है जो एक स्त्री और पुरुष के बीच होता है? कुछ तो बताओ?"

दोनों मेरी ओर देख रहे थे। नवीन बोला - "देख मुझे नहीं पता कुछ ... इस आबिद से पूछ ... इसकी थोड़ी-थोड़ी मूँछ भी आ गई है ... और तू तो भूल ही जा ये सब ... अभी तक बच्चा लगता है ... किसी लड़की से प्रेम की बात करेगा तो वह बच्चा समझ के पप्पी ले लेगी।"

नवीन की बात सुनकर आबिद हँसने लगा। मैं चुप हो गया। कुछ देर बाद नवीन ने मेरे सिर पर हाथ फेरा - "अच्छा ये बता ... तूने इतनी बड़ी-बड़ी शायरी-नुमा बातें किससे सीखीं ... चित्रा से ... तो उसी से पूछना, प्यार क्या है ... उसकी तस्वीर तो दिखा यार, कैसी है वह ... जिसने हमारे दोस्त को दीवाना बना दिया है।"

हमने ढेर सारी बातें की, इसी तरह बेसिर-पैर की ... एक-दूसरे को छेड़ा, आबिद और मेहर के संबंधों पर चुटकी ली, शिल्पा को लेकर नवीन की खिंचाई की, लेकिन मेरी जिज्ञासा का हल नहीं निकल सका। मेहर, आबिद की खाला की लड़की है। आबिद ने स्वयं कभी बताया था कि मेहर का जन्म होते ही खाला ने मेरी अम्मी से मुझे माँग लिया था।

कोटा पहुँचने पर शुरु के दो दिन अपेक्षाकृत कम व्यस्तता के रहे। क्लासेस केवल दो बजे तक ही लगीं। चित्रा लंच में आलू पराठे लेकर आई थी। पहला

निवाला वह हमेशा अपने हाथ से ही खिलाती थी आज मैंने ये क्रम बदल दिया। उसने तुरंत नोटिस किया - "लगता है इस बार बच्चू बड़ा होकर आया है।"

"और क्या ... देखो मेरे बाल भी आ गए हैं।"

चित्रा ने मेरे चेहरे पर आँखें गड़ा दी, कुछ देर तक अपलक देखती रही, फिर मेरी ठोड़ी पकड़कर बोली - "मुझे तो नहीं दिख रहे हैं, ... अन्दर हों तो मुझे क्या पता।"

"चल हट्ट ... बहुत गंदी हो तुम, कैसी वल्गर बात करती हो।"

"गंदगी तुम्हारे दिमाग में है बच्चू ... मैंने ऐसा क्या गलत कहा ... बहुतों के पेट में दाढ़ी होती है कि नहीं" - चित्रा शरारतपूर्ण ढंग से हँसी - "अच्छा मान ले, तूने जो समझा है वही सही है ... बोल क्या उत्तर है तेरा।"

मैं चुप रहा।

"शर्मा गया न और कहता है कि बड़ा हो गया हूँ ... कोई लड़का ये बात कहता, तब भी क्या तू इसी तरह रिएक्ट करता!" - चित्रा ने पुनः छेड़ा।

"लड़कों की बात अलग है।"

"मतलब तू भी लड़कों और लड़कियों को बराबर नहीं समझता।"

"अरे ये क्या बात हुई ... बस मैं इतना जानता हूँ कि लड़कियों को ऐसी बात नहीं करनी चाहिए।"

"तो फिर तू उस दिन मेरे लिए व्हिस्पर का पैकेट लेकर क्यूँ आया था।"

"तो क्या मैं तुम्हारा मजाक बनता देखता सबके सामने।"

"तुझे इतनी फ़िक्र है मेरी ... मरजावाँ यार तुझ पर।"

"ये ठीक है ... इतना चलेगा।"

"तू सयाना तो हो गया है कुछ-कुछ ... अब चाहे गंदा कह या कुछ और ... तुझसे जाने बिना नहीं रहूँगी कि तेरे अंदर क्या-क्या होता है।"

"धत्त ... नहीं बात करता तुमसे ... मुझे भूख लग रही है जोर से, चुपचाप खाने दो।"

मुझे आश्चर्य हो रहा था, अपने दोहरे व्यक्तित्व पर। चित्रा की बातों को गंदा बोल रहा था, पर मजा भी आ रहा था। इच्छा हो रही थी उसका हाथ पकड़कर चूम लूँ ... पर उसके अनुसार फट्टू हूँ न ... हिम्मत ही नहीं हुई।

घर आया तो सीधे अंकल के कमरे में चला गया। अंकल टेबल पर बैठकर कुछ लिख रहे थे, मैंने उनको डिस्टर्ब करना उचित नहीं समझा। उनकी लायब्रेरी

में रखी पुस्तकों को देखने लगा। दिमाग में प्रेम का कीड़ा कुलबुला ही रहा था, पर इस विषय पर कोई पुस्तक नहीं दिखी वहाँ। अंकल की एक पुस्तक निकालकर पढ़ने लगा। अरे वाह, क्या डूबकर प्रेम-गीत लिखे हैं अंकल ने। गोष्ठी में भी अंकल ने कितने सुंदर प्रेम गीत पढ़े थे, ध्यान हो आया मुझे। अंकल फ्री हो जाएँ तो पूछता हूँ उनसे - ''अंकल को बुरा तो नहीं लगेगा, कुछ गलत तो नहीं सोचेगें'' - मन ने कहा और तुरंत पलटकर जवाब भी दिया - ''बच्चू जानने के लिए व्याकुल भी हो और इतना सोच-विचार ... अंकल से बेहतर इस विषय को और कोई नहीं समझा सकता।''

आंटी उनके लिए चाय लेकर आईं थी। मुझे देखकर बोली - ''कुछ खाएगा! पालक की मठरी बनाई हैं, कुछ देर पहले।''

मैं खुद ही आंटी के पीछे-पीछे जाकर एक बाउल में मठरी लेकर आ गया। अंकल ने पास में बिठा लिया - ''यहाँ आकर उदास तो नहीं हो अब।''

''इतने दिन घर पर रहकर आया हूँ तो याद तो आती है घर की ... पर आप और आंटी के साथ सब जल्द ही नॉर्मल हो जाता है।''

''कौन सी पुस्तक पढ़ रहे थे वहाँ खड़े होकर।''

''आपका गीत-संग्रह है, मेंहदी वाले हाथ, एक साँस में दो-तीन गीत पढ़ गया ... बहुत अच्छे गीत हैं ... एक बात पूछूँ आपसे''

''हाँ पूछो''

पहले मैं दुविधा में था कि अंकल से कैसे पूछूँगा, पर अब मुझे अपनी बात पूछने का छोर मिल गया था। मैंने कहा - ''आप इतने सुंदर प्रेम-गीत लिखते कैसे हैं ... प्यार क्या है, आप इसे कैसे परिभाषित करेंगे?''

''जिस प्यार की बात इन गीतों में है ... वह प्यार की आलौकिक स्थिति है, प्यार की कोई बँधी-बँधाई परिभाषा नहीं है, हर परिधि, हर बंधन, हर परिभाषा से मुक्त होता है प्यार। तुमने अच्छा प्रश्न किया है ... इस उमर में ज़रूरी भी है प्रेम के बारे में समझ लेना। मोटे तौर पर प्रेम को दो तरह से डिफाइन कर सकते हैं ... एक आकर्षण और दूसरा आत्मिक। नयनों से दिल तक की यात्रा से उपजा प्रेम किसी के प्रति महज आकर्षण हो सकता है। इस प्रेम का आधार यौन-इच्छाओं की पूर्ति मात्र भी हो सकता है। इस तरह के प्यार में लोग दैहिक समर्पण को ज्यादा महत्व देते हैं और प्रतिबद्धता के महत्व को नकारते हैं। आत्मिक प्रेम मन से अन्तर्मन तक की यात्रा है। आपको प्रतीति होने लगती है कि कोई आपसे भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया है, उसको आप सबकुछ समर्पित करना चाहते हैं और बदले में कुछ नहीं चाहते ... ये प्रेम की सात्विकता का चरम है।'' कहते-कहते अंकल कुछ देर रुके, शेष चाय समाप्त की और फिर बोलने लगे - ''प्रेम शब्द में एक अजीब सी मिठास है, एक अजीब सा सौंदर्यबोध है, एक अजीब सी ऊष्मा है। प्रेम जीवन का आधार है और पूर्णता भी। बिना प्रेम के कोई इंसान पूर्ण नहीं होता। जीवन की पथरीली राह में सबसे सुखद अनुभूति है प्रेम, मानवीय भावों की उत्कृष्टता है प्रेम, साहचर्य की अनुपम परिणति है प्रेम।

''अंकल, एक प्रश्न और मन में आ रहा है ... आपने कहा कि हर परिधि, हर बंधन, हर परिभाषा से मुक्त होता है प्यार ... प्यार हर बंधन से मुक्त कैसे हो सकता है, प्यार तो हमें बाँधता है।''

''तुमने बहुत समझदारी का प्रश्न किया है ... परिधि से मुक्ति का मतलब है ... प्यार को किसी सीमा यानि कि जात-पाँत, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब, गोरे-काले में नहीं बाँधा जा सकता ... प्यार की परिधि असीम है, जिसका कोई ओर-छोर नहीं है। बंधन का आशय भी मोटे तौर पर यही है ... धर्म की सीमाएँ भी प्यार को नहीं बाँध पाती ... धर्म के मूल में भी प्यार अंतर्निहित है। तुमने सही कहा कि प्यार तो बाँधता है ... वह विघटन नहीं करता, वह केवल जोड़ता है, चाहे वे रिश्ते हों, परिवार हो, समाज हो, राष्ट्र हो ... यदि इन स्थानों पर प्रेम नहीं होगा तो सब बिखर जाएगा। रही परिभाषा की बात ... हम विज्ञान के विद्यार्थी हैं, परिभाषा किसी स्थूल वस्तु की हो सकती है, जिसके गुण और अवगुणों की व्याख्या की जा सकती है पर प्यार तो एक भाव है, जिसका कोई निर्धारित आकार नहीं है, इसलिए वह परिभाषा से परे है।''

अंकल ने सहज शब्दों में प्रेम को परिभाषित किया था। मैं जो जानना चाहता था, उसका उत्तर मुझे मिल गया था। प्रेम की जिस सात्विकता की बात अंकल ने की थी, वह अवचेतन मन में शुरु से विद्यमान है, ये महसूस होने लगा था ... यही कारण है कि चित्रा को लेकर कभी कोई गंदे विचार मेरे मन में नहीं आए। उसकी छुअन में आह्लादित करने वाला विद्युतीय आवेश ज़रूर है, लेकिन स्नायुओं में उत्तेजना भरने वाली करेंट का प्रवाह कभी महसूस नहीं हुआ। चित्रा तो अपने मन की निर्मलता का सबूत अनेक बार दे ही चुकी है। उसका मेरे प्रति लगाव, समर्पण की भावना और हर मुसीबत में मेरे साथ खड़े रहने का जज्बा प्रेम की इसी पवित्रता की वजह से है। अंकल का यह कथन कि ''जिससे आप

प्यार करते हो उसको आप सबकुछ समर्पित करना चाहते हैं और बदले में कुछ नहीं चाहते।'' चित्रा पर सटीक बैठता है। वह मुझे पहले स्थान पर देखकर सबसे ज्यादा खुश हुई थी। मैं उसके लिए उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया हूँ। कुछ दिनों बाद अचानक उत्पन्न हुई एक परिस्थिति ने उसका यह रूप भी और अधिक मुखरता और स्पष्टता से सामने ला दिया, जिसकी कल्पना कर पाना भी मुश्किल था।

हमारे सीनियर बैच का जी-मेंस का रिजल्ट आया था। कुल 57 स्टूडेंट्स ने एडवांस के लिए क्वालिफाई किया था। मैं क्लास रूम से बाहर निकलकर मेन गेट के पास चित्रा का इंतजार कर रहा था। वह कुछ सीनियर्स को बधाई देने में व्यस्त थी। इसी बीच पता नहीं विपुल सोलंकी कहाँ से सामने आ गया, और मेरा हाथ पकड़कर बोला - ''चिकने, अब तो बात मान जा मेरी ... कल जा रहा हूँ यहाँ से।''

मैंने उसका हाथ जोर से झटका और चिल्लाया - ''ये क्या बदतमीजी है सोलंकी'' और तभी एक जोर का तमाचा सोलंकी की गाल पर पड़ा - ''हरामखोर ... उससे क्या माँगता है, मैं तेरे सामने खड़ी हूँ ... तेरी अम्मा ... बोल क्या चाहिए ... मैं देती हूँ''

चित्रा गुस्से से उबल रही थी। सोलंकी भाग खड़ा हुआ था। मैंने चित्रा के कंधे पर हाथ रखा और उसे एक तरफ ले गया। वह मेरा हाथ थामते हुए रुँधे गले से बोली - ''थैंक्स समीर ... तुमने मुझे निराश नहीं किया, ठीक जवाब दिया उस कमीने को ... साला शादी के बाद अपनी बीबी को भी अब बहिन जी कहके बुलाएगा!''

हम दोनों चुपचाप चलते हुए बहुत दूर तक निकल आए। मैंने ही कहा - ''तुमने खुद को खतरे में डालकर मेरा साथ दिया ... तुम्हें किस तरह थैंक्स बोलूँ, आज तुम्हारे कारण मैं अपने डर पर विजय पा सका। मुझे अच्छा फील हो रहा है।''

''रहने दे पगले ... तुझसे ज्यादा खुश तो मैं हूँ इस बात पर ... अब तू किसी की रहम पर नहीं है अपने दम पर गलत बातों से लड़ सकता है ... अच्छा तू निकल मैं भी घर जाती हूँ अब।''

''नहीं, तुम अकेली नहीं जाओगी आज, मैं चलूँगा तुम्हारे साथ'' - मैंने कहा। उस समय मुझे अंदर कहीं यह डर सता रहा था कि चित्रा को अकेले पाकर कहीं वह सोलंकी का बच्चा परेशान न करे।

चित्रा ने शायद भाँप भी लिया था कि मैं क्यों उसके साथ जाना चाहता हूँ, किंतु उसने जाहिर नहीं किया। उसे छोड़कर जब मैं लौट रहा था, तो उसने हाथ पकड़कर कहा था - ''बच्चे ने आज से जिम्मेदारी निभाना भी सीख लिया ... थैंक्स डियर''

14

कोचिंग का दूसरा साल अति महत्वपूर्ण था। मैंने और चित्रा ने डिसाइड किया था कि जी जान से तैयारी करना है और व्यर्थ के किसी लफड़े में नहीं पड़ना है। जहाँ तक संभव हो हर लफड़े से स्वयं को दूर रखना है। पिछले साल हमने अंतिम समय में अपनी तैयारियों को परखने के लिए टॉपर लर्निंग्स डॉट काम पर रजिस्टर कर लिया था तथा कुछ प्रैक्टिस टेस्ट्स, डायग्नोस्टिक टेस्ट्स, और मॉक टेस्ट्स में भाग भी लिया था। मॉक टेस्ट्स में हम 65-70% के बीच में स्कोर कर पा रहे थे, जिसे बढ़ाकर हमें 90% से ऊपर ले जाना ज़रूरी था, अच्छी रैंकिंग के लिए। प्रैक्टिस टेस्ट्स में विषयवार खुद को परखने की सुविधा मिली हुई थी। मैं केमिस्ट्री में बहुत अच्छा स्कोर कर रहा था, गणित में औसत से अच्छा था, लेकिन फिजिक्स में कमजोर पड़ रहा था। चित्रा फिजिक्स और गणित दोनों में ही अच्छा स्कोर कर रही थी जबकि केमिस्ट्री उसकी कमजोरी थी। प्रतिदिन हम किसी विषय पर एक्सपर्ट से पाँच प्रश्नों का उत्तर समझ सकते थे। हम दोनों ने हर दिन एक-दूसरे से डिस्कस कर अपने हिस्से के पाँच प्रश्नों के उत्तर पूछने का निर्णय लिया था और फिर बाद में आपस में शेयर कर अपनी कमियों को दूर करने का प्रयास करना था हमें। हम सफल भी हो रहे थे अपने प्रयासों में। ''जी'' के साथ-साथ हमें बारहवीं की परीक्षा में भी अच्छे अंक लाने थे। शिवमूर्ति सर ने हमें इस ओर भी ध्यान देने के प्रति सचेत किया था, क्यूँकि कैंपस रिक्रूटमेंट ड्राइव के दौरान अनेक बड़ी कंपनियाँ दसवीं से लेकर थ्रू आउट 75% की अनिवार्यता रखती हैं।

दो माह बीत गए थे। हम पिछले वर्षों के जी-मेंस और जी-एडवांस के पेपर भी सॉल्व कर अपनी तैयारी परखते हुए आगे बढ़ रहे थे। क्लास-रूम टेस्ट्स में हमारा प्रदर्शन पहले जैसा ही था ... कभी मैं और कभी चित्रा पहले स्थान पर आ रहे थे। हम विचलित करने वाली बाहरी घटनाओं से भी खुद को दूर रखने

में सफल हो रहे थे। हमने ऋषि सर और वनिता के बीच अफेयर के अनेक किस्से पिछले साल सुने थे पर इस बार ये सुनकर भी हम दोनों निर्विकार ही रहे कि माउंट आबू में वनिता ने एबॉर्शन कराया है, और इसी कारण वह मेंस का एग्जाम ही नहीं दे सकी। ऋषि सर ही उसे वहाँ लेकर गए थे। इंस्टिट्यूट के मैनेजमेंट ने अपनी प्रतिष्ठा की खातिर चुपचाप ऋषि सर से इस्तीफा ले लिया था और उन्होंने हाथों-हाथ दूसरा संस्थान ज्वाइन कर लिया था। सुनकर देवयानी पाण्डा को धक्का लगा, लेकिन उसने खुद को शीघ्र ही संभाल लिया। अब वह क्लास में चित्रा के पास बैठने लगी थी और पढ़ने के प्रति सीरियस हो गई थी। वनिता दुबे के बारे में कोई जानकारी नहीं मिल सकी ... कोई कहता कि घर चली गई है तो कोई कहता मानसिक रूप से विक्षिप्त हो गई है और ग्वालियर मेंटल हॉस्पिटल में भर्ती है।

हमने भले ही सोच रखा था कि किसी चक्कर में उलझना नहीं है, मन को स्थिर रखते हुए हर स्थिति में अविचलित रहना है, पर क्या ऐसा होना संभव होता है ... जो सोचा है उसी हिसाब से परिस्थितियाँ भी निर्मित होती रहें। उस दिन शाम को जब घर पहुँचा तो अंकल और आंटी बहुत अधीर लग रहे थे। आंटी सोफे पर बैठी हुई थीं और अंकल धीरे-धीरे कमरे के अंदर चहलकदमी कर रहे थे। आंटी का चेहरा मलिन हो रहा था, जैसे बहुत देर तक रोती रहीं हो। मैं डरते-डरते आंटी के पास जाकर उनके पैरों के नजदीक बैठ गया - ''क्या हुआ आंटी?''

आंटी ने मेरा सिर अपनी गोदी में रख लिया, बोली - ''बहुत बुरा हुआ ... बिल्कुल टूट गया है बेचारा'' कहते-कहते आंटी की आँखों से पुनः जलधार बहने लगी।

''क्या बुरा हुआ, कौन टूट गया है?'' - मेरी अधीरता बढ़ती जा रही थी।

''संकेत के पिता ने आत्महत्या कर ली ... संकेत का फोन आया था। - इस बार जवाब अंकल ने दिया। आंटी आँचल से आँसू पोंछते हुए सुबकती जा रहीं थी।

सुनकर मुझे भी रोना आ गया। संकेत का चेहरा सामने घूम गया, रोता हुआ, बदहवास सा। मैं उसे बड़े बाप का बिगड़ैल लड़का समझता था, लेकिन वह समय का सताया हुआ था ... जाते समय न बोलकर भी बहुत कुछ बता गया

था ... न उसने संभलना चाहा और न समय ने उसको संभलने का अवसर दिया।

''अंकल ऐसा क्या हो गया जो उनको इतना भयंकर कदम उठाना पड़ गया।''

''मुझे भी बहुत आश्चर्य हुआ सुनकर ... वह कर्ज से लदे हुए थे। संकेत की कोचिंग के लिए उन्होंने स्थानीय साहूकारों से दस लाख का कर्ज लिया था ... प्रायवेट स्कूल में मास्टर थे तो बैंक ने इतना लोन देने से मना कर दिया था। संकेत से बहुत आशाएँ थी उनको, तीन साल में भी जब संकेत कुछ हासिल नहीं कर सका तो टूट गए। पिछले चार महीनों से साहूकारों के तकाजों ने जीना मुश्किल कर रखा था। लड़की के विवाह की चिंता ने आग में घी का काम किया ... उन्हें मरना ही सबसे आसान तरीका लगा मुक्ति पाने का।''

किसी के मन को पढ़ पाना दुनिया का सबसे कठिन काम लगता है मुझे। किसी के रहन-सहन, उठने-बैठने, बोल-चाल के तरीके से उसका पारिवारिक बैकग्राउंड जान पाना तो और भी कठिन है। जिस तरह के मँहगे-मँहगे ब्रांडेड कपड़े और गैजेट्स संकेत के पास थे, उनको देखकर कोई भी उसकी बदहाल आर्थिक स्थिति का अनुमान नहीं कर सकता था। मैं भी नहीं कर पाया था। उसका कैरियर तबाह करने के असली जिम्मेदार खत्री या खन्ना अंकल हैं, जिन्होंने उसके अबोध मन को मँहगे-मँहगे गिफ्ट देकर भ्रमित किया और उसने भी अपनी दमित इच्छाओं की पूर्ति हेतु आसान रास्ता चुन लिया। वह कभी समझ ही नहीं पाया कि इच्छाओं के पीछे भागने से इच्छाएँ सदा बढ़ती जाती हैं। सारी इच्छाएँ कभी पूरी होती ही नहीं। वह गलत राह पर इतना आगे बढ़ गया कि खुद का अहित सोचने की शक्ति भी क्षीण हो गई। खत्री अंकल पर उसका विश्वास इतना अटूट है कि उनसे शोषित होने के बाद भी खुद को कभी शोषित महसूस नहीं कर पाया और बहुत खुश नज़र आता रहा।

उसने मुझसे कभी भी संबंध मधुर रखने की पहल नहीं की। यह मैं ही था, जो भैया-भैया कहते हुए उससे बात कर लेता था। उसने तो मुझे भी अपनी राह पर धकेलने की तैयारी कर ली थी। यह मेरी खुशकिस्मती थी कि मैं झाँसे में नहीं आया, क्यूँकि मुझे किसी की चीजें देखकर न ललचाने की सीख बचपन से दी गई थी। मैं अपनी सीमाएँ जानता था, इसलिए इच्छाओं को नियंत्रित रखने में मुझे कभी कोई परेशानी नहीं हुई। कोटा छोड़ने से पहले आखिरी मुलाकात में वह

भावुक हो गया था ... अपने कृत्य के लिए उसने मुझसे दुख भी व्यक्त किया था ... मतलब जाते-जाते अपनेपन की झीनी सी डोर में बाँध गया था।

उसके पापा के बारे में सुनकर मुझे भी पीड़ा हुई थी। रूम में आकर संकेत को फोन लगाया - ''भैया, अभी अंकल से पता चला, ये सब कैसे हो गया।''

मेरी आवाज़ सुनकर संकेत रोने लगा। कुछ देर तक वह बोल ही नहीं सका। मैंने ही कहा - ''हिम्मत रखो भैया, आपको ही अब दीदी और आंटी का ख्याल रखना है।''

''मैंने अपने हाथों से अपनी दुनिया बर्बाद की है समीर ... मैं ज़िंदगी में कुछ नहीं कर पाया ... मैं बहुत बुरा हूँ।''

''ऐसा मत बोलो भैया ... आप सबकुछ कर सकते हैं ... आपने स्पोर्ट्स का काम शुरु किया था, अब तक सेट हो गया होगा।''

मेरी बात सुनकर संकेत फफकने लगा - ''मेरे साथ धोखा हुआ है ... यहाँ आने के बाद अंकल से कभी बात ही नहीं हुई मेरी। मैंने उन्हें पच्चीसों फोन लगाए पर उन्होंने एक बार भी बात नहीं की ... तुमने सही पहचाना था उनको ... मैं नहीं पहचान पाया। इसकी बहुत बड़ी कीमत चुकाई है मैंने ... ज़िंदगी भर अफसोस बना रहेगा।''

संकेत की बात सुनकर मुझे लेशमात्र भी आश्चर्य नहीं हुआ। अश्विन के साथ खन्ना अंकल के नए अवतार में देखने के बाद, खत्री अंकल की सारी असलियत मेरे सामने पहले ही आ चुकी थी, लेकिन संकेत को विश्वास धोखा खाने के बाद ही हुआ था। उनकी पहुँच से दूर हो जाने के कारण संकेत में उनकी कोई रुचि शेष नहीं बची थी और अश्विन के रूप में उनको नया मोहरा भी मिल गया था। कितना पहुँचा हुआ खुरापाती जीव है ये इंसान ... पता नहीं कितने भोले-भाले बच्चों के जीवन को नर्क बनाएगा।

संकेत की कहानी सुनकर चित्रा को भी दुख पहुँचा। खत्री और खन्ना ... एक व्यक्ति के दो चेहरे। उसे नंदिनी की चिंता सताने लगी। अजीब त्रिकोण था यह ... अश्विन, नंदिनी के साथ खेल, खेल रहा था और खन्ना, अश्विन के साथ। कुछ करना ज़रूरी है ... नंदिनी का अहित होते नहीं देख सकते ... चित्रा ने निर्णय सुनाया। वह एक बार अश्विन और नंदिनी को किस करते हुए आलिंगनबद्ध देख चुकी थी और दूसरी बार गौरी ने भी अश्विन को ऐसा करते

हुए देखा था। पर नंदिनी को कैसे समझाया जाए ... वह समझेगी क्या? इस उमर में हर बात उलटी लगती है। फिर क्या किया जाए?

टेस्ट्स की व्यस्तताओं में कुछ दिन निकल गए अतएव नंदिनी के बारे में सोचने का समय नहीं मिला। एक दिन अचानक डाउट-क्लीरेंस क्लास के दौरान नंदिनी को चक्कर आ गए और वह बेहोश हो गई। उसे हॉस्पिटल ले जाया गया तथा उसकी मम्मी को भी खबर कर दी गई। अश्विन उस दिन क्लास में नहीं आया था। गौरी, देवयानी, चित्रा और मैं हॉस्पिटल में बारी-बारी से उसकी देखभाल करते रहे। नंदिनी की सारी रिपोर्ट नार्मल आईं ... डॉक्टर का कहना था कि मानसिक तनाव के चलते ऐसा हुआ है। उसे एक सप्ताह तक समय पूर्ण आराम की सलाह दी गई। पटेल आंटी अगले दिन सुबह ही कोटा आ गईं ... वह अपने साथ ही नंदिनी को होटल ले गईं। हम तीनों, मैं, चित्रा और गौरी उनको होटल तक छोड़ने गए। होटल पहुँचकर मैं चौंका ... अरे ये क्या? ये तो वही होटल है, होटल मधु श्री, जहाँ संकेत के साथ मैं खत्री अंकल से मिलने आया था। पटेल आंटी को भी यही होटल पसन्द आया रुकने के लिए। अजीब इत्तफाक है। कुछ देर रुककर हम अगले दिन दोपहर में आने का कहकर वापिस आ गए।

अगले दिन मैं और चित्रा होटल पहुँचे तो नंदिनी पलंग पर टिककर बैठी हुई थी ... पहले से काफी स्वस्थ दिख रही थी। कुछ ही देर में परेशान सा अश्विन आ गया। चित्रा ने देखते ही पूछा - ''परसों से कहाँ गायब हो अश्विन''

''अंकल आए थे तो उनके साथ उदयपुर जाना पड़ गया ... कुछ देर पहले लौटा तो पता चला कि नंदिनी बीमार है'' - अश्विन ने सफाई दी।

''कौन ... खन्ना अंकल'' - मेरे मुँह से निकल गया।

''हाँ, तुम जानते हो उन्हें'' - अश्विन ने प्रश्नवाचक निगाहों से मुझे देखा।

''वो तो इसी होटल में रुकते हैं न'' - मैंने अश्विन की बात पर ध्यान न देते हुए कहा।

''हाँ ... वह रूम में आराम कर रहे हैं''

''तो तुम अंकल से हमें नहीं मिलवाओगे, बुला लाओ उन्हें यहीं, नंदिनी से भी मिल लेंगे'' - इस बार चित्रा बोल पड़ी।

दस मिनट बाद अश्विन अंकल को साथ लेकर आया। अंकल मुझे और पटेल आंटी को देखकर चौंके तो पटेल आंटी और नंदिनी भी उन्हें देखकर। चित्रा हम सबको बारी-बारी से देख रही थी। अश्विन एक ओर निर्विकार खड़ा था।

''आप यहाँ!'' - पटेल आंटी ने अंकल की ओर देखते हुए पूछा। उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया और नंदिनी के सिर पर हाथ फेरते हुए कमरे से निकल गए। अश्विन पीछे-पीछे गया। चित्रा और मैं हतप्रभ थे। दिमाग ने काम करना बंद कर दिया था।

''आंटी, आप अश्विन के अंकल को जानती हैं'' - चित्रा ने कमरे में पसरा मौन तोड़ा।

''मेरे एक्स-हस्बैंड हैं वे ... तेरह साल पहले हमारा तलाक हो चुका है ... उस समय नंदिनी चार साल की थी।''

''ओह! ... सॉरी आंटी, अंकल का नाम क्या है, क्या करते हैं अंकल, क्या उन्होंने दूसरी शादी नहीं की।''

''दर्शन भाई पटेल, ज्वेलरी का पारिवारिक बिजनेस है ... आजकल क्या करते हैं, शादी की या नहीं इसकी जानकारी नहीं है ... तलाक के बाद पहली बार मुलाकात हुई है आज।''

पटेल आंटी की बात हमारे लिए आघात थी। कितने नामों के मास्क लगाकर घूम रहा है यह व्यक्ति ... खत्री, खन्ना और अब पटेल। पता नहीं कोई और नाम भी सामने आ जाए।

''आंटी और नंदिनी, आप दोनों से मैं पहले ही माफी माँगती हूँ ... आपको बताना ज़रूरी है कि ये व्यक्ति बहुत बड़ा फरेबी है, पता नहीं कितनों की ज़िंदगी बरबाद कर चुका है।'' - चित्रा ने कहा। उसका मन बड़ा अशांत था।

''जानती हूँ चित्रा बेटी ... हमारे तलाक की प्रमुख वजह भी उनकी आशिक-मिजाजी थी।''

''हमें नंदिनी से बात करनी है आंटी ... उसकी तबियत आगे न बिगड़े, इसलिए हमारा बात करना ज़रूरी है ... पर हम आपके सामने सारी बातें नहीं कर सकते।''

''हाँ ... मैं कैफेटेरिया में बैठती हूँ और तुम लोगों के लिए कुछ भिजवाती हूँ।''

''थैंक्स आंटी''

आंटी के बाहर जाते ही चित्रा ने नंदिनी का हाथ पकड़कर सहलाते हुए कहना शुरु किया - ''नंदिनी जो बात मैं तुम्हें बताने वाली हूँ उससे हो सकता है तुम्हें तकलीफ़ हो ... तुम्हें अपने को संभालना होगा ... यदि मैं अभी नहीं बताऊँगी तो हो सकता है देर हो जाए।''

''बोलो चित्रा ... मैं तुमको इन दो-तीन दिनों में बहुत अच्छे से जान चुकी हूँ ... मुझे तुम पर विश्वास है।''

''अश्विन तुमसे सेक्स का फेवर चाहता है न, प्लीज़ हमसे छुपाना मत ... हमारी इतनी ही रिक्वेस्ट है कि तुम खुद को बहकने मत देना। समीर को देखो, मेरा बहुत अच्छा दोस्त है, किसी बात का परदा नहीं है हमारे बीच, हम एक-दूसरे के गले भी मिलते हैं, बिंदास हाथ में हाथ डालकर घूमते हैं, लेकिन किसी मर्यादा का उल्लंघन आजतक किसी ने नहीं किया ... बल्कि इस बारे में सोचा तक नहीं। समझ रही हो न मेरी बात को ... अश्विन को तुम्हें किस करते मैंने स्वयं देखा है ... गौरी ने सेक्स की बात करते सुना ... तुम्हें सुनकर धक्का लगेगा कि अश्विन स्वयं अंकल के साथ रिलेशनशिप में है'' - चित्रा रुक गई और नंदिनी के चेहरे के भावों को पढ़ने की कोशिश करने लगी।

अब धमाका करने की बारी नंदिनी की थी - ''मुझे पता है चित्रा ... उसके मोबाइल में मैंने पापा के साथ उसकी सेल्फी देखी थी, मैंने पूछा था, कौन हैं? तो उसने बताया था अंकल हैं। जब मैंने उससे कहा कि ये मेरे पापा सरीखे लगते हैं, तो वह मेरी ओर देखने लगा था। उसके कुछ दिनों बाद से ही वह मुझसे सेक्स का फेवर माँगने लगा। मैं उसे चाहने लगी थी ... उसका किस करना भी मुझे बुरा नहीं लगता था ... पर सेक्स ... मैं तैयार नहीं थी इसके लिए ... इसकी कल्पना भी नहीं की थी मैंने।'' - नंदिनी की आँखों में आँसू झिलमिलाने लगे थे।

''नंदिनी प्लीज़ ... संभालो अपने को ... मुझे लगता है कि अश्विन के साथ जो गलत हो रहा है वह उसका बदला उनकी बेटी से लेना चाहता है।''

चित्रा की बात सुनकर नंदिनी फफक पड़ी - ''सही कहती हो चित्रा ... अश्विन की इस माँग के बाद मैं कभी ठीक से सो नहीं सकी ... सदा तरह-तरह के ख्याल आते ... इतने तनाव में रही कि बता नहीं सकती ... तबियत भी इसीलिए बिगड़ी मेरी।''

''जाने दो ... भूलने की कोशिश करो ... तुम्हें हम पर विश्वास हो तो अपनी परेशानियाँ शेयर कर सकती हो ... तुम जहाँ गलत लगोगी, तुमको करेक्ट करेंगे हम'' - चित्रा ने कहा - ''अश्विन, अंकल को कैसे जानता है, पूछा उससे कभी।''

''वह उनसे ट्रेन में मिला था ... पिछली दीपावली पर घर से वापस आते समय। पापा जालंधर से लौट रहे थे ... एक दिन वह उनके साथ दिल्ली में रुका भी था ... तभी की फोटो थी उसके मोबाइल में।''

''वह तो हर महीने यहाँ आते हैं, तो क्या अश्विन हर बार उनसे मिलने जाता है।''

''बता नहीं सकती ... पर पिछले तीन-चार माह से रेगुलर जा रहा है।''

''ओह'' - मैं मन-ही-मन में बुदबुदाया - ''संकेत के जाने के बाद से।''

''इस बीच तुमने उसमें कुछ और परिवर्तन महसूस किए।''

''वह पहले से ज्यादा सज-संवर कर रहने लगा था, स्टाइलिश कपड़ों और शूज के साथ ही उसने हाल ही में आई फोन लिया था।''

''ओह'' - चित्रा के साथ ही मेरे मुँह से भी निकला।

तभी अश्विन रूम में आ गया और दो प्लेट पनीर पकोड़े भी।

''अंकल कहाँ हैं, इतनी जल्दी क्यों चले गए यहाँ से'' - चित्रा ने पूछा उससे।

''उन्हें अचानक कुछ काम याद आ गया था ... वह होटल खाली कर दिल्ली लौट गए।'' - अश्विन ने बताया।

''अश्विन, तुम्हें क्या इतने बेवकूफ लगते हैं हम लोग ... तुम्हारे अंकल कौन हैं, सब जान गए हैं। वह क्यों यहाँ आते हैं, यह भी अब किसी से छुपा नहीं है। तुम्हें अंकल के साथ जैसे भी रिश्ते रखना हो रखो ... हम उसमें हस्तक्षेप नहीं करेंगे ... पर नंदिनी से दूर रहो ... तुम्हारी अनैतिक माँग के कारण वह जिस मानसिक तनाव से गुजरी है, उसने उसे बीमार बना दिया ... सो प्लीज़! अब उसके आस-पास भी नहीं फटकना।'' - चित्रा का चेतावनीयुक्त लहजा देख अश्विन सहम गया।

''चित्रा तुम क्या कह रही हो ... मैं और नंदिनी अच्छे दोस्त हैं, समीर और तुम्हारी तरह बस'' - अश्विन थोड़ी देर बाद हिम्मत सहेजकर बोला।

''मुझे जो कहना था कह दिया ... नंदिनी मेरी बहिन है, उसे परेशानी में नहीं देख पाऊँगी आगे, तुम समझ सको तो बेहतर है।'' - चित्रा का लहजा अब भी तल्ख था।

''चित्रा ठीक कह रही है, मुझे अपनी पढ़ाई पर फोकस करना है ... अतएव हमारा दूर रहना ही ठीक है ... तुम्हें पापा जैसा दोस्त मिल ही गया है, अब तुम्हें मेरी ज़रूरत ही क्या है।'' - नंदिनी बोली। उसके कटाक्ष की तिलमिलाहट अश्विन के चेहरे पर दिखाई देने लगी। वह बिना कुछ कहे कमरे से बाहर चला गया।

थोड़ी देर बाद आंटी भी कमरे में आ गईं। नंदिनी को हमसे खुशी-खुशी बातें करते देखकर आश्वस्त हुईं। रमेश वैष्णव सर नंदिनी को देखने आए थे। उनको वहाँ छोड़कर हमने आंटी से विदा ली।

15

जी-एडवांस का रिजल्ट आ गया था। हमारे इंस्टिट्यूट से 33 बच्चे सेलेक्ट हुए थे। अगले दिन सभी अखबार उनकी तस्वीरों से अटे पड़े थे। पिछले साल की तुलना में इस बार इंस्टिट्यूट से चार बच्चे ज्यादा पास हुए थे। टीचर और अन्य स्टाफ मेम्बर अपनी इस उपलब्धि पर खुश थे। जूनियर क्लास के बच्चे उनके बारे में जानने को उत्सुक थे। कौन किस प्रांत, किस जिले से है यह भी उत्सुकता का विषय था। मध्य प्रदेश से चार बच्चों ने क्वालिफाई किया था ... एक सागर, एक मण्डला और दो इंदौर। दो दिनों बाद अखबार में इंस्टिट्यूट से कुल सैंतीस सेलेक्शन होने की खबरें आने लगी। रिजल्ट में इस परिवर्तन पर वैसे तो मेरा ध्यान नहीं जाता, क्योंकि यह भूल सुधार जैसा था। परंतु जब मैंने छतरपुर के रतन लाल असाटी का नाम सूची में देखा तो चौंकना स्वभाविक था। उसे आल इंडिया में छयालीसवीं रैंक मिली थी व इंस्टिट्यूट में सबसे ऊपर। इंस्टिट्यूट के लिए ये गौरव की बात थी कि उसका एक स्टूडेंट पहले पचास में आया था, लेकिन इंस्टिट्यूट सबसे ज्यादा अंक लाने वाले अपने सबसे होनहार छात्र का नाम पहले दिन कैसे भूल गया, ये अचंभित करने वाली चूक थी। मुझे इंस्टिट्यूट में पढ़ते हुए एक साल से ज्यादा हो गया था, लेकिन छतरपुर से कोई सीनियर भी यहाँ कोचिंग ले रहा है, जान नहीं पाया था। अगले दिन मैंने और चित्रा ने उसके बारे में पूछताछ की, लेकिन किसी से कोई जानकारी नहीं मिल सकी।

रात में नवीन का फोन आया - ''यार, छतरपुर ने तो कमाल कर दिया ... अब तेरे पर भारी जिम्मेदारी आन पड़ी है, उसका रिकॉर्ड तोड़ने की।''

''क्या तुम जानते हो रतन असाटी को'' - मैंने उतावलापन दर्शाते हुए पूछा।

''नहीं ... पर दो दिनों से लोकल और प्रादेशिक चैनल पर वही छाया हुआ है। वह हर इंटरव्यू में तुम्हारे इंस्टिट्यूट का ही नाम लेता है और वहाँ के टीचर्स

की तारीफों के पुल बाँधता है।''

''किस स्कूल में पढ़ता था वहाँ ... कुछ पता है ... उससे मिलकर बात करो ... मुझे भी बात करना है उससे ... हमारे नगर का इतना जीनियस यहाँ रहकर गया और मुझे पता भी नहीं चल सका।'' मैं स्वभाविक रूप से निराशा महसूस कर रहा था।

''ठीक है भाई ... कल शाम को काल करता हूँ।''

थोड़ी देर में ही छुटकी का फोन आया - ''बधाई हो भैया ... छतरपुर के एक स्टूडेंट ने पूरे मध्य प्रदेश में दूसरा स्थान पाया है ... वह भी ग्लोबल से ही निकला है। कुछ देर पहले ही साधना न्यूज पर उसका इंटरव्यू सुना ... बहुत सकुचाते हुए बोल रहा था ... पर भैया, तुम अभी से इंटरव्यू की प्रैक्टिस करते रहना, नहीं तो बाद में रतन जैसे हकलाते हुए उत्तर दो ... सुनकर मुझे कितनी शर्म महसूस होगी।'' - मानसी ने हमेशा की तरह ठिठोली की।

''पगली, तू सुधरेगी नहीं ... ये बता किस स्कूल में पढ़ता था वो?''

''भैया वो छतरपुर लोकल का नहीं है ... बमीठा से बारहवीं पास की है, बहुत गरीब घर का है, फार्म भरने के लिए फीस भी नहीं थी उसके पास, टीचर्स ने चंदा करके फीस भरी थी ... उसकी बातें सुनकर रोना आ रहा था। मम्मी तो उसे पता नहीं क्या बोल रहीं थी ... गुदड़ी-सुदड़ी के लाल जैसा कुछ''

''रियल जीनियस है वो ... मुझे पता ही नहीं चला कि छतरपुर का कोई सीनियर भी यहाँ कोचिंग ले रहा है।''

''भैया, सब जानती हूँ ... सफाई मत दो ... चित्रा दीदी के चित्र बनाते रहोगे तो कैसे पता चलेगा!''

''बहुत मारूँगा छुटकी ... चल मम्मी को फोन दे, नहीं तो तू दिमाग खाती रहेगी।''

अगले दिन भी हमने रतन के बारे में जानकारी लेनी चाही। जितने भी सीनियर्स से पूछा सभी ने अनभिज्ञता जताई।

शाम को नवीन ने जो बताया उसे सुनकर लगा किसी ने धड़ाम से नीचे पटक दिया है ... सर्वथा अविश्वसनीय, सर्वथा अकल्पनीय। रतन इतने गरीब घर का है कि दो टाइम का खाना भी मुश्किल से होता है। उसके पिताजी गाँव के ठाकुर पिंटू भैया के यहाँ खेतों पर काम करते हैं ... दिन-रात खटने के बाद भी पूरी मजदूरी नहीं मिलती। उसने तो कोटा का नाम भी नहीं सुना वहाँ जाके

कोचिंग कैसे लेता। बहुत डरते-डरते बताया है उसने ... वादा करके आया हूँ किसी से नहीं बताऊँगा। जी-एडवांस का रिजल्ट आने के बाद किसी ने उससे सम्पर्क किया था और ग्लोबल इंस्टिट्यूट का नाम लेने के बदले में पचास हजार रुपए देने की पेशकश की थी। रुपयों की उसे कितनी ज़रूरत है तुम समझ सकते हो ... फिर भी वह तैयार नहीं हुआ था कि किसी चक्कर में न फँस जाए। उसे समझाया गया कि कुछ नहीं होगा। ग्लोबल में क्लास रूम कोचिंग के साथ ही करेस्पांडेंस और डिस्टेंस लर्निंग कोचिंग भी दी जाती है, तो उसका नाम करेस्पांडेंस कोर्स के साथ दिया जाएगा। यह सब गोपनीय रहेगा। उसे कुछ ट्यूटोरिल्स, पुराने साल्व्ड पेपर भिजवाए गए और अखबारों तथा टीवी पर क्या बोलना है सिखाया गया। तुम यह सब किसी को बताना मत, नहीं तो उसे परेशानी हो सकती है। वह गरीब लड़का है इंस्टिट्यूट वाले भी उसे खा जाएँगे।

ग्लोबल इंस्टिट्यूट पर मुझे बहुत गर्व था। टीचर बहुत कोआपरेटिव थे तथा हमेशा मदद करने को तत्पर रहते थे। रिजल्ट भी हर साल बेहतर हो रहा था, फिर एक प्रतिष्ठित छह साल पुराने इंस्टिट्यूट द्वारा भी ऐसा खेल, आखिर क्यूँ खेला गया, समझ में नहीं आ रहा था।

उस दिन डिनर के बाद अंकल के पास थोड़ी देर के लिए बैठ गया था। टीवी पर बिग बॉस चल रहा था ... तथाकथित सेलेब्रिटीज सड़क छाप लोगों की तरह तू-तू मैं-मैं कर रहे थे। अंकल कहने लगे - ''ये चैनल वाले भी टी.आर.पी. के चक्कर में क्या-क्या कारनामे करते हैं। दर्शकों को अपनी ओर खींचने के लिए कैसे-कैसे हथकंडे अपनाते हैं।''

तो क्या कोचिंग इंस्टिट्यूट्स का भी यही सच है? रतन लाल असाटी को अपने जाल में फँसाकर अपनी टी.आर.पी. बढ़ाने का खेल खेला है ग्लोबल ने। हो सकता है ... क्यूँकि अभी ग्लोबल न तो पेरेंट्स की और न ही बच्चों की पहली चॉइस का इंस्टिट्यूट था। पिछले तीन सालों से चौथी पायदान पर स्थिर हो गया था। अब अगले सत्र में वे शान से बता सकेंगे कि हमारे इंस्टिट्यूट का एक छात्र पहले पचास में आया है। हो सकता है इससे उनकी टी.आर.पी. बढ़ जाए ... बढ़ जाए क्या, बढ़ ही जाएगी। नया तरीका है ये अपनी कमीज को दूसरों से ज्यादा सफेद दिखाने का ... लोगों की आँखों में धूल झोंकने का। मेरी नज़र में उन्हें ये खटकरम करने की कोई ज़रूरत नहीं थी ... उनका रिजल्ट हर साल सुधर रहा था। पिछले साल नौ बच्चे पहले दो सौ में आए थे और उनको मनचाही

ब्रॉंच और कॉलेज मिले थे। फिर क्यूँ यह जल्दबाजी? क्यूँ आगे निकलने की हड़बड़ी? टीचर मन लगाकर पढ़ा रहे थे और हमेशा डाउट दूर करने को उपलब्ध रहते थे, लेकिन मैनेजमेंट को इन बातों से ज्यादा मतलब नहीं था। उन्हें तो पहली सीढ़ी ही दिखती थी कि कैसे भी और जितनी जल्दी हो सके उस पर जाकर विराजमान हो जाएँ। यह अनैतिकता थी, बेईमानी थी, पर कौन ध्यान देता है इन बातों पर। नाम तो याद नहीं है पर फेसबुक पर किसी ने लिखा था कि अधिकतर इंस्टिट्यूट केवल सपने बेचने का काम कर रहे हैं ... कोचिंग सेंटर्स किसी इंडस्ट्री की तरह चलाए जा रहे हैं ... इस इंडस्ट्री की ग्रोथ रेट चौंकाने वाली है। आज यह तीन सौ करोड़ की इंडस्ट्री है, कुछ वर्षों में चार सौ करोड़ की हो जाएगी। ढाई लाख बच्चे अपने सपनों को पूरा करने कोटा आते हैं, जिनमें से बमुश्किल दस-बारह हजार बच्चे ही मेन स्ट्रीम का एग्जाम पास कर पाते हैं। जो पास होते हैं, उनमें से बहुतेरे ब्रिलिएंट ही होते हैं, जो किसी भी शहर के किसी भी कोचिंग संस्थान से कोचिंग लेकर पास हो सकते हैं ... पर कोटा आकर कितने बच्चे डिप्रेशन का शिकार हो गए, कितने गलत रास्ते पर चले गए ... इसका कहीं कोई उल्लेख नहीं करता। इस पोस्ट को पढ़कर तब लगा था, किसी दिलजले का दर्द है ये ... पर अब उसमें कुछ सच्चाई नज़र आने लगी थी। इसी साल मेंस में करीब सैंतीस हजार बच्चे पास हुए, लेकिन एडवांस में यह संख्या एक तिहाई से कम रह गई। पूरे देश में दस लाख के करीब बच्चे मेंस में बैठे थे, जिसमें से सवा दो लाख बच्चों ने एडवांस के लिए क्वालिफाई किया था, मतलब पोने दो लाख से ज्यादा बच्चे दूसरे शहरों से निकले थे।

मैंने चित्रा को यह अंक गणित बताया तो वह बुरी तरह बिफर पड़ी - ''ओए, तेरी प्रॉब्लम क्या है ... सारी दुनिया की समस्याओं का ठेकेदार समझता है खुद को। तेरा मन पढ़ाई-वढ़ाई में नहीं लगता तो जा यहाँ से ... क्यूँ समय और पैसा बर्बाद कर रहा है'' - मुझे चित्रा से ऐसे रिएक्शन की उम्मीद नहीं थी। वह मेरी ओर देखते हुए आगे बोले चली जा रही थी - ''उनने क्या किया, क्यूँ किया, ये उनकी समस्या है, तुझे क्या लेना-देना है, उनकी समस्या को तू अपनी समस्या क्यूँ बनाना चाहता है ... तेरे पास और कोई काम नहीं है क्या, जो हरेक के फटे में टाँग अड़ाता है ... तेरे चिंता करने से स्थिति बदल जाएगी क्या? कुछ नहीं बदलेगा ... सब जानते हैं कि अच्छे रैपर में घटिया माल भी बिक जाता है ... मैंने दो साल तक गोरा होने वाली क्रीम लगाई, लेकिन नहीं हुई न गोरी,

सांवली ही रही आई न ... फिर ये इंस्टिट्यूट तो घटिया नहीं है, पहले पर न सही, तीसरे चौथे नम्बर तो है ही। यदि वे अपने इंस्टिट्यूट का नाम चमकाना चाहते हैं, तो तुझे क्यूँ परेशानी है ... भूल जा सब ... नहीं तो अवसाद में अपने दो-चार दिनों की पढ़ाई को ठिकाने लगा देगा, फिर नई चिंता लेके बैठ जाएगा।''

मैं चुपचाप सुनता रहा। वह चुप हुई तो भी कुछ बोलने की हिम्मत नहीं हुई। वह फिर शुरु हो गई - ''तुझे बुरा लगा ... तो लगे, मेरी बला से, तू नहीं सुधरने वाला, मैं तो चली।''

वह उठने लगी। वह अपना ब्रह्मास्त्र चला चुकी थी। उसे लगा कहीं मैं सचमुच ही ब्रह्मास्त्र की मार से ढेर न हो जाऊँ, मेरा हाथ पकड़कर बोली - ''चलो उठो ... तू जानता है, मैं तुझे छोड़ नहीं सकती, सो मुझे इमोशनली ब्लैकमेल कर रहा है, मेरी बात का जवाब न देकर ... अपुन महादेव मंदिर चलते हैं और वहीं बाबाओं के साथ धूनी रमाते हैं ... हो गई कोचिंग फिनिश अपनी ... अच्छा बता कौन सा बाबा बनेगा ... औघड़ या नागा ... तुझे दूसरों को नंगा करने का शौक है न ... अच्छा जमेगा नागा बाबा बनकर ... नंग-धड़ंग ... और मैं औघड़ बाबा बनूँगी मस्त-मलंग ... तू चिलम फूँकना और मैं मुर्दों की राख मलूँगी शरीर पर।''

मुझे उसकी बातें सुनकर हँसी आ रही थी पर मैं गंभीर बना बैठा रहा। कुछ देर शांत रहने के बाद पुनः बोली - ''बच्चू बहुत हो गया ... अब उठता है कि नहीं। मैं माफी-वाफी बिल्कुल नहीं माँगूगी ... ठीक है ... न उठ ... मैं भी यहीं बैठती हूँ।''

वह धम्म से बैठ गई और ऊपर देखकर गाने लगी - ''रूठा-रूठा समीर, मनाऊँ कैसे, रूठा-रुठा समीर ...''

''अरी बावरी हो गई क्या ... हमेशा तू मजे लेती थी, आज मैंने ले लिया ... पर इससे एक बात तो क्लियर हो गई कि जहाँपनाह के लिए कुछ स्पेशल फीलिंग है तेरे भीतर ... चलो इसी बात पर आज तुझे कुल्फी फालूदा खिलाता हूँ ... वैसे आज तेरा टर्न था, लेकिन जहाँपनाह मलिकाए आलिया से बहुत खुश हैं आज'' - मैंने उसका हाथ पकड़ा, वह झट से उठ गई, बोली - ''अब नया नाटक नहीं ... सॉरी बोलती हूँ बाबा।''

''माफ किया मेरी अम्मा ... अब चलो भी।'' और मैं खिलखिलाकर हँस दिया। उसने भी मेरा साथ दिया। हमारे बीच की केमिस्ट्री पानी के फार्मूले एच

टू ओ जैसी थी, हमारा अस्तित्व एक-दूसरे के बिना अर्थहीन है, ठीक वैसे ही जैसे पानी से आक्सीजन या हाइड्रोजन के निकल जाने पर पानी, पानी नहीं रहता।

16

पढ़ाई अच्छी चल रही थी। हर इंटरनल और डायग्नास्टिक टेस्ट के बाद स्कोर क्रमशः बढ़ता जा रहा था और कॉन्फिडेंस भी। दूसरे मॉक टेस्ट में भी मुझे अपेक्षा से अधिक नम्बर मिले थे। चित्रा मुझसे दो अंक आगे रही थी। चित्रा की डाँट ने जादुई असर किया था ... उसके बाद मैं किसी नए पंगे में इन्वॉल्व नहीं हुआ था, या यूँ कहें कि मन को भटकाने वाली बातों से मैंने सुरक्षित दूरी बना ली थी और केवल पढ़ाई पर फोकस कर रहा था। जब भी उल्टे-सीधे विचार मन में आते तो दो-तीन मिनट के लिए शवासन में लेट जाता और कोशिश करता कि निरर्थक विचार दूर ही रहें, आसपास भी न फटकें। मैं अपनी कोशिश में सफल भी रहता, रेफ्रेश फील करता। चित्रा और मैं नियमित रूप से अपनी-अपनी प्रॉब्लम्स डिस्कस करते। जिस प्रॉब्लम का हल हमें नहीं सूझता अगले दिन हम एक्सपर्ट से पूछने की सुविधा का लाभ लेते।

इंस्टिट्यूट भी हमारी तैयारियों को परखने के लिए तरह-तरह से हमारी परीक्षाएँ लेता रहता था ... कभी विषयवार प्रैक्टिस टेस्ट के रूप में तो कभी सैंपल पेपर सॉल्व करवाकर। डायग्नास्टिक टेस्ट्स और मॉक टेस्ट्स तो नियमित इंटरवल पर होते ही रहते थे।

इस बीच जो सबसे अच्छी बातें हुईं, वे थीं, नंदिनी का अपनी रैंकिंग में सुधार करना और इंस्टिट्यूट के अकैडमिक एक्सीलेंस अवॉर्ड फंक्शन में रतन लाल असाटी से भेंट होना। जब से नंदिनी ने चित्रा से दोस्ती का हाथ थामा था, वह अपनी पुरानी ज़िंदगी को पीछे छोड़कर तेजी से आगे बढ़ गई थी। चित्रा और मैं उसकी पूरी मदद कर रहे थे। अश्विन से उसका कोई सारोकार नहीं रह गया था।

अवॉर्ड फंक्शन में रतन लाल से मिलकर आत्मिक सुख की अनुभूति हुई थी। जब मैंने उससे कहा कि मैं भी छतरपुर से हूँ तो उसने मेरा नाम लेकर मेरा बढ़ा हुआ हाथ बहुत अपनत्व से अपने हाथ में ले लिया था। वह स्वभाव से बहुत ही शांत, शर्मीला और बहुत कम बात करने वाला था। इतनी बड़ी सफलता पाने के बाद भी उसकी बोल-चाल में जरा भी बनावटीपन और घमंड का नामोनिशान नहीं था। चित्रा से हाथ मिलाने में भी उसे शर्म महसूस हो रही थी। अवॉर्ड सेरेमनी में बोलते हुए भी वह बहुत घबड़ाया हुआ था। जीवन में इससे पूर्व उसे कभी इतना महत्व नहीं मिला था, इसलिए वह अभिभूत था। ग्लोबल इंस्टिट्यूट के चेयरमैन अतुल शक्तावत ने जब उसे मेडल और पचास हजार का चेक सौंपा तो उसकी आँखों से आँसू छलक पड़े। यह दृश्य देखकर मैं भी भावुक हो गया।

फंक्शन के बाद उस दिन हमने पढ़ाई से छुट्टी कर दी और रतन के साथ बाकी का समय बिताया। सब हमारे यहाँ एकत्र हुए ... आंटी ने खास तौर पर मुझे रतन को लेकर आने को कहा था। अंकल ने रतन को बुके भेंट कर स्वागत किया। कुछ देर हम अंकल के पास बैठे। उन्होंने रतन से उसकी तैयारी के बारे में पूछा और हमें टिप्स देने को कहा। रतन के पास लच्छेदार भाषा में बताने को कुछ खास था नहीं, सिवाय इसके कि पूरे मनोयोग से पढ़ाई करने से ही उसे यह सफलता मिली है। नंदिनी ने जब उससे पूछा कि वह अपने डाउट कैसे क्लियर करता था, तो उसने यह कहकर हमें अचंभित कर दिया कि ऐसी स्थिति उसके सामने आई ही नहीं। वह पूरे साल पूरी तन्मयता से पढ़ता रहा था और टीचर के हर लेक्चर को बड़े ध्यान से सुनता था। हमारे लिए उसकी बातें हैरान करने वाली थीं। जब उसने हमारी आँखों में तैरते अविश्वास को देखा तो वह कुछ याद करता हुआ बोला - ''ग्लोबल ने भी मेरी बहुत सहायता की। उनके द्वारा समय-समय पर उपलब्ध कराए गए ट्यूटोरिल्स और साल्व्ड पेपर्स के कारण मेरी मंजिल आसान हो गई।'' उसकी बातें सुनकर मुझे नवीन द्वारा बताई बातें याद हो आईं कि किस तरह ग्लोबल ने उसे सिखा-पढ़ा कर झूठ बोलना सिखाया था। इसके बाद चित्रा और नंदिनी आंटी का हाथ बँटाने किचेन में चली गईं। आंटी ने पालक और प्याज के भजिए बनाने की तैयारी की हुई थी। नाश्ता करते हुए चित्रा के अनुरोध पर अंकल ने अपनी कुछ कविताएँ भी सुनाई।

चलते समय रतन ने आंटी और अंकल के पैर छूकर आशीर्वाद लिया। अंकल ने उसे पर्पल पेन समूह की ओर से सम्मान-स्वरूप प्राप्त पेन-सेट गिफ्ट में दिया। रात का डिनर हम सब पधारो सा रेस्टॉरेंट में लेने वाले थे। तत्पश्चात् लेट नाइट में रतन की वापसी की ट्रेन थी।

रतन की सादगी और विलक्षण प्रतिभा से हम सभी बहुत प्रभावित हुए थे तथा हमारा संकल्प और दृढ़ हुआ था। सुदूर पिछड़े गाँव का एक गरीब बच्चा अभावों के बीच पलकर भी सफलता के शिखर पर पहुँच सकता है तो हम सभी सुविधाओं के बीच रहकर भी वह स्थान क्यों हासिल नहीं कर सकते? उससे

मिलने के बाद हम सभी को लगने लगा था कि रतन हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाने यहाँ आया था और अब हमेशा हमारे आस-पास रहकर हमारी हर गतिविधि पर नज़र रख रहा है और हमें हौसला दे रहा है।

इसके बाद तो हम अपनी पढ़ाई में इतने डूब चुके थे कि बुरी-से-बुरी खबर भी हमारे मन को विचलित नहीं कर रही थी। इसका सबसे बड़ा सबूत तो रतन के जाने के एक सप्ताह बाद ही मिला जब एडवांस में पास न हो पाने की वजह से कुणाल अग्निहोत्री ने सल्फास खाकर अपनी जान दे दी और हममें से कोई भी इस हादसे पर आँसू बहाने को तैयार नहीं दिखा। थोड़ा दुख जताकर ही सब वापस अपने में खो गए। इससे पहले हमने कितनी ही बार आपस में दूसरे बच्चों की संवेदनहीनता की चर्चा की थी पर इस बार हम स्वयं स्वार्थवश संवेदनहीन हो गए थे ... दूसरे शब्दों में हम प्रैक्टिकल हुए थे जो अब तक नहीं थे। एक मोटिवेशनल स्पीकर के अनुसार हमने अपनी भावनाओं को नियंत्रित करना सीख लिया था और अब हम एक विवेकशील इंसान के रूप में आकार ग्रहण कर रहे थे।

अपने व्यक्तित्व के इस रूपांतरण पर मुझे स्वयं हैरानी होने लगी थी, लेकिन चित्रा तो मुझसे भी दो कदम आगे थी। वह हर स्थिति में निर्विकार लगने लगी थी ... नितांत स्थितिप्रज्ञ, जबकि इससे पूर्व हर गलत बात को लेकर वही सबसे ज्यादा उद्वेलित दिखती थी। पढ़ाई के प्रति उसका डेडिकेशन तो हमेशा ही मेरे लिए प्रेरणाप्रद रहा है और अब उसका गलत बातों पर प्रतिक्रिया रहित व्यवहार भी मुझे अच्छा लगने लगा था, जिससे मैं पढ़ाई में ज्यादा एकाग्रचित्त हो पा रहा था।

हल्के-फुल्के मनोरंजन के क्षणों में भी हम गंभीर रहने का प्रयास करने लगे। फ्रेंड्सशिप डे के उत्साही माहौल में भी हमने पूरी तरह औपचारिक रहने की कोशिश की ... पिछले साल की तरह न कहीं घूमने का प्रोग्राम बनाया और न ही पिज्जा हट या डोमिनो में इसे सेलिब्रेट करने की सोची। मोबाइल पर ही गुलाब के फूलों के साथ कुछ शरारती इमोजियाँ भेजकर हमने एक-दूसरे को विश कर लिया। ऐसा नहीं था कि हमारा मन मिलने का नहीं था, लेकिन हमने तय किया हुआ था कि व्यर्थ की औपचारिकताओं में समय जाया नहीं करना है .. . हमारी दोस्ती को अब किसी औपचारिकता, किसी दिखावे की ज़रूरत नहीं है। हमारा उद्देश्य इस समय केवल पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित रखना था और चित्रा भी इसका कड़ाई से पालन कर रही थी और मुझसे भी करवा रही थी। रक्षाबंधन

पर तो इस बार और भी मजेदार घटना घटी थी जब निशिथ की मम्मी सुबह-सुबह स्वयं ही निशिथ को लेकर चित्रा के फ्लैट पर पहुँच गई थी। कोई और समय होता तो चित्रा बहुत मजे लेकर सारा वृत्तांत बताती पर उसने दो लाइन में ही अपनी बात खतम कर दी ... मतलब हर समय पढ़ाई और सफलता का दवाब हम पर हावी होता जा रहा था और हमारी सहजता खोती जा रही थी। हम मिलते तो हँसी-ठिठोली कम ही होती और अधिकांश समय एनालिटिकल और ऑब्जेक्टिव प्रश्नों के चक्रव्यूह में उलझकर उनका सही हल तलाशते रहते। ज़िंदगी पीछे छूटने लगी थी और छायाएँ हमारे आगे-आगे चलने लगी थीं।

दीवाली की छुट्टियों का भी इस बार भरपूर लुत्फ नहीं ले सका। नवीन, आबिद और छुटकी के साथ भी ज्यादा मस्ती नहीं कर पाया। हर समय एक दवाब, एक अनजाना सा भय दिमाग में समाया रहता। ज्यों-ज्यों दिन बीत रहे थे, मैं स्वयं में सीमित होता जा रहा था। पापा समझ रहे थे मेरी स्थिति, खुश भी थे ... पर माँ और दादी चिंतित दिखतीं, कि ऐसी भी क्या पढ़ाई ... न सेहत का ध्यान और न ही खाने-पीने का। दादी से जब भी टकराता, उलाहना देतीं - ''देख कितना दुबला हो गया है'', मैं हँसता, कहता - ''कहाँ दादी, कमर छब्बीस से सत्ताइस इंच हो गई है, आपका चश्मा धुंधला गया है बदलवाइए इसे।'' जवाब सुनकर वह अपनी ओर खींचती और मेरे सिर पर हाथ फेरने लगतीं।

इस बार दीपावली पर चाचा भी घर आए थे। दादी की इच्छा थी कि सभी लोग साथ में दीपावली मनाएँ। उनका बेटा अक्षत नौवीं में पढ़ रहा था और बेटी तन्वी सातवीं में। मुझसे मिलना और कोचिंग के बारे में जानकारी प्राप्त करना भी उनका उद्देश्य था। शायद वह भी अक्षत को कोटा भेजने का मन बना चुके थे। एक साल था अक्षत के पास अभी खुद को मानसिक रूप से तैयार करने के लिए। चाचा चाहते थे कि अक्षत मुझसे मिलकर मन का डर दूर कर ले और ऊँची उड़ान भरने के लिए अपने पंख खोलना सीख ले। अक्षत भी मुझसे मिलकर उत्साहित था। वह भी वहाँ की लाइफ और पढ़ाई के बारे में सबकुछ जानना चाहता था मुझसे। बहुत सारे प्रश्न और जिज्ञासाएँ थीं उसकी।

भाई दूज पर दोनों बुआ भी आ गईं। दादी ने उन्हें भी आकर मिलने का संदेश भिजवाया था। बड़ी बुआ के साथ मीनल दीदी और छोटी बुआ के साथ उनका छोटा बेटा शुभजीत आया था। मीनल दीदी बी.काम. सेकंड इयर में थीं जबकि शुभजीत ग्यारहवीं में था। बुआ उसे भी नीट की कोचिंग के लिए कोटा

भेजना चाहती थीं। मतलब मेरे कोटा जाते ही रिश्तेदारों के मन में भी कोटा के प्रति स्नेह उमड़ने लगा था। अब सभी लोग अपने बच्चों का भविष्य सँवारने कोटा की ओर बड़ी आशा भरी निगाहों से देख रहे थे। मेरी स्थिति परिवार में स्टार जैसी हो गई थी। पहली बार मुझे अपनी ब्रांड वैल्यू का अहसास हो रहा था।

17

हर बीतते दिन के साथ हमारी व्यग्रता बढ़ती जा रही थी। हम कितनी भी कोशिश करते, लेकिन तनाव हमारा पीछा छोड़ने को तैयार ही नहीं था। प्राणायाम-शवासन सब फेल हो जाते। पढ़ाई की ऐसी धुन सिर पर सवार रहने लगी कि कुछ भी हो जाए हमें अच्छी रैंक लानी ही है ... तीन-चार महीनों की बात है, मेहनत में कोई कसर नहीं छोड़नी है ... कोई प्रश्न अनटच्ड नहीं रहना चाहिए ... हर विषय के प्रत्येक प्रश्न का कम से कम तीन बार रिविजन करना ही है ... हर क्षण कीमती है इस समय। आंटी समय पर ध्यान न दिलाएँ तो खाना भी छूट जाए। ठंड के दिन हैं, तो रोज-रोज नहाने की किल्ल्त भी नहीं है ... एक महीने में तीन-चार बार गोता लग चुका है। माँ से भी दो हफ्ते से लम्बी बातें नहीं हुईं ... छुटकी की मीठी-मीठी छेड़छाड़ भरी बातों के लिए भी ज्यादा समय नहीं मिला। सबको पता है कि पढ़ाई का कितना महत्व है इस समय। उनकी तपस्या और मेरी मेहनत फलदायी रहे, इसलिए वे भी केवल काम की बातें करते हैं। माँ हमेशा की तरह अपना ख्याल रखने और बिना नागा दूध ज़रूर पीने की हिदायत देकर फोन रख देती। कुछ समय से हमारी बातचीत का सिलसिला प्रतिदिन के स्थान पर दो दिनों में एक बार हो गया और फिर हम हर तीसरे दिन बात करने लगे। कारण विरक्ति नहीं, केवल मुझे डिस्टर्ब न करने की सद्भावना ही इसके पीछे थी।

दिसम्बर माह आधा बीत चुका था। जनवरी के अंत में कोचिंग का शिड्यूल पूरा होने वाला था। दो-तीन दिन से मेरा सिर दर्द कर रहा था। ज्यादा देर पढ़ने से आँखों के आगे धुँधलापन छाने लगता, यद्यपि पढ़ते हुए आँखों से पानी आने की समस्या बहुत दिन से चल रही थी। उस दिन लाइट बंद कर जब मैं जल्दी सोने चला गया तो आंटी ऊपर कमरे में आ गईं। मैं सिर पर बाम लगाकर लेटा हुआ था। आंटी ने मेरे माथे पर हाथ रखते हुए पूछा - ''तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है, तो हमें बताया क्यूँ नहीं ... कई दिनों से महसूस कर रही हूँ कि तुम

ठीक से न तो खाना खा रहे हो और न ही सही ढंग से आराम कर रहे हो ... हमेशा खोए-खोए दिखते हो।''

आंटी इस बीच मेरे पलंग पर बैठकर मेरा सिर दबाने लगीं थी। मुझे उनका इस तरह सिर दबाना अच्छा नहीं लगा, मैंने उठते हुए कहा - ''मैं ठीक हूँ आंटी, सुबह जल्दी उठना है, इसलिए अभी सो रहा हूँ।''

''तुमको पता है कि तुम ठीक से झूठ नहीं बोल सकते तो फिर क्यूँ मुझे भरमाने की कोशिश कर रहे हो ... सच-सच बताओ कैसा लग रहा है'' - आंटी की स्नेहिल झिड़की सुनकर झूठ बोलने की इच्छा नहीं हुई।

''सिर में थोड़ा दर्द है आंटी, बाम लगाकर इबुब्रोफेन ले ली है, आराम मिल रहा है, थोड़ी देर में ठीक हो जाएगा।'' - मैंने उनका हाथ पकड़कर कहा।

सुबह ज़िद करके अंकल मुझे डॉक्टर के पास ले गए। उन्होंने कुछ हेल्थ सप्लीमेंट और टॉनिक लिखकर दिए, साथ ही किसी ऑथल्मोलॉजिस्ट से कंसल्ट करने की सलाह दी। अंकल उसी समय मुझे सरोया आई हॉस्पिटल ले गए। मुझे रीडिंग चार्ट की आखिरी पंक्ति में लिखे अक्षर समझ में नहीं आ रहे थे ... पढ़ना तो दूर की बात। डॉक्टर ने चेक-अप करने के बाद दाँयी आँख के लिए +.75 और बाँयी आँख के लिए +.50 पॉवर के चश्मे की आवश्यकता बता दी।

दो दिन बाद चित्रा की मम्मी का बर्थ डे था। मुझे चश्में में देखा तो चित्रा की हँसी छूट गई, पास आकर धीरे से कान में बुदबुदाई - ''बच्चा, बड़ा क्यूट लग रहा है।''

''चल हट्ट ... गौर से देख ... स्मार्ट लग रहा हूँ'' - मैंने भी इतराते हुए जवाब दिया।

आंटी ने निशिथ और उसकी मम्मी को भी बुलाया था। दोनों कहीं जा रहे थे अतएव ज्यादा देर नहीं रुके और आंटी को विश करके चले गए। मैं शाम तक वहीं रुका रहा। कोचिंग के अतिरिक्त बहुत दिनों बाद चित्रा के साथ समय बिताने का समय मिला था। शाम को नंदिनी और देवयानी भी आ गईं। पढ़ाई को परे रखकर हमने थोड़ी मस्ती भी की ... चित्रा से कुछ पुराने फिल्मी गीत सुने। उसने चुन-चुन के ऐसे-ऐसे गीत गाए कि मुझे लगने लगा, वह सारे गीत केवल मेरे लिए ही गा रही है। मुझे देखते ही उसने क्यूट कहा था, वही भावना उसके पहले गीत में भी झलकी - ''तेरी प्यारी-प्यारी सूरत को किसी की नज़र न लगे।'' दूसरा गीत भी उसने तिरछी नज़रों से मुझे देखते हुए गाया - ''आने से उसके

आए बहार, जाने से उसके जाए बहार।'' यह गीत मुझे उसके स्नेह और कंसर्न की गहरी अभिव्यक्ति लगा। इसके बाद उसने गाया - ''मिलती है ज़िंदगी में मोहब्बत कभी-कभी'' और अंत में ''हम-तुम युग-युग से ये गीत मिलन के गाते रहे हैं, गाते रहेंगे'' सुनाया। बीच-बीच में वह मुझे देखती भी जाती थी जैसे मेरे चेहरे के भावों को पढ़ने की कोशिश कर रही हो। मैं भी तो यही कर रहा था, यानि कि उसके गीतों में उसकी मुख-मुद्राओं को देखते हुए उसकी भावनाओं को परखने का प्रयास। सच कहूँ तो गीत चित्रा के थे पर मेरे मन की भावनाएँ भी उसके स्वरों में व्यक्त हुईं थीं ... मेरा मन मस्ती में झूम रहा था और दिल में जलतरंग की स्वर लहरियाँ प्रतिध्वनित हो रहीं थी।

इसके बाद नंदिनी ने भी गरबा की कुछ भंगिमाओं को प्रस्तुत किया और देवयानी ने युवाओं में लोकप्रिय फ्यूजन डांस का प्रदर्शन किया। फिर सबने मिलकर मुझे घेरा, कुछ भी सुनाने को कहा। मुझे गाना ही सबसे मुश्किल काम लगता है, एक बार बाथरूम में गाने की कोशिश की थी तो नल से पानी आना ही बंद हो गया था। ये किस्सा सुनाया तो सब जोर से हँसे पर मुझे मुक्ति नहीं मिली। हारकर मैंने अंकल का लिखा वही प्रेम गीत सुना दिया -

पहली नज़र में प्यार का, यह अहसास बड़ा ही प्यारा है।
नयनों में छवि तुम्हारी है, अधरों पर नाम तुम्हारा है।
तुम सुबह की पहली किरण सी
तुम मधुमासी मस्त-पवन सी।
तुम फूलों में बसी सुरभि सी
तुम उज्ज्वल अनंत गगन सी।
तुम पावस की पहली फुहार
तुम मधुरितु मे खिले सुमन सी।
पिया मिलन को आतुर बहती
तुम हो नदिया मुग्ध-मगन सी।
तुम कृति हो अनमोल अनूठी, मनहरनी जादूगरनी सी,
तुमसे मिलकर सच यह जाना, अब दिल भी नहीं हमारा है।

नंदिनी और देवयानी से नज़रें बचाकर बगल में ही बैठी चित्रा ने मुझे चिकोटी काटी और फुसफुसाई - ''अच्छा बच्चू, बहुत सही जा रहे हो ... चश्मा भी इसीलिए लग गया है ... देखना अब अपने होंठ न काट लेना।''

रात में उसका फोन आया - ''अंकल की आड़ लेकर खूब तीर चलाना सीख रहे हो ... कौन है वो, नाम बता उसका?''

''है कोई ... ओपन सीक्रेट है, बूझ सको तो बूझ लो।''

वह हँसी - ''ठीक है, ठीक है ... रहने दे, आज पूरा दिन धेले का नहीं पढ़ा, अब तो पढ़ ले ... अच्छा सुन ... ये केमिस्ट्री भी बड़ी मगजमारू है यार ... न एटॉमिक स्ट्रक्चर दिमाग में बैठता है और न केमिकल बॉन्डिंग समझ में आती है। मैं दो प्रश्न व्हाट्सएप कर रही हूँ इनके सही-सही उत्तर बताओ मुझे, पूरे लॉजिक के साथ।''

''ओके ... भेजो, यदि मेरी परीक्षा ले रही हो तो भी अच्छा ही है मेरे लिए।''

इसके बाद हम दोनों सीरियसली पढ़ाई करने में व्यस्त हो गए।

मुझे चश्मा लगे पाँच दिन हो गए थे, लेकिन मम्मी को जानबूझकर नहीं बताया कि वह परेशान हो जाएँगी। इस बीच उनसे बात भी नहीं हुई थी ... मुझे आश्चर्य भी हो रहा था कि मम्मी ने भी अपने मन को मारना कितनी अच्छी तरह से सीख लिया है। मैं डिस्टर्ब न होऊँ यह सोचकर वह भी बात नहीं करती थी, लेकिन जब मैं काल करता था, तो बातों में उनकी भाव-विह्वलता साफ महसूस होने लगती थी। मैंने फोन लगाया तो छुटकी ने उठाया - ''कैसी है छुटकी?''

''अच्छी हूँ भैया'' - उसकी आवाज़ में वह चहक नहीं थी, जिसे सुनने की मुझे आदत थी। कुछ-कुछ बुझी सी आवाज़ कानों में पड़ी थी।

''सब ठीक तो है न, तेरी आवाज़ को क्या हुआ?''

''दादी अस्पताल में भर्ती हैं।'' - छुटकी सुबकने लगी - ''भैया, सबने मना किया था तुम्हें बताने के लिए।''

''अरे ... क्या हुआ है उनको?''

''हार्ट अटैक आया है ... बोल नहीं रही हैं कुछ भी, इस उमर में डॉक्टर ऑपरेशन से भी मना कर रहे हैं ... वह जरा भी ठीक नहीं हैं भैया'' - छुटकी का रोना चालू था - ''मैंने तुम्हें बता दिया, अब सब डाँटेंगे मुझे।''

''छुटकी'' - मेरे गले से उसे सांत्वना देने के लिए शब्द भी नहीं निकले, उल्टा मेरा गला भर आया - ''मम्मी कहाँ हैं ... फोन दे उन्हें''

कुछ क्षणों के इंतजार के बाद पापा की आवाज़ आई, जबकि पापा मुझसे आगे आकर कभी बात नहीं करते थे। पिछले पौने दो साल में बमुश्किल पाँच-छह

बार बात हुई थी उनसे, वह भी मम्मी द्वारा उलाहना देने पर कि आप समीर से कभी-कभी बात तो कर लिया करो, तब उन्हें करनी पड़ती थी। बोले - ''बेटा, तुम परेशान मत हो, अम्मा ने ही मना किया था तुम्हें बताने के लिए, वह नहीं चाहती थीं कि तुम भागकर यहाँ चले आओ ... वह अभी ठीक हैं ... लेकिन कुछ कह भी नहीं सकते अभी ... समझ लो उनका और हमारा बस इतना ही साथ है ... वह बहुत खुश हैं तुम्हारी सफलता से, अक्षत को भी उन्होंने समझाया था कि समीर दादा के कदमों पर चलकर तुमको भी बड़ा आदमी बनना है। हमें पता है तुम दादी को कितना चाहते हो ... दादी के लिए ही तुम्हें कामयाबी की इबारत लिखना है, वह जहाँ भी रहेंगी बहुत खुश होंगी तुम्हें आगे बढ़ता देखकर ... अपना ख्याल रखना।''

मुझे पता था, पापा झूठ बोल रहे हैं ... दादी कतई ठीक नहीं हैं, लेकिन वह नहीं चाहते कि मैं वहाँ आऊँ और अपना कीमती समय बर्बाद करूँ। यह सच है कि मेरे लिए वह समय बहुत महत्वपूर्ण था ... कुछ ही समय बाद कोचिंग-क्लासेज समाप्त होने वाली थीं और फिर बारहवीं के इम्तहान। इसके बाद जी-मेंस और कुछ दिनों बाद ही एडवांस। मैं रो रहा था ... पापा की बातों से स्पष्ट प्रतीत हो रहा था कि अब दादी नहीं बचेंगी ... मैं उनके अंतिम दर्शन भी नहीं कर पाऊँगा ... जीवन भर यह टीस मुझे सालती रहेगी। एक परीक्षा पास करने के लिए और कितनी ऐसी परीक्षाएँ देनी होंगी मुझे? क्या ये परीक्षा इतनी महत्वपूर्ण है कि उसके लिए रिश्ते भी महत्वहीन हो जाएँ? सच में ज़िंदगी कितनी कठिन है और दुनिया कितनी स्वार्थी ... सब केवल अपने लाभ-हानि की ही सोचते हैं। पापा ने फोन रखा तो मैंने जी भर कर रो लिया। जब जी थोड़ा हल्का हुआ तो फिर से छुटकी को फोन लगाया - ''छुटकी, मेरी बहन ... तुझे मेरी कसम ... तू मुझसे दगा मत करना ... दादी को यदि कुछ हो जाए तो मुझे उसी समय ज़रूर बता देना, मैं उनकी एक झलक देखकर मन को समझा लूँगा।'' इसके आगे मुझसे कुछ नहीं बोला गया। फोन कटने के पहले छुटकी के रोने आवाज़ मेरे कानों में पड़ चुकी थी।

उस रात मैं ठीक से सो नहीं सका। चित्रा को बताया तो वह बहुत देर तक हौसला देती रही। आंटी ने भी पापा के एंगल से समझाया ... अनेक तर्क दिए, लेकिन मेरा मन बार-बार दादी की स्मृतियों में खो जाता। मैंने दीपावली पर ही उनका स्केच बनाकर उनको दिखाया था, तो बोली थीं - ''तुम ही इसे अपने पास

रख लो, बहू को दिखाकर कहना कि दादी की किस्मत में नहीं था तुमसे मिल पाना, पर वह तुम्हारे लिए अपनी सबसे प्रिय चीज छोड़ गई हैं ... अपने समीर बिटुआ को और इसे भी।'' उन्होंने अलमारी से एक ताबीज निकालकर मेरे हाथों में थमाते हुए कहा था - ''ये अभिमंत्रित ताबीज है, जो अमृतानंद बाबा ने हमें दिया था, बुरी नज़र से बचने के लिए ... ऐसा ही एक ताबीज तुमको भी पहनाया था। बहुत करिश्माई थे बाबा ... उनकी कृपा से ही तुम्हें किसी की नज़र नहीं लगी आजतक। तुमसे पूर्व सुमन के दो बच्चे नहीं रहे थे, तब बाबा ने हमें ये ताबीज दिए थे। तभी दूसरा मैंने तुम्हारी दुल्हन के लिए माँग लिया था उनसे। इसे तुम अपने पास रख लो और शादी के बाद गुरुवार के दिन गंगाजल से शुद्ध करके बहुरिया के गले में पहना देना।''

''दादी, आप कैसी बातें कर रही हैं ... मेरी शादी में बहुत समय है अभी ... आप ही अपने पास रखिए और अपने हाथों से पहनाना उसे'' - मैंने कहा था।

''नहीं बिटुआ ... इसे तुम ही रखो ... मेरा क्या भरोसा कब भगवान बुला ले ... विश्वदीप इन बातों को मानता नहीं और सुमन तो भुलक्कड़ नम्बर वन है। तुम्हारे पास रहेगा तो समय पर सही गले में डल जाएगा।'' - दादी की ज़िद के आगे मुझे झुकना पड़ा था। मैंने अपना सूटकेस खोला और दादी का स्केच निकालकर टेबल पर रख लिया। ताबीज भी सुरक्षित रखा हुआ था। सोचने लगा, क्या दादी को अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था? क्या दादी ने इसीलिए चाचा को दीपावली पर और बुआओं को भाई दूज पर बुलाया था कि जाने से पहले सबको जी भर कर देख लें? सभी बच्चों को खूब प्यार दिया था। मम्मी, चाची, दोनों बुआओं और छुटकी को भी इस दीपावली पर उन्होंने अपने गहनों के पिटारे में से कुछ न कुछ निकालकर दिया था।

मैंने दादी के स्केच की ओर देखा, लगा बोल रही हैं - ''नहीं बिटुआ नहीं ... बिल्कुल नहीं ... रोना नहीं है ... तुम रोओगे तो मुझे दुख होगा ... क्या तुम मुझे दुखी देख सकोगे? नहीं न ... तो फिर आँखों में आँसू किसलिए? पोंछो इन्हें ... मैं तो सदा तुम्हारे पास रहूँगी ... जब याद करोगे आ जाऊँगी अपने राजा बिटवा के पास ...'' मैंने झट से अपने आँसुओं को रुमाल से साफ किया। याद आया दादी के गाए कुछ लोकगीत मेरे लैपटॉप में हैं ... बुंदेलखंडी लोकगीतों में कौशल्या देवी कभी बहुत जाना-पहचाना नाम हुआ करता था। आकाशवाणी

छतरपुर से उनके गाए गीत तब बहुत बजा करते थे, लेकिन मेरे जन्म के तीन साल बाद सब छूट गया। दद्दू की अचानक मृत्यु ने उनके कंठ को मौन कर दिया। तब से वह न तो आकाशवाणी गईं और न ही कभी किसी ने गाते सुना था उनको ... लेकिन इस दीपावली पर उन्होंने छोटी बुआ के आग्रह पर अपना यह मौन भी तोड़ दिया था। सतहत्तर साल की उमर में भी उनकी आवाज़ में चालीस साल वाली खनक थी। मैंने तो पहली बार उन्हें गाते सुना था। बुआ ने भी उनसे फुल मस्ती वाले गाने की फरमाइश की थी। बुआ ने ही ढोलक संभाली और दादी ने गाया था - ''उठो गोरी बोल गओ, मगरे पे कौआ। लगत तोरे मायके से आ रये लिबौआ।'' सुनकर सब झूम उठे थे। इसके बाद उन्होंने एक अलग ही भावभूमि का लोक गीत सुनाया, जो बुंदेलखंड अंचल में हर शुभ अवसर पर गाया जाता है - ''लाला हरदौल बिनती मान लईयो हो। भूल-चूक, चरन परे मान लईयो हो।'' इसके बाद उनका गला रुँधने लगा तथा साँस भरने लगी। मैंने दोनों ही गीत रिकॉर्ड कर लिए थे।

''दादी, आप इतना अच्छा गाती हैं, तो फिर आपने मुझे क्यूँ नहीं गाना सिखाया'' - मैंने उनकी गोदी में सिर रखते हुए कहा था।

''तुम तो बेसुरे विशू के बेटे हो ... मैं क्या तानसेन भी नहीं सिखा पाते तुम्हें''

''ऊँ ऊँ ... दादी'' - मैंने बुरा सा मुँह बनाया। दादी ने मेरे गालों पर प्यार भरी थपकी दी। मम्मी और दोनों बुआ ने मंद-मंद मुस्कान के साथ पापा की ओर देखा था, जैसे कह रही हों दादी ने उन्हें कितनी सलीके से आइना दिखाया है।

दादी कितना प्यार करती हैं मुझे, यह सोचकर आँखें भर आती हैं। मम्मी बताती हैं, जब मैं चार साल का था, तब माता निकली थीं ... दादी पूरे एक किलोमीटर तक जमीन पर लेटकर चलते हुए माता-पूजन के लिए गईं थी। पापा उन पर बहुत नाराज हुए थे, लेकिन उनकी आस्था को डिगा पाना आसान नहीं था। उनके हाथ की कुहनियाँ और घुटने बुरी तरह छिल गए थे तथा पूजन के बाद बुखार भी आ गया था। मम्मी जब भी इस बारे में बात करती हैं, उन्हें रोना आ जाता है। बहुत सुना है सास-बहू के झगड़ों के बारे में, पर माँ और दादी को कभी आपस में जोर से बोलते भी नहीं सुना। इतना स्नेह है दोनों के बीच।

ऐसी कितनी ही यादें हैं दादी की? अब शायद यादों के सहारे ही जीना पड़ेगा ... जो मुझे प्यार करते हैं, उनके ही किसी काम नहीं आ सका मैं? कितना अभागा हूँ? न निधि दीदी की शादी अटेंड कर सका और न अब दादी का ... इसके आगे मैं सोचना नहीं चाहता था। शायद दादी अच्छी होकर घर लौट आएँ

18

रात में कब नींद आ गई पता ही नहीं चला। सुबह उठकर फ्रेश हुआ ही था कि चित्रा आ गई। रविवार होने से कोचिंग क्लासेस की छुट्टी थी। कोई एक्सट्रा क्लास भी नहीं थी ... फिर चित्रा इस समय। माथा ठनका ... रात में उसने बताया था कि जूनियर क्लास के श्याम पाटनकर को किसी लोकल गुंडे ने चाकू मार दिया है। देवयानी ने बताया था उसे, श्याम उसके ही शहर से कोटा आया था। उसके अनुसार श्याम को रोककर गुंडे ने पाँच सौ रुपए माँगे थे। इसी बात पर दोनों में कहा-सुनी हुई थी। श्याम को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पर दादी की यादों में खोया होने के कारण मैंने इस घटना के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं ली थी। सोचा, शायद श्याम को देखने चलने के लिए लेने आई है ... ऐसी स्थिति में श्याम को मॉरल सपोर्ट की बहुत ज़रूरत भी थी।

चित्रा ने मुझसे अधिक बात नहीं की और आंटी का हाथ बँटाने किचेन में चली गई। आंटी ने ब्रेकफास्ट में ब्रेड रोल बनाए थे। ओरेंज जूस के लिए संतरे छीलकर रखे थे। चित्रा ने जूस निकाला। हम चारों ने साथ बैठकर नाश्ता किया। मेरी आँखें सूजी हुईं थी और चेहरा उदास। दादी की तबियत के बारे में सब जानते थे, इसलिए कोई भी मुझे दुखी नहीं करना चाहता था। अधिकतर समय हम लोग चुप ही बैठे रहे।

नाश्ता करके चित्रा मेरे साथ ही ऊपर आ गई। बोली - ''दादी की कोई खबर है?''

''नहीं ... अभी तक तो नहीं'' - मैंने कहा - ''कुछ होगा तो मानसी खबर करेगी।''

''ओके'' - चित्रा बोली - ''तुम्हें हर परिस्थिति के लिए तैयार रहना चाहिए, दादी बोल नहीं रही हैं, उठना-बैठना, हिलना-डुलना भी मना है ... उन्हें बहुत कष्ट हो रहा होगा ... इस कष्ट से मुक्ति ही उनके लिए सबसे अच्छा होगा ... तुम भी प्रार्थना करो कि दादी को इस कष्ट से मुक्ति मिले।''

''मैं केवल ठीक होने की प्रार्थना कर सकता हूँ ... तुम्हें पता नहीं है चित्रा, दादी ने मेरे लिए क्या-क्या किया है ... मैं आज ज़िंदा हूँ तो उनकी ही तपस्या

के कारण।''

''दादी कभी नहीं मरेंगी समीर ... ऐसे तपस्वी लोग कभी नहीं मरते ... तुम्हारे, छुटकी और आंटी के भीतर हमेशा ज़िंदा रहेंगी वो'' - चित्रा मुझे तरह-तरह से दिलासा दे रही थी। कभी वह मेरे गालों पर ढुलक आए आँसुओं को पोंछती तो कभी मेरी पीठ को सहलाती।

थोड़ी देर में छुटकी का फोन आ गया - ''भैया, सुबह छः बजे दादी नहीं रही ... उन्हें ले जाने की तैयारियाँ चल रही हैं।''

मेरे हाथ से मोबाइल गिरते-गिरते बचा। हाथ बुरी तरह काँपने लगे थे। चित्रा बगल में ही बैठी हुई थी। उसने मुझे बाहों में भरकर गले से लगा लिया और देर तक सहलाते हुए वह भी सुबकती रही। उसके साथ ने दुख को बाँट लिया था ... मन में उठा चक्रवात ठंडा पड़ने लगा था ... अधीरता कम हो रही थी ... अचानक ही तभी मन में एक बात कौंधी।

''चित्रा तुम्हें पता था न कि दादी नहीं रहीं'' - मैंने भर्राए गले से उसकी ओर देखते हुए पूछा।

''तुमसे झूठ नहीं बोलूँगी सम्मू ... मानसी ने सुबह ही मैसेज करके मुझे बता दिया था ... वह चाहती थी कि जब तुमको ये खबर मिले मैं तुम्हारे पास रहूँ ... तुम चाहो तो मुझ पर गुस्सा कर सकते हो, बुरा-भला कह सकते हो, इतनी देर तक तुमसे यह बात छुपाए रखी ... बाढ़ के पानी को बाँधने जैसे अनुभव से गुजरी हूँ इस बीच ... पर मैं क्या करती? मन से तुमसे बँधी हूँ ... तुम्हारे दुःख की कल्पना से ही सिहर उठी थी, माँ भी आना चाहती थीं साथ ... बड़ी मुश्किल से मना किया उन्हें''

मैं चुप रहा। क्या चित्रा पर मुझे सच में गुस्सा होना चाहिए? उसे तो मेरी फिक्र, इतनी सुबह-सुबह यहाँ तक खींच लाई थी ... उसकी वजह से ही इतना बड़ा दुख भी मुझे तोड़ नहीं पाया था। चित्रा पास न होती तो ... पता नहीं कैसे संभाल पाता खुद को। मैंने चित्रा के दोनों हाथ अपने हाथों में लेकर आँखों पर लगा लिए ... संवेदनाओं का ज्वार एक बार पुनः उठा और तटबंध तोड़ते हुए आँखों के रास्ते बाहर आ गया।

थोड़ी देर बाद मैंने संभलते ही छुटकी को स्काइप पर काल किया। दादी की अर्थी सज चुकी थी ... पापा, चाचा, छोटे फूफा, अक्षत, आबिद, नवीन, पापा के बहुत से दोस्त, कॉलोनी के लोग, मम्मी, दोनों बुआ सब दिखाई दे रहे थे। अंतिम

विदाई से पूर्व सब दादी के चरणों में पुष्प अर्पित कर रहे थे। मैंने और चित्रा ने भी दादी के सामने हाथ जोड़े। महिलाओं का समवेत रुदन जारी था। मंत्रोच्चार के बीच पंडित जी ने अर्थी उठाने का इशारा किया। चाचा और छोटे फूफा ने आगे से अर्थी को कंधा दिया और पीछे से पापा के घनिष्ठ मित्र मोहन अंकल और आबिद के अब्बू ने। अक्षत, नवीन और आबिद ने बीच में हाथ लगा रखा था। पापा हाथ में अग्नि की मटकी थामे सबसे आगे-आगे चल रहे थे, नवीन के पापा ने हौंसला देते हुए उनका हाथ पकड़ रखा था। बड़ा ही हृदय-विदारक दृश्य उपस्थित हो गया था। महिलाओं ने जोर-जोर से रोना शुरु कर दिया था। चित्रा ने मेरा सिर अपने कंधों पर रख लिया था, लेकिन वह स्वयं पर नियंत्रण नहीं रख सकी और फफक-फफककर रोने लगी। उसकी आँखों से आँसू बहकर मेरे गालों को भिगो रहे थे। मैंने उसे जोर से पकड़ लिया। हम कुछ समय तक ऐसे ही बैठे रहे।

चित्रा शाम तक मेरे साथ रही। दोपहर में किसी से खाना नहीं खाया गया। आंटी और अंकल ने भी नहीं खाया। चित्रा मुझे ज़िद करके अपने साथ ले गई। कुछ देर तक हम बेमतलब ही इधर-उधर भटकते रहे ... फिर एक रेस्तराँ में चले गए। चित्रा ने काठी रोल ऑर्डर किए। बाद में हमने काफी भी पी। आठ बज गए थे। चित्रा को उसके घर छोड़ते हुए मैं लौटा। अंकल ने मुझे नीचे ही रोक लिया, बोले - ''आज की रात तुम हमारे पास ही सो जाओ।''

''मैं ठीक हूँ अंकल ... आप कहते हैं तो मैं सो जाऊँगा, पर मुझे सुबह जल्दी उठना है ... चार बजे, कुछ असाइनमेंट कंपलीट करने हैं।''

''ठीक है ... जो तुम्हारी इच्छा हो वही करो ... मुझे अच्छा लगा कि तुम आगे बढ़ने के लिए तैयार हो। जब हम किसी विशेष व्यक्ति को खो देते हैं तो समय रुकता प्रतीत होता है ... पर समय कभी नहीं रुकता, सदा गतिशील रहता है ... चलना ही जीवन है ... जो रुक गया वह पीछे छूट गया, बियाबान में खो गया। तुम बहादुर लड़के हो जो थकना नहीं जानता, रुकना नहीं जानता और पीछे मुड़कर देखना भी जिसे पसंद नहीं ... दादी तुम्हारी कमजोरी नहीं ताकत हैं ... इसी ताकत के साथ चलते जाना है ... दादी तारों के बीच से तुम्हें देखकर बहुत खुश होंगी।'' - अंकल ने कहा। उनकी बातें मुझे सदा ही हिम्मत देती थीं।

अगले दिन कोचिंग क्लास में दादी के निधन पर सभी ने दो मिनट का मौन रखा। बहुत से साथियों ने मेरे पास आकर दुख प्रकट किया। अच्छा लगा यह

देखकर।

जनवरी के पहले सप्ताह तक जी-मेंस के लिए रजिस्टर करना था। हम दुविधा में थे कि ऑन-लाइन ऑप्शन चुनें या ऑफ-लाइन। चित्रा ने ऑफ-लाइन सजेस्ट किया था। उसका तर्क था कि एग्जाम सेंटर्स में पता नहीं किस तरह की ऑनलाइन सुविधाएँ होंगी ... बिजली न रहने की स्थिति में कितना बैक-अप मिलेगा ... कम्प्यूटर ने बीच में धोखा दे दिया तो क्या होगा। ऑन-लाइन सुविधा नई-नई थी सो मन में दुविधा होनी स्वभाविक थी। ऑफ-लाइन एग्जाम अप्रैल के पहले सप्ताह में होने थे जबकि ऑन-लाइन परीक्षा सात दिन बाद। हमने बहुत सोच-विचार कर ऑफ-लाइन टेस्ट देने का निर्णय किया।

कुछ दिन बाद आखिरी मॉक टेस्ट था। उसके बाद दस दिन की कोचिंग फिर दो इंटरनल टेस्ट्स और छुट्टी। दस फरवरी को छतरपुर वापिसी फिर बारहवीं के एग्जाम। बहुत बिजी शिड्यूल था ... जरा भी फुर्सत नहीं।

पापा पहली बार मुझे स्टेशन पर लेने आए थे। साथ में छुटकी और माँ भी थीं। मुझे चश्में में देखकर सभी चौंके, लेकिन पापा के चेहरे पर आश्वस्ति की चमक दिखाई दी। उन्हें इससे ज्यादा फर्क नहीं पड़ा था कि इतनी कम उम्र में मुझे चश्मा लग गया जबकि उन्हें स्वयं अड़तालीस की उम्र में भी चश्में की ज़रूरत नहीं पड़ती थी। माँ ने हलकी सी चिंता जाहिर की - ''तुमने खाने-पीने में लापरवाही की होगी तभी ...'' आगे के शब्द उन्होंने जान-बूझकर छोड़ दिए थे। मानसी को छेड़ने का मौका मिल गया था, मेरे कान में फुसफुसाई थी - ''ज्यादा आँख मिलाने से यही होता है'' फिर तेज स्वर में सबको सुनाते हुए बोली थी - ''भैया जम रहे हो, एकदम परफेक्ट जीनियस टाइप लुक ... बिल्कुल आईआईटियन जैसा।''

मुझे पता नहीं क्यूँ ऐसा लग रहा था कि सब बहुत खुश दिखने की कोशिश कर रहे हैं। दादी के बिना घर मुझे सूना-सूना लगा बिल्कुल वैसे ही जैसे मूर्ति के बिना मंदिर लगता है। उनकी कोई तस्वीर नहीं थी घर में। उनकी दूसरी वस्तुएँ भी मेरी नज़रों से दूर रखीं गईं थीं ... ताकि मैं भावनात्मक रूप से आहत महसूस न करूँ।

मैंने अपने मन को बहुत समझाया था ... दिल को फौलाद सा कड़ा बना के आया था, पर घर पहुँचकर दुःख हुआ। घर वालों की ज़रूरत से ज्यादा सतर्कता और चौकन्नापन मुझे डरा रहा था। मेरे प्रति सबका कन्सर्न तो समझ

में आता था, पर इसके लिए दादी की निशानियों को हटा देना मुझे पसंद नहीं आया था। अगले दिन मैंने दादी का स्केच फ्रेम कराकर अपने कमरे में टेबल के ऊपर लगा लिया। शायद पापा को अपनी गलती का अहसास हुआ और शाम तक दादी की अनेक निशानियाँ घर में यत्र-तत्र दिखने लगीं। मैंने तुरंत सबके चेहरों पर बदलाव महसूस किया ...

19

बारहवीं के एग्जाम में सभी पेपर अपेक्षानुसार अच्छे गए। अब जी-मेंस का टेंसन था। इस बाधा को अच्छी रैंकिंग के साथ पार करना ज़रूरी था, तभी एडवांस में बैठने का टिकट मिलेगा। सुबह-शाम, दिन-रात केवल एक ही धुन। चित्रा भी पढ़ाई में पूरी तरह डूबी हुई थी। हमारी बातें तो रोज ही होतीं पर केवल पढ़ाई पर केंद्रित रहतीं ... पुराने पेपर्स के उलझाऊ सवालों पर हम डिस्कस करते, मॉक टेस्ट में आए कठिन प्रश्नों को हम बार-बार सॉल्व करते। माँ मेरे साथ देर रात तक जागती रहतीं और जब देखतीं मुझे झपकी आ रही है तो कॉफी बनाकर ले आतीं। छुटकी की शरारतें एकदम बंद थी। वह बोलती भी बहुत धीमे से, चलती भी इस तरह कि किसी को पता नहीं चले, यानि कि उसके कारण मुझे किसी तरह का डिस्टर्बेंस फील न हो, इसका पूरा ध्यान रखती। पापा ऑफिस जाने से पहले एक बार मुझसे मिलने मेरे रूम में आ जाते और सिर पर हाथ फेरकर तेजी से निकल जाते। नवीन और आबिद भी घर नहीं आ रहे थे और न ही फोन पर ज्यादा बात करते थे। दोनों ही मेरी सफलता के लिए अपने स्तर पर त्याग कर रहे थे। मैं अधिकतर अपने कमरे में ही बंद रहता ... बस शाम को छत पर थोड़ी सी चहल-कदमी कर लेता। प्राणायाम ज़रूर मैं नियमित रूप से कर रहा था, लेकिन दूसरे आसन और एक्सरसाइज लगभग बंद थी।

आखिरकार वह दिन भी आ गया ... अप्रैल माह का पहला रविवार, जिसके लिए हमने अथक परिश्रम किया था ... परिवार से दूर रहकर जीना सीखा था, छोटी-छोटी खुशियों तक से किनारा कर लिया था, दुःख की घड़ियों में चट्टानी अडिगता से काम लिया था और ज़िंदगी के ऐसे कितने ही इम्तहानों को पास किया था, जो कभी किसी पूर्व निर्धारित सिलेबस के तहत आयोजित नहीं किए जाते। डर और आश्वस्ति, संशय और सजगता, कर्म और भाग्य, संयम और संकल्प, अधीरता और इच्छाशक्ति ... ऐसे कितने ही विरोधाभासी विचारों की उथल-पुथल

के बीच पापा और मैं शुक्रवार को ही भोपाल पहुँच गए थे। जितना डर मुझे था, उससे ज्यादा भयभीत पापा थे। छतरपुर से भोपाल तक सात घंटों के सफर में हम अधिकांश समय मौन ही रहे। राहतगढ़ में बीस मिनट के लिए हम रुके थे पापा ने चाय पी थी और मुझे लेज चिप्स का एक पैकेट तथा ओरेंज जूस लाकर दिया था। राहतगढ़ से निकलकर हम सीधे अपने होटल में ही रुके। पापा ने एम. पी. नगर स्थित आमेर पैलेस में दो दिनों के लिए दो रूम पहले से ही ऑन-लाइन रिजर्व करवा लिए थे। दो रूम क्यों? पापा को हर वक्त रिस्क-फैक्टर्स को कंसीडर करने की आदत बन गई थी। उनका सोचना था कि यदि वह मेरे साथ रुक जाएँगे तो मैं ठीक से कोर्स का रिविजन नहीं कर सकूँगा। मेरा सेंटर नूतन कॉलेज में था, जो आमेर पैलेस से ज्यादा दूर नहीं था।

रात में चित्रा से बात हुई। उसने कहा आज रात और कल शाम तक वह पूरा सिलेबस रिवाइज करने की कोशिश करेगी तथा उन चैप्टर्स पर विशेष ध्यान देगी, जिनके उत्तर बहुत कन्फ्यूज करते हैं। शनिवार की रात फुल-टू रेस्ट यानि पूरा आराम ... इसके बाद जो होगा देखा जाएगा। उसने मुझे भी कहा कि शनिवार की रात दस बजे तक अवश्य सो जाऊँ ... पूर्णतया निश्चिंत होकर।

एग्जाम के दिन पापा ने नाश्ते में फ्रूट सलाद लिया और दो चम्मच दही खिलाकर मुझे समय से पहले ही एग्जाम सेंटर पर ड्रॉप कर दिया। पापा का एग्जाम के पहले दही खिलाना हैरानी में डालने वाला था, क्योंकि पापा इन सब रस्मों को महज ढोंग और रूढ़िवादिता समझते आए थे। ऐसी ही अनेक बातों को लेकर मैंने कई बार उनको दादी और माँ से नाराज होते देखा था। वैसे तो मुझे भी रूढ़िवादिता पसंद नहीं थी, लेकिन अपनों को केवल इसलिए दुखी करना मुझे कभी उचित नहीं लगा था। यही कारण था कि जन्म के समय ही गले में पहनाई गई ताबीज को मैं आजतक धारण किए हुए था। अब जब पापा ने भी इस रस्म को निभाया तो मुझे बहुत अच्छा लगा, दादी की अनुपस्थिति में उनकी मान्यताओं के प्रति श्रद्धा प्रदर्शित करने जैसा था यह। पल भर को मुझे उनका आंतरिक-भय भी लगा था यह, जब सफलता के लिए व्यक्ति हर तरह के टोटके आजमाने लगता है। लेकिन परीक्षा के पूर्व किसी तरह के निगेटिव विचार को मैं अपने मन में स्थान देना नहीं चाहता था। नूतन के मेन गेट पर छोड़ने से पहले उन्होंने मुझे विश किया, मैंने भी उनके पैर छूकर आशीष लिया। कुछ बच्चों को मैंने मुँह फेरकर हँसते हुए देखा, पर मैं निर्विकार भाव से अपना एडमिशन और आधार कार्ड हाथ में

लेकर कॉलेज के अंदर चला गया। मोबाइल जमा करने से पूर्व चित्रा को 'आल द बेस्ट' का मैसेज भेजा। मेरे लिए उसके दो-दो मैसेज पहले ही आ चुके थे - ''बच्चू कर लो दुनिया मुट्ठी में ... गुड लक।''

साढ़े बारह बजे बुकलेट जमा करके जब मैं बाहर निकला तो टेस्ट अपेक्षा के अनुरूप रहने की खुशी थी ... नब्बे में से सतासी प्रश्न हल किए थे मैंने, यानि कि 360 अंकों के प्रश्नपत्र में से मात्र बारह अंकों के प्रश्न ही अनअटेम्प्टेड रहे थे। तीन या चार प्रश्नों को लेकर मन में दुविधा थी शेष में पूरे अंक पाने की उम्मीद थी। मोबाइल लेकर सबसे पहले चित्रा को मैसेज किया - ''कर ली दुनिया मुट्ठी में ... ये सब तुम्हारी वजह से ही हो सका, थैंक्स ए लॉट।'' और फिर मैसेज के अंत में आनंद से उछल-कूद करते पपी का स्टीकर और दो शरारती इमोजी।

इसी के तुरंत बाद दूसरा मैसेज - ''पापा बाहर इंतजार कर रहे हैं, होटल पहुँचकर बात करता हूँ ... शाम को वापस लौटना भी है।''

पापा ने मेरे चेहरे को देखते ही भाँप लिया ... उनके चेहरे पर भी इंद्रधनुष खिलते देर नहीं लगी। उन्होंने आगे बढ़कर मुझे गले लगा लिया। होटल पहुँचते-पहुँचते मम्मी, छुटकी, नवीन, आबिद, बड़े मामा, चाचा, अक्षत और बुआ के या तो फोन आ गए या मैसेज। अधिकतर को उत्सुकता थी कि कोटा की इतनी मँहगी कोचिंग के बाद, मेरा तीर निशाने पर लगा भी है या नहीं। चाचा और बुआ को तो पापा ने गोल-मोल डिप्लोमैटिक उत्तर दिया, पर मम्मी और छुटकी से बात करने के लिए मोबाइल मेरी ओर बढ़ा दिया था।

पेट में चूहे कूदने लगे थे अतः होटल पहुँचकर सबसे पहले लंच ऑर्डर किया। फिर इत्मीनान से चित्रा से बात की। उसने बताया कि प्रश्न तो उसने सारे अटेम्प्ट किए हैं, पर कितने गलत हैं, अभी चेक नहीं किए हैं। इसके बाद उसने पूछा - ''तेरा बुकलेट कोड क्या था ... मुझे तो ए कोड वाली बुकलेट मिली थी।''

''अरे क्या इत्तफाक है ... मेरी भी यही थी।''

''तुझे याद है ... फिजिक्स में एक प्रश्न था, पाँच मिली एम्पीयर की करेंट यदि 15 ओम क्वॉयल रजिस्टेंस वाले गेल्वेनोमीटर से पास करने पर फुल डिफ्लेक्शन दर्शाता है तो उसे 0-10 वोल्ट के वोल्टमीटर में बदलने के लिए कितना रजिस्टेंस सीरीज में लगाना ज़रूरी होगा? इसमें कौन सा उत्तर सही था।''

''हाँ याद है ... बहुत आसान था ये तो ... पहला ऑप्शन ही सही उत्तर था इसका।''

''यार ... मैं बहुत कंफ्यूज हो गई थी, मेरा यह उत्तर तो गलत हो गया।''

इसके बाद हम दोनों एक-दूसरे से बहुत से प्रश्नों के बारे में चर्चा करते रहे। जो प्रश्न मुझे डॉउटफुल लग रहे थे उनमें से कुछ सही रहे और कुछ गलत ... यही स्थिति चित्रा की भी थी।

हमें डिस्कस करते एक घंटे से भी ऊपर हो गया था। पापा ने दरवाजे पर दस्तक दी। वह चलने के लिए तैयार खड़े थे।

लौटकर एक दिन के विश्राम और दोस्तों के साथ बहुत दिनों से ड्यू मस्ती के बाद पढ़ाई का नया दौर शुरु हो गया। मेंस का रिजल्ट अप्रैल के अंत में आने वाला था। एडवांस के लिए क्वालिफाई करने की पूरी उम्मीद थी, लेकिन कहते हैं न कि अंतिम परिणाम आने तक निश्चिंत नहीं होना चाहिए। एक नम्बर के भी इधर-उधर हो जाने से बड़े-बड़े उलटफेर हो जाते हैं। कुछ दिन पहले ही एक नम्बर के इसी करिश्मे को लेकर कोटा स्टूडेंट्स के व्हाट्सएप समूह में एक मैसेज वायरल हुआ था - '1999 में मात्र एक वोट से अटल बिहारी बाजपेयी की सरकार गिर गई थी वहीं 1923 में एडॉल्फ हिटलर ने एक वोट से विजय प्राप्त कर जर्मनी में नाजी साम्राज्य स्थापित किया था। फ्रांस में भी 1875 में नेपोलियन राजशाही का अंत केवल एक वोट से हुआ था और वहाँ लोकतंत्र आया था, इसलिए सतर्क रहें ... एक अंक भी आसानी से नहीं खोना है।'' यदि पिछले वर्ष जैसा ही कट-ऑफ रहा तो चिंता की बात नहीं थी ... मेरा स्कोर उससे बहुत अच्छा रहने वाला था, लेकिन रिजल्ट का इंतजार तो करना ही था। मुझे अनेक अवसरों पर सिखाया भी गया था कि कोई भी चीज 'टेकन फार ग्रांटेड' नहीं समझना चाहिए।

निर्धारित दिनांक पर जब रिजल्ट आया तो बधाईयों का सैलाब सा आ गया। मुझे साढ़े ग्यारह लाख से ज्यादा स्टूडेंट्स के बीच 1124वीं रैंक मिली थी। चित्रा की रैंक 746वीं थी। सच मानो तो मुझे इतनी ऊपरी रैंक पाने का जरा भी अनुमान नहीं था। चित्रा तो अद्भुत आत्मविश्वासी लड़की है ... वह हमेशा ही सबसे अलग और करिश्माई लगी है मुझे, उसकी रैंकिंग से मुझे जरा भी अचरज नहीं हुआ। हम साथ होते तो हमारा सेलिब्रेशन कुछ अलग तरह का होता, न कि व्हाट्सएप पर औपचारिक बधाई और इमोजियों के आदान-प्रदान वाला। फोन पर हमने अगली परीक्षा क्रैक करने के अपने संकल्प को दोहराया और एक-दूसरे की मदद करने की पुरानी प्रतिबद्धता भी दोहराई। इसके बाद मैंने कोटा में अंकल और आंटी से बात की। उनकी भी प्रसन्नता का पारावार नहीं था ... देर तक आशीषों की वर्षा करते रहे।

मेंस का रिजल्ट आने के एक सप्ताह के अंदर ही हमें एडवांस के लिए रजिस्ट्रेशन करना था। मई के तीसरे सप्ताह में ज़िंदगी का यह निर्णायक इम्तहान होने वाला था। निर्णायक इसलिए ... कि मेरे पास होते ही न केवल देश के सर्वश्रेष्ठ कॉलेज में पढ़ने का अवसर मिलना था मुझे, अपितु मेरी ओर आशा भरी निगाहों से देख रही कितनी ही आँखों में इंद्रधनुष खिलने वाले थे। रिश्तेदारों के कितने ही बच्चों का एकाएक रोल-मॉडल बन जाना था मुझे और मेरे अपने शहर, छतरपुर में सबका चहेता बनने का द्वार खुलने वाला था।

20

एडवांस का पेपर देने के बाद ऐसा महसूस हुआ जैसे सिर से टनों बोझ उतर गया। दो साल तक दिन-रात एक कर देने वाली कठिन पढ़ाई और तरह-तरह की अनेक परेशानियों से दो-चार होते रहने के पश्चात् केवल आराम और आराम करने की इच्छा हो रही थी। दो दिनों तक इतना सोया कि चित्रा से भी बात नहीं की। इस बीच चित्रा का भी कोई काल नहीं आया और न ही मैसेज। शायद वह भी मेरी तरह पूरा आराम फरमा रही थी। शरीर और मन की थकान उतरी तो छुटकी, नवीन और आबिद याद आए। छुटकी की बनाई बहुत सी पेंटिंग्स देखी, एक दिन नवीन का शो देखने नौगांव भी गया। आबिद ने राजेश चौहान से सीखी फिरकी गेंदबाजी की कलाबाजियाँ दिखाई ... गेंद पिच होने के बाद इतनी तेज उछलती और घूमती थी कि मैं हतप्रभ रह जाता ... उसके एक ओवर में ही तीन बार क्लीन बोल्ड हो गया सो उसी दिन मैंने क्रिकेट से सन्यास लेने की घोषणा कर दी।

छुटकी ने पापा से कहीं घूमने चलने को कहा। सभी दो साल से इस दिन का इंतजार कर रहे थे कि मैं कब एग्जाम देकर फ्री होऊँ और सब मिलकर कहीं घूमने चलें। बीस दिन बाद रिजल्ट आना था। एक सप्ताह आराम करने में निकल चुका था। रिजल्ट आने के पहले मेरा भी मन कहीं आउटिंग पर जाने का था। पापा ने एक सप्ताह की छुट्टियाँ ली और हम अमरकंटक तथा बांधवगढ़ घूमने निकल पड़े। छुटकी सफेद शेरों को देखने के लिए काफी रोमांचित थी। दुनिया का पहला व्हाइट टाइगर बांधवगढ़ के जंगलों में ही पकड़ा गया था। पहले हम

अमरकंटक गए। नर्मदा का उदगम देखकर हम आश्चर्य चकित रह गए। एक पतली सी जलधारा के इतनी विशाल नदी में परिवर्तित हो जाने की कल्पना हममें से किसी ने नहीं की थी। अमरकंटक का प्राकृतिक सौंदर्य मन मोहने वाला था ... बाई की बगिया, कपिलधारा, दूधधारा को सभी ने एंजाय किया। पौराणिक महत्व के अनेक मंदिरों को भी हमने देखा। इसके बाद दो दिन हमने बांधवगढ नेशनल पार्क में बिताए ... सफेद शेर तो नहीं दिखे पर पाँच बजे सुबह रॉयल बंगाल टाइगर्स का झुंड देखकर मन रोमांचित हो उठा। सब बहुत खुश थे ... मैं भी था। पर जब भी एकांत मिलता मन खिन्न हो जाता। जी-एडवांस के बाद से ही चित्रा से बात न हो सकने के कारण मन के किसी कोने में गहन उदासी पसरी बैठी थी। बार-बार मन में ख्याल आता ... क्या हो गया चित्रा को, जो न तो स्वयं बात कर रही है और न ही काल रिसीव कर रही है। एक भी मैसेज का उत्तर नहीं दिया ... अमरकंटक और बांधवगढ़ के कितने चित्र और वीडियो उसे भेजे पर कोई प्रतिक्रिया नहीं आई। मन करता उड़कर उसके पास पहुँच जाऊँ और झिंझोड़कर पूछूँ उससे - ''यही है तुम्हारी दोस्ती, यदि ऐसी ही बेरुखी दिखानी थी तो क्यों मेरे इतने नजदीक आई।'' फिर मन का ही दूसरा कोना प्रतिवाद करता - ''बच्चू कैसे हो तुम ... जिसने तुम्हारे लिए इतना कुछ किया उसी चित्रा पर इतना अविश्वास ... क्या इसी को दोस्ती कहते हैं? सॉरी चित्रा, पर मैं क्या करूँ, बुरे-बुरे ख्याल आते हैं मन में ... प्लीज़ रिप्लाई तो करो ... बस एक बार ...।''

जी-एडवांस के रिजल्ट का दिन भी आ गया, पर चित्रा से बात नहीं होनी थी सो नहीं हो पाई। छुटकी बार-बार पूछती - ''भैया, दीदी से झगड़ा हुआ है क्या ... कोई बात है तो मुझे बताओ, मैं पैच-अप करा दूँगी।'' उसकी बातें सुनकर आँखें झिलमिल करने लगती और फिर मुझे अपना चेहरा छुपा पाना मुश्किल हो जाता। मुझे दुखी देखकर वह भी दुखी थी। छुप-छुपकर वह भी कई बार चित्रा से बात करने की कोशिश कर चुकी थी, पर असफल रही। चित्रा ने ऐसा कभी नहीं किया था ... मैं फोन करना भूल जाऊँ तो उसका फोन आ जाता था। बीस दिन हो चुके थे उससे बात किए हुए ... कान तरस रहे थे उसके मुँह से क्यूट या बच्चे जैसे शब्द सुनने के लिए ... उसकी बिंदास हँसी सुनने के लिए। मैं रोज भगवान से कई-कई बार प्रार्थना करता कि हे भगवन बस एक बार मेरी

बात करा दो ... वह जो कहेगी वही करूँगा मैं, पर ऐसी परीक्षा न लो मेरी, जो जी-एडवांस से भी ज्यादा कठिन है।

दिन गिनते-गिनते रिजल्ट आ गया। जी-एडवांस में मुझे 154वीं रैंक मिली पर समूची कट-ऑफ लिस्ट में चित्रा का नाम दूर-दूर तक देखने को नहीं मिला। मैंने एक बार, दो बार, तीन बार ही नहीं कई-कई बार पूरी लिस्ट को खंगाल डाला पर चित्रा उसमें कहीं नहीं थी। मुझे अपना दिल डूबता प्रतीत हुआ। घर में जश्न का महौल था ... दूर-दूर से बधाईयों के फोन आ रहे थे। घर पर पापा के दोस्त और पड़ोसियों का जमावड़ा बढ़ता जा रहा था। स्कूल के बहुत से दोस्त और टीचर भी आए थे। छुटकी की सहेलियाँ और मम्मी की किटी पार्टी वाली आंटियाँ भी आने लगीं थी। मम्मी सबकी आवभगत में बहुत व्यस्त थीं ... छुटकी, आबिद और नवीन उनकी सहायता कर रहे थे। इसी बीच कुछ अखबार और स्थानीय चैनल के रिपोर्टर्स भी इंटरव्यू लेने आ गए। मैं जबरन मुस्कराते हुए उनके प्रश्नों के उत्तर देता रहा। छुटकी दूर खड़ी मेरे हाव-भाव देखती रही। कैसी विडम्बना थी कि जो दिन मेरी ज़िंदगी का सबसे अहम दिन होना चाहिए था, वही दिन दिल में अजीब सी चुभन दे रहा था ... रह-रह कर एक ऐसी कसक, ऐसी हूक दिल में उठती और मेरी खुशियाँ, टनों बर्फ के नीचे दबकर घुटती हुई लगने लगती। मन चित्रा की असफलता को स्वीकार ही नहीं कर पा रहा था। जिस एग्जाम में मैं सफलता का परचम फहरा सकता हूँ उसमें चित्रा असफल हो जाए, असम्भव है ये ... कल्पना से परे है। उसका पेपर भी अच्छा हुआ था ... एग्जाम के तुरंत बाद जब हमने उत्तरों का आपसी मिलान किया था तो उसके सही उत्तरों की संख्या मुझसे अधिक थी ... उसका स्कोर मुझसे अधिक होना ही चाहिए था और रैंक मुझसे भी अच्छी। फिर क्या हो गया ... चित्रा असफल हो गई, अपनी तपस्या में फेल हो गई, दूसरों को राह दिखाते-दिखाते खुद मंजिल से दूर रह गई।

रात में सोने से पहले एक बार फिर चित्रा से बात करनी चाही। मोबाइल देखा तो उसका बधाई का मैसेज था - ''इस आलीशान सफलता पर ढेर सारी बधाई ... मुट्ठी में दुनिया करने के बाद अब आकाश अगली मंजिल है ... पंख खोलकर उड़ो और नाप लो सारा आसमान।'' मैंने मैसेज को पढ़ते ही फोन लगाया। फोन स्विच ऑफ बता रहा था। मैसेज टाइप कर मैसेज बॉक्स में छोड़ दिया - ''प्लीज़, बात करो मुझसे।''

सुबह देर तक सोता रहा। नींद खुली तो माँ को पलंग पर बैठकर सिर को सहलाते देखा - ''क्या हुआ है बच्चे? मैं कल से देख रही हूँ, तुम्हारे चेहरे पर उदासी छाई हुई है ... क्या तुम खुश नहीं हो अपने रिजल्ट से या कुछ और बात है?''

''माँ ... भैया की सबसे अच्छी दोस्त फेल हो गई है'' - मैं कुछ कहता, उससे पहले ही छुटकी, जो दरवाजे पर खड़ी होकर माँ की बातें सुन रही थी, बोल पड़ी।

''कौन चित्रा'' - माँ के मुँह से निकला। मैं माँ का मुँह ताकने लगा। माँ ने मुझे विस्मय में देखा तो स्वयं ही कहने लगी - ''छुटकी ने बताया था हमें, चित्रा के बारे में ... उसने पढ़ाई में बहुत मदद की है तुम्हारी।''

इच्छा हुई माँ के आँचल में मुँह छुपाकर रो लूँ ... पर अब मैं बच्चा नहीं था ... लेकिन भावनाओं को नियंत्रित रख पाना भी मुश्किल हो रहा था। माँ के स्नेह भरे स्पर्श से मन तरल हो आँखों से बहने लगा - ''माँ मुझे चित्रा से मिलना है ... बहुत डर लग रहा है, पता नहीं कैसी होगी ... आप पापा से बात कीजिए न प्लीज़ ... मुझे जाना है उससे मिलने।''

माँ बहुत देर तक मुझे सहलाती हुई दिलासा देती रही।

दस दिनों के अंदर मुझे ब्रांच और कॉलेज की चॉइस रजिस्टर करनी थी। मैंने अभी तक सभी काम चित्रा से पूछकर उसकी सहमति से ही किए थे ... ये काम भी बिना उससे पूछे मैं करना नहीं चाहता था। पता नहीं माँ ने पापा से कब बात की, लेकिन दो दिन बाद देवास चलने की खबर देकर उन्होंने मेरी झोली असंख्य खुशियों से भर दी। छुटकी भी हमारे साथ जाने को तैयार खड़ी थी।

21

द्वार खुलते ही चित्रा की मम्मी को सफेद साड़ी में सामने देखकर मुझे पैरों के नीचे से जमीन खिसकती लगी ... आंटी इस वेष में? क्या अंकल नहीं रहे? क्या हुआ था अंकल को? कैसे हुआ उनका निधन? क्या चित्रा इसीलिए फेल हो गई? उसने मुझे खबर क्यों नहीं की? कितना कुछ खो दिया चित्रा ने? कितने बड़े गम से गुजर रही है वह? मुझे दुख न हो, इसलिए चुप्पी साध ली थी उसने। ऐसे अनेक प्रश्न एक साथ मन को मथने लगे। माँ भी उन्हें देखकर हतप्रभ थीं। मैंने संभलते हुए झुककर आंटी के चरण छुए, उन्होंने पूर्ववत् मेरे सिर पर स्नेह का हाथ फेरा ... छुटकी के गालों को सहलाया और माँ से नमस्ते की।

''आंटी, आप इस तरह ...'' मुझे उचित शब्द ही नहीं सूझ रहे थे उनसे कहने के लिए।

''बहन जी अंदर चलिए'' - मेरी बात को अनसुना करते हुए आंटी ने माँ से कहा और हम सबको ड्राइंग रूम में ले आईं। मैंने पुनः पूछने की कोशिश की तो वह बोलीं - ''पहले चित्रा से मिल लो, फिर सब बताती हूँ''

चित्रा चादर ओढ़कर सो रही थी। एक नज़र में बहुत दुबली और बीमार सी लगी। उसकी मलिन मुखाकृति ने अंदर तक कँपा दिया। इच्छा हुई, उसके पास बैठकर उसका हाथ अपने हाथ में लूँ और सहलाऊँ उसे पर आंटी, माँ और छुटकी साथ ही अंदर आईं थी, अतएव मन की बात मन में ही दबकर रह गई। आंटी ने कहा - ''चलिए बाहर बैठते हैं ... चित्रा थोड़ी देर पहले दवा लेकर सोई है, तीन बजे के बाद ही जागेगी अब।''

मैंने घड़ी की ओर देखा, साढ़े बारह बजे थे। इस बार माँ ने आंटी से पूछा- ''बहन जी ... हम सब बहुत अधीर हैं जानने को ... क्या हुआ था भाई साब को ... चित्रा बिटिया को क्या हुआ है?''

''क्या बताऊँ बहन जी ... हमारी तो दुनिया ही उजड़ गई ... ऐसा कहर किसी पर न टूटे'' - कहते हुए आंटी रुआँसी हो गईं।

माँ ढाढस बँधाते हुए बोली - ''अपने को संभालिए बहन जी, हमें जरा भी भान होता तो हम ये चर्चा ही नहीं छेड़ते।''

''आप स्वयं को दोष मत दीजिए ... ये तो हमारी किस्मत का कसूर है ... 21 मई का मनहूस दिन था वह, जब चित्रा और उसके पापा जी-एडवांस का टेस्ट देने यहाँ से इंदौर के लिए सुबह पाँच बजे निकले थे, इंदौर से जरा पहले विजय नगर के पास एक अज्ञात डम्पर उनकी कार को टक्कर मारकर भाग गया। दोनों बुरी तरह घायल हो गए ... लोगों ने किसी तरह उनको चोईथराम अस्पताल पहुँचाया। इनकी तो अस्पताल पहुँचने से पहले ही मौत हो गई ... चित्रा के दोनों पैरों की हड्डियों में मल्टीपल फ्रैक्चर था ... दोनों पैरों में डॉक्टर ने रॉड्स डाली हैं ... दो बार ऑपरेशन हुआ उसका ... अगले महीने जब प्लास्टर कटेगा तब थेरेपी शुरु होगी और वह चल-फिर सकेगी।'' - कहते-कहते आंटी के आँसू बहने लगे - ''पल में मेरी दुनिया बेरंग हो गई बहन जी ... सबको खुशियाँ देने

वाली मेरी बच्ची असहाय पड़ी है। उसका चेहरा देखते ही मुझे रोना आ जाता है ... कब से इन आँसुओं को रोके हुए थी पर आज कंट्रोल नहीं कर सकी . .. मैं तो चित्रा की हालत देखकर अपने पति की मौत पर भी नहीं रो सकी।''

मैं निःशब्द ... आंटी का चेहरा देख रहा था। माँ रुमाल से उनके आँसू पोंछ रही थीं। मेरा मन कहीं और भटक रहा था ... ये कैसे हो सकता है? मेरी तो उस दिन चित्रा से दस-पंद्रह मिनट तक बात हुई थी ... हमने पहले पेपर के तुरंत बाद बहुत से प्रश्नों के उत्तर भी डिस्कस किए थे। मेरे भीतर उथल-पुथल मचने लगी थी ... ये कैसी पहेली है, चित्रा ने तो पेपर तक नहीं दिया फिर मुझसे उत्तर कैसे डिस्कस करती रही?

''आंटी ... पर उस दिन तो टेस्ट के बाद चित्रा से मेरी बात हुई थी, हमने बहुत देर तक पेपर को लेकर डिस्कस भी किया था'' - मैंने कहा।

आंटी फफक-फफक कर रो पड़ी - ''हाँ बच्चे ... उसने तुमसे बात की थी ... अपनी पीड़ा को भूलकर वह एक ही रट लगाए जा रही थी ... मम्मी, पापा नहीं रहे ... अब मैं अपने दोस्त का अहित नहीं कर सकती ... एक बजे तक हर हाल में मेरा ऑपरेशन टालना है ... यदि मैंने समीर से बात नहीं की तो वह मायूस हो जाएगा और अगले टेस्ट में गड़बड़ कर बैठेगा ... उसका सपना टूट सकता है ... मैं दोहरा सदमा बर्दास्त नहीं कर सकती ... वह दर्द से छटपटा रही थी, डॉक्टर उसकी हिम्मत देखकर हैरान थे ... उन्होंने पेन-किलर इंजेक्शन देकर उसे एक बजे तक किसी तरह संभाले रखा था ... मैंने ही तुम्हारा नम्बर उसे डायल करके दिया था ... तुमसे बात करने के उपरांत ही वह ऑपरेशन थिएटर में गई थी।''

आंटी की बातें सुनकर माँ का भी गला भर आया। वह किसी तरह इतना भर कह सकीं - ''बहुत बहादुर है चित्रा बेटी ... भगवान ऐसे लोगों की ही परीक्षा न जाने क्यों लेता है?''

मेरे लिए वहाँ बैठ पाना असहनीय होता जा रहा था। मन में तूफान उमड़ रहा था - ''चित्रा, बहुत से रूप देखे थे तुम्हारे दो सालों में ... ये कौन सा रूप दिखा दिया तुमने? पिता को खो देने के दुःख और टूटी हड्डियों की असह्य पीड़ा के बीच भी तुम्हें अपने इस दोस्त की इतनी परवाह थी, मेरे सपने बेरंग न हों इसकी चिंता सता रही थी तुमको ... तुम किसी फरिश्ते से कम नहीं हो चित्रा ... लेकिन ये कैसा अंधेर है ... सबके प्रति सद्भावना रखने वाली, सबके साथ

हर मुसीबत में खड़ी रहने वाली चित्रा के लिए किसी की सद्भावना काम नहीं आई ... व्यास आंटी, पटेल आंटी और पाराशर आंटी का आशीर्वाद भी निष्फल हो गया ... समय और ईश्वर ऐसे व्यक्ति के प्रति ऐसा निर्मम कैसे हो सकता है? किस्मत भी कैसे खेल खेलती है? ऊपरवाला भी फरिश्तों की ऐसी घनघोर परीक्षा लेने में लिहाज नहीं करता, आखिर क्यों? अब मैं आ गया हूँ चित्रा, तुम्हें छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगा ... सबसे लड़ेंगे हम ... समय से और किस्मत से भी, हमने हर परिस्थिति में साथ निभाने का वादा किया है ... तुम इस तरह मुझसे पिंड नहीं छुड़ा सकती।'' - विचारों के प्रवाह में बहता हुआ एकदम से मैं अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ और चित्रा के कमरे में आ गया। सब लोग मुझे देखते रहे।

चित्रा अभी तक सो रही थी। मैं कुर्सी खींचकर उसके पास ही बैठ गया। उसका हाथ जैसे ही मैंने अपने हाथ में लिया वह बुदबुदाई - ''समीर, तुम आ गए ... बहुत बधाई तुम्हें ...''

मैंने चौंककर उसका हाथ जोर से पकड़ लिया, बेसुधी में भी वह मुझे पहचान गई थी। मैं कब से इस दोस्ती के माने समझने की कोशिश कर रहा था। आज समझ पा रहा हूँ ... दूसरे के लिए खुद को खो देने की इसी भावना का नाम ही प्यार है शायद ... मैं कभी समझ ही नहीं सका प्यार के इस रूप को। तुम सही कहा करती थी चित्रा ... मैं बहुत बुद्धू हूँ, न दुनियादारी समझता हूँ, न अपना अच्छा-बुरा समझता हूँ, न भावनाओं की परख है मुझको और न ही स्वयं के दिल की सुन सकने की समझ है। तुमने हर पल साथ दिया मेरा, दर्द और बेसुधी में भी मेरे बारे में सोचती रही और जब तुम्हें मेरे साथ की ज़रूरत थी, मेरा दिल तुम्हारे दर्द और आहों के सिग्नल रिसीव ही नहीं कर सका ... उल्टा तुम्हारी बेरुखी समझता रहा ... बेरुखी की वजह तलाशने में इतने दिन गुजार दिए। कहते हैं, जिससे प्यार होता है उसकी सांस का एक-एक उतार-चढ़ाव तक दिल को संकेत दे जाता है ... मुझे क्यूँ नहीं मिल सका ये संकेत? मिला भी होगा तो क्यूँ नहीं समझ पाया? बुद्धू हूँ ... प्यार को समझा ही कब मैंने? चित्रा को इस स्थिति में देखने से पहले प्यार एक शब्द भर था मेरे लिए ... मतलब तो अब समझ में आया है। सोच-सोचकर मन द्रवित होने लगा ...।

''आँखें खोलो चित्रा'' - मैं बड़ी मुश्किल से कह सका। मेरी आँखों से आँसू ढुलककर चित्रा के हाथ पर आ गिरे। चित्रा ने पलकें खोलने की कोशिश की। मुझे देखकर एक क्षीण सी हँसी उसके होठों तक आई और विलुप्त हो गई। वह कुछ कहना चाह रही थी पर ठीक से आवाज़ नहीं निकल रही थी। कुछ देर मेरी ओर एकटक देखती रही। मैं भी सजल नेत्रों से उसका हाथ सहलाता रहा।

''तुम क्यूँ आए हो समीर ... तुम्हें नहीं आना था ... बहुत तकलीफ हो रही है न अपनी चित्रा को इस हालत में देखकर ... अब तो तुम्हारी काउंसलिंग की डेट भी आ गई होगी'' - अटक-अटक कर चित्रा किसी तरह बोल पाई।

मैंने चित्रा के होंठों पर अंगुली रखते हुए कहा - ''प्लीज़, चुप रहो चित्रा ... तकलीफ तो हुई है पर गुस्सा भी बहुत आ रहा है अपने आप पर ... तुमने इतना कष्ट उठाया, इतने दुःख झेले और मैं उनको बाँटने भी समय पर नहीं आया, सबकुछ तुमने अकेले सह लिया ...।''

चित्रा चुपचाप मुझे देखती रही, बोली कुछ नहीं। उसके अंदर भी शायद कोई तूफान उमड़ रहा था, जो तरल होकर आँखों में उतर आया था। मैंने हाथ से ही उसके आँसुओं को पोंछते हुए, उसको हँसाने की व्यर्थ सी कोशिश करते हुए कहा - ''मेरी चित्रा इतनी कमजोर है आज जान पाया ... मुझे सामने देखा और रोने लगी ...'' मैंने उसके चेहरे को पढ़ने की कोशिश की, फिर आगे कहा - ''इन आँसुओं का गुनाहगार तो मैं ही हूँ ... कितना बुरा हूँ मैं ... दुनिया मुट्ठी में रखने का हौसला देने वाली चित्रा को रुला दिया न मैंने''

कुछ देर हम दोनों चुपचाप एक-दूसरे को देखते रहे, फिर मैंने ही पूछा - ''कुछ लोगी चित्रा''

''हाँ ... जूस का टाइम हो गया है ... माँ को बुला दो'' - उसने कहा।

मैंने पलंग के लीवर को घुमाकर सिरहाना ऊँचा किया और चित्रा को टिककर बैठा दिया। आंटी जूस बनाने किचेन में चली गईं। मम्मी और छुटकी भी अंदर आ गए। चित्रा ने मम्मी के पैर छूने के लिए बैठे-बैठे ही हाथ बढ़ाए .. . मम्मी ने उसके सिर पर हाथ फेरकर आशीष दिया और उसके माथे को चूम लिया - ''उसकी मर्जी के आगे सब लाचार हैं ... तुम बहादुर बेटी हो ... ईश्वर भी बहादुर लोगों की ही परीक्षा लेता है ... तुम जल्दी स्वस्थ होकर मुझसे मिलने आना ... मैं इंतजार करुँगी तुम्हारा।''

मैंने महसूस किया, मम्मी का गला भर आया है। स्थिति को बोझिल होने से बचाने के लिए मैं बीच में ही बोल पड़ा - ''मम्मी ... आप आंटी की मदद कीजिए न किचेन में जाकर'' - फिर चित्रा को संबोधित करते हुए कहा - ''चित्रा ... ये छुटकी है तुम्हारी ... देखो कैसी बोलती बंद है इस बड़बोली की।''

चित्रा ने दोनों हाथ फैलाए, छुटकी लगभग गिरते हुए उसकी बाहों में समाकर जोर-जोर से रोने लगी। दोनों बहुत देर तक ऐसे ही बैठी रहीं। छुटकी के आँसुओं से चित्रा का गाउन भीग गया। जब आंटी और मम्मी जूस लेकर आईं, तभी दोनों अलग हुईं।

''अच्छा तुम लोग बात करो ... हम खाने की तैयारी करते हैं'' - आंटी ने जूस का खाली गिलास चित्रा के हाथ से लेते हुए कहा। मम्मी भी उनके पीछे-पीछे चल दीं।

''मुझे माफ कर दे छुटकी ... तुमसे मिली भी तो इस हालत में ... मस्ती भी नहीं कर सकती'' - चित्रा ने छुटकी के गालों को थपथपाते हुए कहा।

''दी, आप बस ठीक हो जाओ जल्दी से, फिर देखना कितना परेशान करती हूँ आपको ... भैया तो आजकल तुरंत हथियार डाल देते हैं ... सामना होते ही मैदान छोड़कर भाग लेते हैं'' - छुटकी ने चित्रा से ''हाय-फाइव'' करने के लिए हाथ हवा में लहराया। चित्रा ने भी उसके स्वर में स्वर मिलाया - ''सही कह रही हो तुम ... तुम्हारे भैया हैं ही कॉवर्ड ... फ...'' - चित्रा की बात पूरी होती इससे पहले ही समीर ने उसकी ओर भय और याचना मिश्रित निगाह से देखा और फिर आश्वस्तकारी साँस खींची। चित्रा फट्टू कहते-कहते संभल गई थी। फिर मुझे देखते हुए बोली - ''डरपोक नम्बर वन''

मेरी ओर देखते हुए दोनों खिलखिलाकर हँस पड़ी। चित्रा को हँसते देख मन संतोष की अनुभूति से भर गया। कुछ पल रुककर चित्रा ने अपनी बात को आगे बढ़ाया - ''हीरो नम्बर वन भी तो हैं तेरे भैया ... पहली ही बाल पर छक्का मारा है उसने ... टीवी पर देखा था, तूने उसे ... क्या बोला था उसने? मैं तो देख नहीं पाई ... माँ ने बताया था।''

''बहुत अपसेट थे भैया ... खोए-खोए से प्रश्नों के उत्तर दे रहे थे ... मैं तो जानती थी क्या कारण है? भैया से छुपकर अकेले में रोई भी थी।'' - छुटकी ने कहा।

''तुम्हारी पेंटिंग कैसी चल रही है?'' - चित्रा ने बात बदलते हुए कहा। छुटकी अपने साथ ड्राइंग बुक लेकर आई थी दिखाने के लिए। वह चित्रा को अपने बनाए हुए लैंडस्केप्स और पोर्टरेट्स के बारे में जानकारी देती रही। मैं दोनों को घुल-मिलकर बातें करता देखकर प्रसन्न था।

''दीदी ... मैंने सुना है आपके पास कॉमिक्स का बहुत बड़ा कलेक्शन है ... मुझे देखना है वह'' - छुटकी ने ड्राइंग बुक अपने बैग में रखते हुए पूछा। मुझे लगा छुटकी हमें अकेला छोड़कर वहाँ से जाना चाहती है ... मेरी सयानी छुटकी, बड़की छुटकी।

''ऊपर वाला कमरा मेरा है ... छोटी अलमीरा में सारा कलेक्शन रखा है, जो तुम्हें चाहिए हों ले भी लेना।'' - चित्रा ने कहा। छुटकी मेरी ओर देखती हुई ऊपर चली गई।

''तुमने किस आई.आई.टी. और किस ब्रांच के लिए ऑप्शन दिया है .. . काउंसलिंग की डेट कब है'' - चित्रा ने छुटकी के जाते ही पूछा।

''मैंने अभी फॉर्म ही नहीं भरा है ... तुमसे पूछे बिना कैसे भरता ... दो साल तक हर काम तुम्हारी सलाह से किया है तो इतना बड़ा डिसीजन अकेला कैसे ले लेता'' - मैंने कहा।

''क्या सोचा है तुमने ... मेरा लैपटॉप खोलो और मेरे सामने ही अभी फॉर्म सबमिट कर दो'' - चित्रा ने कहा।

''मुझसे नहीं होगा अभी ... बाद में भर दूँगा।''

''मुझसे नज़रें मिलाकर बोल''

चित्रा से नज़रें मिलाने की हिम्मत नहीं हुई मुझे। थोड़ी देर इंतजार करने के बाद चित्रा ही बोली - ''मुझे पता है तेरे दिल में क्या चल रहा है ... तू नहीं भरेगा ... खूब जानती हूँ तेरे को ... इसीलिए इतने दिनों से बात नहीं कर रही थी कि कहीं मैं कमजोर न पड़ जाऊँ'' - चित्रा ने रुआँसे स्वर में कहा।

''अपने दोस्त को ऐसी हालत में छोड़कर मैं कहीं नहीं जाने वाला ... हमने वादा किया था कि हम एक ही आई.आई.टी. में एडमिशन लेंगे ... ये वादा तो तुम भी नहीं भूली होगी ... केवल मुझे डिगाना चाहती हो'' - मैंने दृढ़ता से कहा - ''चित्रा, तुम अच्छे से सुन लो, मुझे अपनी कसम भी मत देना, मैं नहीं सुनूँगा कुछ भी।''

''कितनी मेहनत की है तुमने इस कामयाबी के लिए ... कितनी तपस्या की है पापा के सपनों के लिए ... अब क्या सबको निराश करोगे तुम?''

''चित्रा, ऐसी स्थिति में आईआईटियन बनने के लिए मुझे अपने अंदर के इंसान को मारना होगा ... यदि इंसान मर गया तो क्या बचेगा मेरे भीतर? तुम ही बोलो क्या करना चाहिए मुझे, क्या तुम्हें यह उचित लगेगा कि मैं एक लाश की तरह जीवन बिताऊँ ... पापा के सपनों को पूरा करने का संकल्प लिया है मैंने, उन्हें ज़रूर पूरा करूँगा, पर ज़िंदा लाश बनकर नहीं?''

''तू पागल मत बन, ऐसी बातों का कोई मतलब नहीं होता असल ज़िंदगी में ... देख मुझे ... पता नहीं चल भी पाऊँगी या नहीं ... ज़िंदगी भर अपंग बनकर रहना भी मेरी किस्मत में हो सकता है।'' चित्रा ने एक हाथ से पैरों पर पड़ी चादर एक तरफ सरकाते हुए कहा। उसके दोनों पैरों में प्लास्टर चढ़ा हुआ था।

देखकर मैं सिहर गया। खुद को संभालते हुए बहुत विश्वसनीय अंदाज में बोला - ''तुमको दस दिनों में न चला दिया तो बोलना ... डॉक्टर तो कुछ भी बोल देते हैं ... उन्हें क्या पता एक सुपर हीलर भी है चित्रा के पास।''

चित्रा हँसी - ''तो जनाब डॉक्टरी का मास्टर कोर्स करके आ रहे हैं।''

चित्रा की हँसी सुनकर आंटी और मम्मी अंदर आ गईं। मेरे सिर पर हाथ रखते हुए आंटी बोली - ''थैंक्स समीर ... आज एक महीने बाद चित्रा की हँसी सुनी है ... मेरी बच्ची अब जल्दी ठीक हो जाएगी।''

''ज़रूर बहन जी ... चित्रा कुछ ही दिनों में पहले की तरह चलने लगेगी'' - आंटी की बात का जवाब मम्मी ने दिया। मैंने दोनों की नज़रें बचाकर अपनी टी-शर्ट का कॉलर ऊँचा करते हुए चित्रा की ओर देखा। वह भी मुझे ही देख रही थी।

खाना बन चुका था। आंटी ने चित्रा से पूछा - ''खाना ले आऊँ ... दवा का भी समय हो रहा है।''

चित्रा ने हाँ में सिर हिला दिया। मैंने आंटी के हाथ से प्लेट ले ली। मम्मी और आंटी बाहर निकल गईं।

''ला प्लेट दे मुझे ... केवल पैर टूटे हैं मेरे ... हाथ सलामत हैं'' - चित्रा का चिर-परिचित बिंदासपन लौटता प्रतीत हुआ मुझे। मैंने प्लेट उसके हाथ में

पकड़ा दी। उसने पहला निवाला तोड़ा - ''अब मुँह पास लाने के लिए भी बोलना पड़ेगा क्या?''

पाँच-छः घंटों के साथ में ही चित्रा चहकने लगी थी। उसके दिल के भीतर जमी मायूसी की बर्फ पिघलने लगी थी। कोचिंग के दिन याद आ गए जब वह अपने टिफिन से पहला निवाला मुझे खिलाया करती थी और फिर स्वयं खाती थी। मैंने मुँह आगे किया और एक बाइट ले लिया फिर चित्रा ने पूरा निवाला मुँह में रख लिया।

चित्रा को बैठे बहुत देर हो गई थी। खाना खाकर लेटने की इच्छा व्यक्त की उसने - ''तुम अब बाहर जाओ और माँ को भेज दो।''

''क्यूँ क्या हुआ ... मुझे बोलो क्या काम है?''

''धत्त ... बेशरम कहीं के''

''ओह ... समझ गया।'' - कहते हुए मैं बाहर आ गया। कुछ ही देर बाद मैंने आंटी को यूरिन-पॉट के साथ चित्रा के रूम में जाते हुए देखा।

हम लोग होटल अमर विलास में रुके थे। अगले दिन सभी को वापस लौटना था। आंटी ने रात में घर पर ही रुक जाने का अनुरोध किया। मैं तो रुकना चाह ही रहा था, मम्मी भी मान गई।

रात में हम तीनों साथ में ही ऊपर वाले कमरे में लेटे थे। मम्मी ने ही बात छेड़ी - ''चित्रा बहुत प्यारी बच्ची है ... भगवान को इतना दुःख इस उमर में नहीं देना चाहिए था उसे।''

मैं क्या जवाब देता, चुप रहा। मम्मी ही आगे बोली - ''मेरी तो इच्छा है कुछ दिन यहीं रुककर चित्रा का ख्याल रखूँ ... उसे जल्दी से स्वस्थ होते देखूँ।''

मैंने आश्चर्य से मम्मी की ओर देखा। चित्रा को देखकर उनके मन में जगा लगाव अभिभूत करने वाला था। मैंने कहा - ''नहीं मम्मी, आप जाइए ... पापा अकेले हैं वहाँ ... मैं रुकूँगा यहाँ, चित्रा ने मुझे खुशी देने के लिए इतना दर्द सहा है, मेरा कर्तव्य है उसे खुश रखूँ ... पापा को समझाइयेगा ... ज़िंदगी की इस परीक्षा में उनके आशीष की सबसे ज्यादा ज़रूरत है मुझे भी और चित्रा को भी ... बस एक साल की बात है ... मुझ पर विश्वास करें, मैं उनके सपनों को अवश्य पूरा करुँगा।''

''ज़रूर बच्चे ... मैंने दिन में उनसे बात की थी, वह भी चित्रा के लिए चिंतित हैं ... वह समझते हैं तुम्हारे मन की बात ... वह इंजीनियर नहीं बन सके, इसका दुःख सालता ज़रूर है उन्हें, पर वह एक अच्छे पिता और सुखी व संतोषी इंसान हैं ... वह तो देवास आने के लिए भी पूछ रहे थे, मैंने ही मना किया इस समय आने के लिए।''

हम बात कर ही रहे थे कि पापा का फोन आ गया। मम्मी ने फोन मेरी ओर बढ़ाते हुए कहा - ''तुमसे बात करना चाह रहे हैं।''

''पापा ... कैसे हैं आप?''

''जिसका बेटा ज़िंदगी की सबसे निर्णायक जंग अकेले लड़ रहा हो उसके बाप को कैसा होना चाहिए'' - पापा का उत्तर चौंकाने वाला था और स्वर चिर-परिचित अंदाज से बिल्कुल भिन्न, दर्द से भीगा हुआ सा।

''पापा ...'' - मेरा दिल अंदर से रोने को हो आया था।

''मेरे बेटे ने मेरा मान बढ़ाया है ... अब बाप की परीक्षा है। बाप फेल होना नहीं चाहता इस परीक्षा में ... तुम्हारी माँ ने दिन में ही सबकुछ बता दिया था मुझे ... इंसानियत से बड़ी कोई डिग्री नहीं होती ... तुम जो भी फैसला करोगे मैं तुम्हारे साथ हूँ। चित्रा बिटिया से भी सुबह मेरी बात करा देना ... मैं जल्दी ही मिलने आऊँगा उससे।''

फोन रखते ही मुझे जोर से रोना आ गया - ''कितना गलत समझता रहा हूँ पापा आपको ... आपके धीर-गंभीर चेहरे के पीछे इतना सुकोमल चेहरा है, इस चेहरे को आज के पहले कभी क्यों देख ही नहीं पाया? आपका दिल भी दूसरों का दर्द महसूस कर उसी संवेदना के साथ उतनी ही तेजी से धड़कता है, जितना किसी और का ... मेरे लिए यह समझ पाना कल्पना से परे रहा है अब तक। आपने मेरे सर का बोझ हलका कर दिया ... थैंक यू पापा ... यू आर रियली ग्रेट, पापा।''

अगले दिन मम्मी और छुटकी को शाम की बस से जाना था। हमने दोपहर में चित्रा को उसके पलंग से उठाकर बाहर सोफे पर बिठाया। कल और आज की चित्रा में स्पष्ट अंतर नज़र आ रहा था। चित्रा प्रफुल्लित लग रही थी ... उसके चेहरे की दीप्ति लौटने लगी थी। मम्मी ने ही उसे स्पंज किया था और बाल बाँधे थे। मम्मी का इस तरह चित्रा से हिलमिल जाना मेरे लिए सुखद था और अचंभित करने वाला भी। बच्चे मम्मी-पापा को समझने में कितनी भूल करते हैं? एकदम स्वार्थी लगने वाले पापा कहीं से स्वार्थी हैं ही नहीं ... वह तो बच्चों की भलाई चाहते हैं, जिसके लिए बच्चों की नज़र में स्वार्थी दिखना भी उन्हें सहर्ष

स्वीकार होता है। वह भी प्रेम और त्याग की उदात्त भावनाएँ उतनी ही गहराई से महसूस करते हैं, जितना कि मैं या कोई और। हमेशा मुझे लापरवाह समझकर फिक्रमंद रहने वाली मम्मी का भी कितना अटूट विश्वास है मुझ पर।

जाने से पहले मम्मी ने मुझसे कहा - ''समीर, दादी ने जो ताबीज तुमको दिया था, लेकर आओ उसे।''

मम्मी के मुँह से ताबीज की बात सुनकर आश्चर्य हुआ मुझे। असमंजस में देखकर वह फिर बोली - ''मुझे दादी ने सब बता दिया था ... आज एकादशी है, बहुत शुभ दिन है।''

मम्मी ने मेरे हाथ से ताबीज लेकर गंगाजल से उसे शुद्ध किया और चित्रा के गले में पहनाते हुए कहा - ''इसे कभी अपने से दूर मत करना ... दादी का आशीर्वाद है ये ... अब कभी किसी की नज़र नहीं लगेगी मेरी बेटी को।''

मम्मी और छुटकी चली गईं। आंटी और चित्रा ने मम्मी से बहुत ज़िद की थी कि मुझे भी साथ लेकर जाएँ ... पागलपन करने से मुझे रोकें ... आई.आई.टी. में एडमिशन के लिए कितना परिश्रम करना पड़ता है ... उस श्रम की इज्जत करनी चाहिए ... साल बर्बाद करना बुद्धिमानी नहीं है ... किस्मत वालों को ये अवसर मिलता है ... और न जाने क्या-क्या बोला दोनों ने; पर मम्मी ने ये कहकर उन्हें चुप करा दिया - ''चित्रा जैसी दोस्त भी किस्मत वालों को मिलती है।''

चित्रा एक माह में थोड़ा-थोड़ा चलने लगी। दो माह में उसकी स्थिति में आशातीत सुधार हुआ और वह काफी कुछ नार्मल ज़िंदगी में लौट आई। ग्लोबल के चेयरमेन को हमारे बारे में पता चला तो उन्होंने एच.आर. को व्यक्तिगत रूप से हमारे पास भेजा, कोटा में इक्स्टेन्सिव फ्री कोचिंग के प्रस्ताव के साथ।

एक साल बाद

आजकल मैं और चित्रा मुम्बई आई.आई.टी. में इलेक्ट्रानिक्स प्रथम वर्ष में पढ़ रहे हैं।